Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّيْ عَلٰى رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ وَعَلٰى عَبْدِهِ الْمَسِيْحِ الْمَوْعُوْدِ

وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدْرٍ وَّاَنْتُمْ اَذِلَّةٌ

वर्ष- 6
अंक- 6

मूल्य
500 रुपए
वार्षिक

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly
BADAR Qadian
HINDI

संपादक
शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

28 जमादी सानी 1442 हिज्री कमरी 11 तब्लीग़ 1400 हिज्री शम्सी 11 फरवरी 2021 ई.

अल्लाह तआला का आदेश

مَا يَفْعَلُ اللّٰهُ بِعَذَابِكُمْ اِنْ شَكَرْتُمْ وَاٰمَنْتُمْ وَكَانَ اللّٰهُ شَاكِرًا عَلِيْمًا

(सूरत अन्निसा आयत :148)

अनुवाद: यदि तुम शुक्र करो और ईमान लाओ तो अल्लाह तुम्हें अज़ाब देकर क्या करेगा और अल्लाह शुक्र का बहुत हक़ अदा करने वाला (और) सदैव ज्ञान रखने वाला है।

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़ज़ल नाज़िल करता रहे। आमीन

आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की नसीहतें

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सजदे वाली आयत पर सजदा करते और सहाबा भी आपके साथ सिज्दा करते।

(1075) हज़रत इब्ने उम्र रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हम को वह सूरत पढ़ कर सुनाते जिस में सिज्दा होता। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम भी सिज्दा करते और हम भी सिज्दा करते। यहां तक कि हम में से किसी को अपनी पेशानी रखने की जगह न मिलती।

(1073) हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है, उन्होंने कहा मैं ने नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सामने सूरत नज्म पढ़ी। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस में सिज्दा नहीं किया।

(1077) हज़रत उम्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने जुम्आ के दिन मिंबर पर खड़े हो कर सूरत नहल पढ़ी। जब सिज्दे की आयात पर पहुंचे तो उतरे और उन्होंने सिज्दा किया और लोगों ने भी सिज्दा किया। जब दूसरा जुम्आ हुआ तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने वही सूरत पढ़ी। जब सिज्दा की आयात पर पहुंचे तो उन्होंने कहा: हे लोगो! हम सिज्दा की आयात से गुज़रते हैं, अत: जिसने सिज्दा किया उसने अच्छा किया और जिसने सिज्दा नहीं किया उस पर कोई गुनाह नहीं और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने सिज्दा नहीं किया और नाफ़े ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत करते हुए इतना ज़्यादा बताया कि अल्लाह तआला ने सिज्दा तिलावत फ़र्ज़ नहीं किया। हाँ यदि हम चाहें (तो सिज्दा कर लें।)

(सही बुख़ारी, भाग 2 किताब सुजूद उल-क़ुरआन, प्रकाशित क़ादियान 2006)

अल्लाह तआला ने चार प्रकार के निशान मुझे दिए हैं जिन को मैंने बड़े दावा के साथ कई बार लिखा और प्रकाशित किया है।

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

23 अगस्त 1898 ई की शाम

हज़ूर ने पूछा कि नवीन फ़लसफ़ा धर्म से विमुखता क्यों पैदा करता है?

"यह मौजूदा फ़लसफ़ा प्राय तबीयतों में धर्म से विमुखता क्यों पैदा कर देता है।

मास्टर ग़ुलाम मुहम्मद साहिब स्यालकोटी ने कहा कि"वास्तव में जो तबीयतें पहले ही से विमुखता की तरफ़ झुकी होती हैं,वही इससे प्रभाव में आती हैं वर्ना अक्सर बड़े बड़े फिलासफर मिज़ाज पादरी अपने मज़हब में पक्के होते हैं।"

हज़रत अक़दस ने फ़रमाया कि:"इन बातों पर ग़ौर करने के बाद अफ़सोस के साथ ज़हन दूसरी तरफ़ स्थानान्तरित हो जाता है कि एक तरफ़ तो ये पादरी लोग कॉलजों और स्कूलों में फ़लसफ़ा और तर्क शास्त्र पढ़ाते हैं दूसरी तरफ़ मसीह को इब्नुल्लाह और अल्लाह मानते हैं और तस्लीस इत्यादि आस्थाओं के मानने वाले हैं,जो समझ ही में नहीं आता कि कैसे इसको फ़लसफ़ा से समानता करते हैं। अंग्रेज़ी तर्क शास्त्र का आधार तो मंतिक़ इस्तकराई ही पर है। फिर यह कौन सा इस्तिक़रा है कि यसू अल्लाह का पुत्र है। कौन सी शक्ल पैदा करते होंगे। यही होगा कि जैसे इस प्रकार की विशेषताएं जिन लोगों के अंदर हों वे ख़ुदा के बेटे होते हैं। और मसीह में ये विशेषताएं थीं। अत: वह भी ख़ुदा अथवा ख़ुदा का बेटा था। इससे तो अधिकता अनिवार्य हो जाती है जो बहुत असम्भव है। मैं तो जब इस पर ग़ौर करता हूँ, आश्चर्य बढ़ता ही जाता है। नहीं मालूम ये लोग क्यों सोचते?

इस्लाम के पवित्र नियम ऐसे नहीं हैं कि फ़लसफ़ा या इस्तिक़रा की कसौटी पर भी सम्पूर्ण स्तर वाले प्रमाणित न हों। बल्कि मैंने कई बार ग़ौर किया है कि क़ुरआन करीम के बारे में जो आया है فِيْ كِتٰبٍ مَّكْنُوْنٍ (अल-वाकिअ: 79) यह किताब मकनून (छुपी हुई किताब) ज़मीन और आसमान की छुपी हुई किताब है, जिसके पढ़ने पर हर व्यक्ति क़ादिर नहीं हो सकता और क़ुरआन करीम इसी किताब का आइना है और क़ुरआन ने वही ख़ुदा दिखाया है,जिस पर आसमान और ज़मीन गवाही देते हैं। परन्तु यह उन्नीस सौ वर्ष का तराशा हुआ नकली मुर्दा ख़ुदा किस प्रमाण और गवाही पर ख़ुदा बनाया गया है। अत: यह इस्लाम ही की ख़ूबी और हमारे नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का ही गर्व है कि वह ऐसा धर्म लेकर आए जो हमेशा से है और जिसकी शिक्षा ज़मीन और आसमान के पृष्ठों में भी स्पष्ट रूप से मौजूद है।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 252 से 259 प्रकाशन 2008 क़ादियान)

केवल कर्म कुछ चीज़ नहीं जब तक उसके साथ दिल का सुधार न हो, अमल के साथ दिल की पवित्रता भी ज़रूरी है।

सय्यदना हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ يَهْدِيْهِمْ رَبُّهُمْ بِاِيْمَانِهِمْ सूरत यूनुस आयत नम्बर 10 की तफ़सीर में फ़रमाते हैं :

इस आयत में अल्लाह तआला ने बताया है कि असल हिदायत ईमान के कारण मिलती है। केवल अमल कुछ चीज़ नहीं जब तक इसके साथ दिल की इस्लाह न हो। एक व्यक्ति चोरी का पूरा इरादा रखता हो परन्तु उसे चोरी का अवसर नहीं मिले तो वह दियानतदार नहीं कहला सकता। इसी तरह दिल तो अल्लाह के अतिरिक्त वस्तुओं से भयभीत हो परन्तु ज़ाहिर में उसे सिज्दा न करे तो वह व्यक्ति एकेश्वरवादी नहीं कहला सकता। कुछ नादान यह समझते हैं कि इस्लाम अमल पर-ज़ोर नहीं देता बल्कि केवल ईमान को पेश करता है हालाँकि यह बात सत्य नहीं। इस्लाम जिस बात पर-ज़ोर देता है वह यह है कि अमल के साथ दिल की पवित्रता भी आवश्यक है। यदि दिल पवित्र नहीं और अमल का साथ नहीं देता तो ऐसा ईमान कुछ लाभ नहीं दे सकता। और कौन बुद्धिमान इस बात का इन्कार

शेष पृष्ठ 20 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत ज़ुबेर रज़ियल्लाहु अन्हु से फ़रमाया कि आपने मुझ से लड़ने के लिए तो लश्कर तैयार किया है परन्तु क्या ख़ुदा के समक्ष प्रस्तुत करने के लिए कोई कारण भी तैयार किया है?

आप लोग क्यों अपने हाथों से उस इस्लाम को तबाह करने पर तत्पर हुए हैं जिसकी सेवा कठोर परिश्रम से की थी।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के महान ख़लीफ़-ए-राशिद और दामाद अबू तुराब, हज़रत अली अलमुर्तज़ा रज़ी अल्लाह तआला अन्हु के प्रशंसनीय गुणों का वर्णन

जंगे जमल, जंगे सिफ्फीन और जंगे नहरवान में पेश आने वाले हालात और घटनाओं का वर्णन।

तर्बीयत के लिए बहुत आवश्यक है कि उस के अतिरिक्त कि ख़ुद भी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की कुतुब का अध्यन करें, ऐम. टी. ए. के साथ भी सम्पर्क रखें और

विशेषता जुमे के ख़ुतबात ज़रूर एम. टी. ए. के माध्यम से सुना करें ताकि ख़िलाफ़त से सम्पर्क क़ायम रहे और बेहतर होता रहे और बढ़ता रहे

पाकिस्तान में रहने वाले अहमदी विशेषता नवाफ़िल और दुआओं पर ज़ोर दें, इन दुआओं में رَبِّ كُلُّ شَيْءٍ خَادِمُكَ رَبِّ فَاحْفَظْنِي وَانْصُرْنِي وَارْحَمْنِي اَللّٰهُمَّ إِنَّا نَجْعَلُكَ فِي نُحُورِهِمْ وَنَعُوذُ بِكَ مِنْ شُرُورِهِمْ बहुत पढ़ें, इस्तिग़फ़ार और दुरूद की ओर भी ध्यान दें, नवाफ़िल भी अदा करें

अल्लाह तआला उनको तौफ़ीक़ भी दे और जल्द वहां के हालात भी सही फ़रमाए, आमीन

पाँच मरहूमीन श्रीमती हुमदा अब्बास साहिबा पत्नी श्रीमान अब्बास बिन अब्दुल क़ादिर साहब ख़ैरपूर सिंध, श्रीमान रिज़वान सय्यद नईमी साहब इराक़, श्रीमान मलिक अली मुहम्मद साहिब आफ़ हजके ज़िला सरगोधा, श्रीमान एहसान अहमद साहिब लाहौर और श्रीमान रियाज़ उद्दीन शमस साहब का वर्णन और नमाज़े जनाज़ा ग़ायब।

अल-जज़ाइर की दो अदालतों में झूठे आरोप में ग्रस्त बहुत सारे अहमदियों की रिहाई

पाकिस्तान में रहने वाले अहमदियों को नवाफ़िल पढ़ने और दुआएं करने की तहरीक

ख़ुत्ब: जुमअ: सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 25 दिसम्बर 2020 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِينَ۔ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّينِ۔ إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِينُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيمَ۔ صِرَاطَ الَّذِينَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّالِّينَ

पिछले ख़ुत्बे में हज़रत उस्मान रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु की शहादत और बाग़ीयों का वर्णन हुआ था और इस बारे में हज़रत अली रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु की क्या कोशिशें थीं या अब जो आगे हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु की घटनाएँ आएँगे, इस बारे में एक बहुत अहम बात की ओर ध्यान दिलाते हुए हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि

"चूँकि तुम लोग भी सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हु के समान हो इसलिए मैं चाहता हूँ कि तारीख़ से बयान करूँ कि किस तरह मुस्लमान तबाह हुए और कौन से कारण उनकी हलाक़त का कारण बने। अत: तुम होशियार हो जाओ और जो लोग तुम में नए आएं उनके लिए शिक्षा की व्यवस्था करो।'' अर्थात तर्बीयत सही होनी चाहिए। उनकी धार्मिक शिक्षा होनी चाहिए। "हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के वक़्त जो फ़ित्ना उठा था वह सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हु से नहीं उठा था। जो लोग यह कहते हैं कि सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हु ने उठाया था उनको धोखा लगा है। इस में संदेह नहीं कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के मुक़ाबले में बहुत से सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हु थे और मुआविया के मुक़ाबला में भी लेकिन मैं कहता हूँ कि इस फ़ित्ना के संस्थापक सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हु नहीं थे बल्कि वही लोग थे जो बाद में आए और जिन्हें आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सोहबत प्राप्त नहीं हुई और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पास नहीं बैठे। अत: मैं आप लोगों का इस ओर ध्यान करता हूँ और फ़ित्ना से बचने के यह तरीक़ बताता हूँ कि कसरत से "इस वक़्त आप रज़ियल्लाहु अन्हु क़ादियान में थे कि कसरत से क़ादियान आओ और बार-बार आओ ताकि तुम्हारे ईमान ताज़ा रहें और तुम्हारा अल्लाह से प्रेम बढ़ता रहे।

(अनवारे ख़िलाफ़त, अन्वारुल उलूम ,भाग 3 पृष्ठ 171)

अर्थात तुम्हारा मर्कज़ से सम्पर्क भी रहे और ख़िलाफ़त से सम्पर्क भी रहे। यह रहेगा तो सही तर्बीयत भी रहेगी। आज कल अल्लाह तआला ने हमें एम. टी. ए. प्रदान किया है। ख़ुत्बे सारी दुनिया में सुने जाते हैं, दिखाए जाते हैं, सुनाए जाते हैं। और प्रोग्राम दिखाए जाते हैं और सुनाए जाते हैं। इसलिए तर्बीयत के लिए बहुत आवश्यक है कि इस के अतिरिक्त कि स्वयं भी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की पुस्तकों का अध्ययन करें। एम.टी.ए. के साथ भी सम्पर्क रखो और विशेषता जुमे के ख़ुतबात ज़रूर एम.टी.ए. के माध्यम से सुना करो ताकि ख़िलाफ़त से सम्पर्क क़ायम रहे और बेहतर होता रहे और बढ़ता रहे।

जंगे जमल की घटना के बारे में रिवायत में आता है कि जंगे जमल हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा के मध्य 36 हिज्री में हुई थी। हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा के साथ हज़रत तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु भी थे। हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा मैदाने जंग में एक ऊंट पर सवार थीं इसी कारण से इस जंग का नाम जंगे जमल प्रसिद्ध है। हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा हज के कर्तव्य की अदायगी के लिए मक्का गई हुई थीं। वह वहीं रहती थीं कि हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु की शहादत की ख़बर मिली। जब उमरा की अदायगी के बाद मदीना की ओर रवाना हुईं तो रास्ते में एक स्थान पर यात्रा में उबैद बिन अबू सलमा ने सूचना दी कि हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु को शहीद कर दिया गया है और हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ख़लीफ़ा चुने गए हैं और मदीना मुनव्वरा में हंगामा बरपा है। इसलिए हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा रास्ते ही से मक्का वापस हो गईं और लोगों को हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु का बदला लेने और फ़ित्ने के अंत के लिए इकट्ठा किया। हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा हज़रत तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत ज़ुबैर बिन अवाम रज़ियल्लाहु अन्हु की सरकर्दगी में बहुत से लोग जमा हो गए और यह क़ाफ़िला वहां से बस्रा की ओर रवाना हुआ। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने भी ये देखकर बस्रा का रुख किया कि यह क़ाफ़िला उधर जा रहा है। बस्रा पहुंच कर हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने शहर वालो को अपने साथ शामिल होने की दा'वत दी। शहर वालो की एक बड़ी संख्या हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा के साथ शामिल हो गई लेकिन एक जमाअत ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के निर्धारित किए बस्रा के आमिल उस्मान बिन हनीफ़ के हाथ पर बैअत कर ली। इस दौरान दोनों जमाअतों में झड़पें भी हुईं। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा के लश्कर के क़रीब पड़ाव किया। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु का यह लश्कर भी पहुंच गया और उन्होंने क़रीब पड़ाव किया। दोनों ओर से मेल मिलाप किया गया, कोशिश की गई और बात चीत सफल भी हो गई परन्तु ठीक रात के वक़्त वह गिरोह जो हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के क़तल में शरीक था और उस का एक हिस्सा हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के लश्कर में भी शामिल था। उसने हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा के लश्कर पर हमला कर दिया जिस से जंग का आग़ाज़ हो गया। हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा ऊंट पर सवार थीं। जांनिसार एक के बाद एक ऊंट की लगाम पकड़ते और शहीद होते जाते थे। हज़रत अली

रज़ियल्लाहु अन्हु ने यह समझ लिया कि हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा जब तक ऊंट पर सवार रहेंगी जंग ख़त्म नहीं होगी। इसलिए आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने योद्धाओं को हुक्म दिया कि इस ऊंट को किसी ना किसी तरह मार गिराओ क्योंकि जंग का अंत इस के गिरने परआधारित है। इस पर एक व्यक्ति ने आगे बढ़कर ऊंट के पांव में तलवार मारी और वो बुलबुला कर बैठ गया। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु की फ़ौज ने ऊंट को चारों ओर से घेर लिया। हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा का ऊंट गिर जाने पर अहले जमल बिघर गए। इसके बाद हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने ऐलान करा दिया कि हथियार डालने या घर का दरवाज़ा बंद करने वाला अमन में है। किसी का पीछा न किया जाए। किसी के माल को माले ग़नीमत समझ कर उस पर कब्ज़ा न किया जाए। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु की फ़ौज ने इस हुक्म की तामील की। हज़रत ज़ुबैर बिन अवाम रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हु इसी जंग में शहीद हुए।

(उद्धरित अलकामिल फ़ील तारीख़ लेखक इब्ने असीर, भाग 3 पृष्ठ 99 से 149 दारुल क़ुतुब अल्इल्मिया बेरूत लबनान 2003 ई)

इस का एक हिस्सा इब्ने असीर की तारीख़ में से ख़ुलासा लिया गया है।

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु इस बारे में फ़रमाते हैं कि ''इन्ही लोगों की एक जमाअत ने जो हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के क़तल में शरीक थे हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा को इस बात पर तैयार कर लिया कि आप हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के ख़ून का बदला लेने के लिए जिहाद का ऐलान कर दें। इसलिए उन्होंने इस बात का ऐलान किया और सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हु को अपनी मदद के लिए बुलाया। हज़रत तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु भी उनके साथ शामिल हो गए और इस के परिणाम में हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा, हज़रत तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु के लश्कर में जंग हुई।" अर्थात हज़रत तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु तो हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा के लश्कर में थे। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु का और हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा का जो विशेष (main) लश्कर था उनकी जंग हुई ।''

जिसे जंगे जमल कहा जाता है। इस जंग के शुरू में ही हज़रत ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु, हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु की ज़बान से रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की एक पेशगोई सुनकर अलैहदा हो गए और उन्होंने क़सम खाई कि वे हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु से जंग नहीं करेंगे और इस बात का इक़रार किया कि अपने समझने में उन्होंने ग़लती की। दूसरी ओर हज़रत तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हु ने भी अपनी वफ़ात से पहले हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु की बैअत का इक़रार कर लिया।" पहले भी पिछले ख़ुत्बे में इस का वर्णन हो चुका है।'' क्योंकि रवायतों में आता है कि वह ज़ख़्मों की शिद्दत से तड़प रहे थे कि एक व्यक्ति उनके पास से गुज़रा। उन्होंने पूछा तुम किस गिरोह में से हो? उसने कहा हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के गिरोह में से। इस पर उन्होंने अपना हाथ उस के हाथ में देकर कहा कि तेरा हाथ अली रज़ियल्लाहु अन्हु का हाथ है और मैं तेरे हाथ पर हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु की दुबारा बैअत करता हूँ। उद्देश्य अन्य सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हु के मतभेद का तो जंगे जमल के समय ही फ़ैसला हो गया परन्तु हज़रत मुआविया का मतभेद बाक़ी रहा यहां तक कि जंगे सिफ्फिन हुई।"

(ख़िलाफ़ते राशिदा, अन्वारुल उलूम ,भाग 15 पृष्ठ 485-486)

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हु और फ़रमाते हैं कि "हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के क़ातिलों के गिरोह विभिन्न इलाकों में फैल गए थे और अपने आप को आरोप से बचाने के लिए दूसरों पर आरोप लगाते थे। जब उनको मालूम हुआ कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने मुस्लमानों से बैअत ले ली है तो उनको आप पर आरोप लगाने का अच्छा अवसर मिल गया और यह बात सही भी थी कि आप के इर्द-गिर्द हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के क़ातिलों में से कुछ लोग जमा हो गए थे इसलिए उनको आरोप लगाने का अच्छा अवसर हासिल था। इसलिए उनमें से जो जमाअत मक्का की ओर गई थी उसने हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा को इस बात पर आमादा कर लिया कि वह हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के ख़ून का बदला लेने के लिए जिहाद का ऐलान करें। इसलिए उन्होंने इस बात का ऐलान किया और सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हु को अपनी मदद के लिए बुलाया। हज़रत तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हु और ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु की बैअत इस शर्त पर कर ली थी कि वह हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के क़ातिलों से जल्द से जल्द बदला लेंगे। उन्होंने जल्दी के जो अर्थ समझे थे वह हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के निकट ख़िलाफे मस्लहत थे। उनका था हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु का ख़्याल था कि पहले समस्त सूबों का इंतिज़ाम हो जाए फिर क़ातिलों को सज़ा देने की ओर ध्यान किया जाए क्योंकि अव्वल मुक़द्दम इस्लाम की हिफ़ाज़त है। क़ातिलों के मुआमला में देर होने में कोई हर्ज नहीं। इसी तरह क़ातिलों के ताय्युन में भी मतभेद था। जो लोग निहायत अफ़्सुर्दा शक्लें बना कर सबसे पहले हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के पास पहुंच गए थे और इस्लाम में झगड़ा हो जाने का अंदेशा ज़ाहिर करते थे उनकी निसबत हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को उन पर संदेह नहीं था कि ये लोग फ़साद के बानी हैं, दूसरे लोग उन पर संदेह करते थे' हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को उन पर संदेह नहीं था लेकिन बाक़ी कुछ लोगों को संदेह था। इस मतभेद के कारण से तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हु और ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु ने यह समझा कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु अपने वादे को तोड़ते हैं। चूँकि उन्होंने एक शर्त पर बैअत की थी और वह शर्त उनके ख़्याल में हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने पूरी नहीं की थी इसलिए वह शरीयत के अनुसार अपने आपको बैअत से आज़ाद ख़्याल करते थे। जब हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा का ऐलान उनको पहुंचा तो वह भी उनके साथ जा मिले और सब मिलकर बस्रा की ओर चले गए। बस्रा में गवर्नर ने लोगों को आपके साथ मिल ने से रोके रखा लेकिन जब लोगों को मालूम हुआ कि तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हु और ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु ने केवल मजबूरी में और एक शर्त निर्धारित करके हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु की बैअत की है तो अक्सर लोग आपके साथ शामिल हो गए। जब हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को इस लश्कर का पता चला तो आपने भी एक लश्कर तैयार किया और बस्रा की ओर रवाना हुए। बस्रा पहुंच कर आपने एक आदमी को हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा और तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हु और ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु की ओर भेजा। वह आदमी पहले हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा की सेवा में हाज़िर हुआ और पूछा कि आपका इरादा क्या है। उन्होंने उत्तर दिया कि हमारा इरादा केवल सुधार है। इस के बाद उस व्यक्ति ने तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हु और ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु को भी बुलवाया और उनसे पूछा कि आप भी इसी लिए जंग के लिए तैयार हुए हैं उन्होंने कहा हाँ।'' अर्थात कि इस्लाह की कारण से।'' उस व्यक्ति ने उत्तर दिया कि यदि आपका उद्देश्य इस्लाह है तो इस का यह तरीक़ नहीं जो आपने चुना है इस का परिणाम तो फ़साद है। इस वक़्त मुल्क की ऐसी हालत है कि यदि एक व्यक्ति को आप क़तल करेंगे तो हज़ार उस की समर्थन में खड़े हो जाएंगे और उनका मुक़ाबला करेंगे तो और भी ज़्यादा लोग उनकी मदद के लिए खड़े हो जाऐंगे।''अत: यह तो सिल्सिला चलता जाएगा।'' अत: इस्लाह यह है कि पहले मुल्क को एकता की रस्सी में बाँधा जाए फिर उपद्रवियों को सज़ा दी जाए अन्यथा इस बदअमनी में किसी को सज़ा देना मुल्क में और फ़ित्ना डलवाना है। हुकूमत पहले क़ायम हो जाए तो वह सज़ा देगी।" पहले हुकूमत क़ायम हो जाए फिर वो सज़ा देगी।'' यह बात सुनकर उन्होंने कहा कि यदि हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु का यही इच्छा है तो वह आ जाएं, हम उनके साथ मिलने को तैयार हैं। इस पर इस व्यक्ति ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को सुचना दी और तरफ़ैन के प्रतिनिधि एक दूसरे को मिले और फ़ैसला हो गया कि जंग करना सही नहीं, सुलह होनी चाहिए। जब यह ख़बर सबाइयों को (अर्थात जो अब्दुल्लाह बिन सबाह की जमाअत के लोग और कातेलीन हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु थे) पहुंची तो उनको सख़्त घबराहट हुई और ख़ुफ़िया ख़ुफ़िया उनकी एक जमाअत मश्वरा के लिए इकट्ठी हुई। उन्होंने मश्वरा के बाद फ़ैसला किया कि मुसलमानों में सुलह हो जानी हमारे लिए अत्यधिक हानिकारक होगी क्योंकि उसी वक़्त तक हम हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के क़तल की सज़ा से बच सकते हैं जब तक कि मुस्लमान आपस में लड़ते रहेंगे। यदि सुलह हो गई और अमन हो गया तो हमारा ठिकाना कहीं नहीं।" कहीं भी हमारा ठिकाना नहीं होगा।'' इसलिए जिस प्रकार हो सुलह न होने

हदीस नबवी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

खड़े होकर नमाज़ पढ़ो और अगर खड़े होकर संभव न होतो बैठ कर और अगर बैठ कर भी संभव न हो तो पहलु के बल लेट कर ही सही।

तालिबे दुआ

Sohail Ahmad Nasir and Family

Jamaat Ahmadiyya Adra,Dist: Puruliya. West Bengal

दो। इतने में हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु भी पहुंच गए और आप रज़ियल्लाहु अन्हु के पहुंचने के दूसरे दिन आपकी "अर्थात इस इलाक़े में और आपकी" और हज़रत ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु की मुलाक़ात हुई। मुलाक़ात के समय हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि आपने मेरे लड़ने के लिए तो लश्कर तैयार किया है परन्तु क्या ख़ुदा के हुज़ूर पेश करने के लिए कोई कारण भी तैयार किया है? आप लोग क्यों अपने हाथों से इस इस्लाम के तबाह करने पर तुले हुए हैं जिसकी सेवा सख़्त जान निछावर करके की थी। क्या मैं आप लोगों का भाई नहीं? फिर क्या कारण है कि पहले तो एक दूसरे का ख़ून हराम समझा जाता था लेकिन अब हलाल हो गया। यदि कोई नई बात पैदा हुई होती तो भी बात थी। जब कोई नई बात पैदा ही नहीं हुई तो फिर यह मुक़ाबला क्यों है? इस पर हज़रत तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा, वह भी हज़रत ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ थे कि आपने हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के क़तल पर लोगों को उकसाया है। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि मैं हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के क़तल में शरीक होने वालों पर लानत करता हूँ। फिर हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु से कहा कि क्या तुम को याद नहीं कि रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया था कि ख़ुदा की क़सम! तू अली रज़ियल्लाहु अन्हु से जंग करेगा और तू ज़ालिम होगा अर्थात हज़रत ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु को फ़रमाया था।"यह सुनकर हज़रत ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु अपने लश्कर की ओर वापस लौटे और क़सम खाई कि वह हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु से कदापि जंग नहीं करेंगे और इक़रार किया कि उन्होंने इज्तिहाद में ग़लती की। जब यह ख़बर लश्कर में फैली तो सबको सन्तोष हो गया कि अब जंग नहीं होगी बल्कि सुलह हो जाएगी लेकिन मुफसिदों को सख़्त घबराहट होने लगी" जिन्हों ने फ़साद पैदा करना था क़ुदरती बात है उन्हें घबराहट होनी थी। उनको घबराहट होने लगी "और जब रात हुई तो उन्होंने सुलह को रोकने के लिए यह उपाय किया कि उनमें से जो हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ थे उन्होंने हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा और हज़रत तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हु और ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु के लश्कर पर रात के वक़्त शब-ख़ून मार दिया और जो उनके लश्कर में थे।"उन्होंने जो दूसरे लश्कर में थे'' उन्होंने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के लश्कर पर रात को हमला कर दिया।" दोनों ओर जो मुनाफ़िक़ थे, बट कर शामिल हुए थे, हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा की ओर भी और हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु की ओर भी। दोनों ने एक दूसरे पर हमला कर दिया। ख़ुद आपस में नहीं लड़े "जिसका परिणाम यह हुआ कि एक शोर पड़ गया और हर साथी ने ख़्याल किया कि दूसरे साथी ने उस से धोखा किया हालाँकि असल में यह केवल सुबाइयों की एक योजना थी। जब जंग शुरू हो गई तो हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने आवाज़ दी कि कोई व्यक्ति हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा को सुचना दे। शायद उनके माध्यम से अल्लाह तआला इस फ़ित्ना को दूर कर दे। इसलिए हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा का ऊंट आगे किया गया लेकिन परिणाम और भी ख़तरनाक निकला। मुफसिदों ने यह देखकर कि हमारा उपाय फिर उल्टा पड़ने लगा। हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा के ऊंट पर तीर मारने शुरू किए। हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने ज़ोर ज़ोर से पुकारना शुरू किया कि लोगो! जंग को तर्क करो और ख़ुदा और हिसाब के दिन को याद करो लेकिन फसाद फैलाने वाले रुके नहीं और बराबर आपके ऊंट पर तीर मारते चले गए। चूँकि बस्रा वाले उस लश्कर के साथ थे जो हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा के इर्द गिर्द जमा हुआ था उनको यह बात देखकर सख़्त गुस्सा आया और उम्मुल मोमिनीन की यह गुस्ताख़ी देखकर उनके ग़ुस्सा की कोई हद न रही और तलवारें खींच कर लश्कर विरोधी पर हमला करने लग गए "विरोधी लश्कर पर हमला-आवर हो गए।'' और अब यह हाल हो गया कि हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा का ऊंट जंग का केंद्र बन गया। सहाबा और बड़े बड़े बहादुर उस के इर्द-गिर्द जमा हो गए और एक के बाद एक क़तल होना शुरू हुआ लेकिन ऊंट की बाग उन्होंने नहीं छोड़ी। हज़रत ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु तो जंग में शामिल ही नहीं हुए और एक ओर निकल गए परन्तु एक बुरे ने उनके पीछे से जा कर इस हालत में कि वह नमाज़ पढ़ रहे थे उनको शहीद कर दिया। हज़रत तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हु ठीक जंग के मैदान में उन फसाद फैलाने वालों के हाथ से मारे गए। जब जंग तेज़ हो गई तो यह देखकर कि उस वक़्त तक जंग ख़त्म नहीं होगी जब तक हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा को मध्य से हटाया न जाए। कुछ लोगों ने आप के ऊंट के पांव काट दीए और लगाम उतार कर ज़मीन पर रख दी तब कहीं जा कर जंग ख़त्म हुई। इस घटना को देखकर हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु का चेहरा मारे दुख के लाल हो गया लेकिन यह जो कुछ हुआ इस से चारा भी न था। जंग के ख़त्म होने पर जब मारे जाने वालों में हज़रत तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हु की लाश मिली तो हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने सख़्त अफ़सोस किया। इन समस्त घटनाओं से साफ़ ज़ाहिर हो जाता है कि इस लड़ाई में सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हु का कदापि कोई दख़ल न था बल्कि यह शरारत भी उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के कातिलों की ही थी और यह कि तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हु और ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु की बैअत ही में फ़ौत हुए क्योंकि उन्होंने अपने इरादा से इंकार कर लिया था और हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु का साथ देने का इक़रार कर लिया था लेकिन कुछ शरीरों के हाथों से मारे गए। इसलिए हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने उनके क़ातिलों पर लानत भी की।"

(अनवारे ख़िलाफ़त,अन्वारुल ऊलूम, भाग 3 पृष्ठ 198 से 201)

जंगे जमल के अंत पर हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा के लिए समस्त सवारी और यात्रा की सामग्री तैयार की और हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा को छोड़ने के लिए स्वयं तशरीफ़ लाए और हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा के साथ जो लोग जाना चाहते थे उनको रवाना किया। जिस दिन हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने रवाना होना था हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा के पास तशरीफ़ लाए और आपके लिए खड़े हुए और समस्त लोगों की मौजूदगी में हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा लोगों के सामने निकलीं और कहा कि हे मेरे बेटो हम ने तकलीफ़ पहुंचा कर और ज़्यादती कर के एक दूसरे को नाराज़ कर दिया। भविष्य में हमारे उन मतभेदों के कारण कोई व्यक्ति भी एक दूसरे पर ज़्यादती न करे और ख़ुदा की क़सम मेरे और हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के मध्य शुरू से कभी कोई मतभेद नहीं था उस के अतिरिक्त जो मर्द और इस के सुसराली रिश्तेदारों के मध्य आम तौर पर बात हुआ करती है। अर्थात छोटी मोटी बातें हैं और हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु मेरी नेकियों की प्राप्ति का माध्यम हैं। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया हे लोगो !हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने अच्छी और सच्ची बात कही है। मेरे और हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा के मध्य केवल यही मतभेद था। हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा दुनिया और आख़िरत में तुम्हारे नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पत्नी हैं। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा को छोड़ने के लिए कई मील साथ तशरीफ़ ले गए और हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपने बेटों को हुक्म दिया कि वह हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा के साथ जाएं और एक दिन के बाद वापस आ जाएं।(अलतिबरी, भाग 3 पृष्ठ 60-61 तजहीज़ अली अलैहिस्सलाम आयशा मिन्लब्स्रा दारुल क़ुतुब अल्इल्मिया बेरूत 1987 ई) यह तिबरी का हवाला था जो मैंने अभी पढ़ा है।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि

"हज़रत तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हु रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाद भी ज़िंदा रहे और जब हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु की शहादत के बाद मुस्लमानों में मतभेद पैदा हुआ और एक गिरोह ने कहा कि हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के मारने वालों से हमें बदला लेना चाहिए तो इस गिरोह के लीडर हज़रत तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हु, हज़रत ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा थीं लेकिन दूसरे गिरोह ने कहा कि मुसलमानों में फूट पड़ चुकी है। आदमी मरा ही करते हैं। सब से पहले हमें समस्त मुसलमानों को इकट्ठा करना चाहिए ताकि इस्लाम की शौकत और इस की महानता स्थापित हो। बाद में हम उन लोगों से बदला ले लेंगे। इस गिरोह के लीडर हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु थे। यह मतभेद इतना बढ़ा कि हज़रत तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हु, हज़रत ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने आरोप लगाया कि अली रज़ियल्लाहु अन्हु उन लोगों को पनाह देना चाहते हैं जिन्हों ने हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु को शहीद किया है और हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने आरोप लगाया कि (जो यह कहते हैं कि शीघ्र बदला लिया जाए) उन लोगों को अपनी व्यक्तिगत लाभ अधिक प्यारे हैं। इस्लाम का लाभ उनको दृष्टिगत नहीं है। मानो मतभेद अपनी इंतिहाई अवस्था तक पहुंच गया और फिर आपस में जंग भी शुरू हुई ऐसी जंग जिसमें हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने लश्कर की कमान की। आप ऊंट पर चढ़ कर लोगों को लड़वाती थीं और हज़रत तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु भी इस लड़ाई में शामिल थे। जब दोनों गिरोहों में जंग जारी थी तो एक सहाबी हज़रत तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हु के पास आए और उनसे कहा तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हु ! तुम्हें याद है अमुक अवसर पर मैं और तुम रसूले

करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मज्लिस में बैठे हुए थे कि रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया। तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हु एक वक़्त ऐसा आएगा कि तुम और लश्कर में होगे और अली रज़ियल्लाहु अन्हु और लश्कर में होगा और अली रज़ियल्लाहु अन्हु हक़ पर होगा और तुम ग़लती पर होगे। हज़रत तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हु ने यह सुना तो उनकी आँखें खुल गईं और उन्होंने हाँ ! मुझे यह बात याद आ गई है और फिर उसी समय लश्कर से निकल कर चले गए। जब वह लड़ाई छोड़कर जा रहे थे ताकि रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बात पूरी की जाए तो एक बद-बख़्त इन्सान जो हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के लश्कर का सिपाही था उसने पीछे से जा कर आप को ख़ंजर मार कर शहीद कर दिया। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु अपनी जगह पर बैठे हुए थे वह इस ख़्याल से अर्थात जो हज़रत तल्हा का क़ातिल था इस ख़्याल से कि मुझे बहुत बड़ा इनाम मिलेगा दौड़ता हुआ आया और उसने कहा हे अमीरुल मोमिनीन! आपको आपके दुश्मन के मारे जाने की ख़बर देता हूँ। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा। कौन दुश्मन? उसने कहा। हे अमीरुल मोमिनीन ! मैंने तल्हा (रज़ियल्लाहु अन्हु) को मार दिया है। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया हे व्यक्ति मैं भी तुझे रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ओर से बशारत देता हूँ कि तू जहन्नम में डाला जाएगा क्योंकि रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक बार फ़रमाया (जबकि तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हु भी बैठे हुए थे और मैं भी बैठा हुआ था कि हे तल्हा (रज़ियल्लाहु अन्हु) तू एक बार हक़ और इन्साफ़ की ख़ातिर ज़िल्लत बर्दाश्त करेगा और तुझे एक व्यक्ति मार डालेगा परन्तु ख़ुदा उस को नर्क में डालेगा

(आइन्दा वही कौमें इज़्ज़त पाएँगी जो माली-और-जानी....., अन्वारुल उलूम,भाग 21पृष्ठ 149-150)

फिर जंगे सिफ्फियीन हुई थी। इस की घटनाओं में लिखा है कि यह जंग हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत अमीर मुआविया के मध्य 37 हिज्री में हुई थी। सिफ्फियीन शाम और इराक़ के मध्य एक स्थान है। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु कूफ़ा से फ़ौज लेकर चले और जब सिफ्फियीन पहुंचे तो देखा कि शामी लश्कर अमीर मुआविया के नेतृत्व में पहले से पड़ाव डाले हुए था और उनकी एक जमाअत दरिया फ़ुरात के घाट पर क़ाबिज़ थी। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने यक़ीन दिलाया कि हम लड़ने नहीं आए बल्कि अमीर मुआविया से समझोता करने आए हैं जबकि अमीर मुआविया समझोते पर राज़ी नहीं हुए। शामी लश्कर ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के लश्कर को दरिया फ़ुरात से पानी लेने से रोक दिया। इस पर हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपनी फ़ौज को हमला करने का हुक्म दिया। इस तरह हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु की फ़ौज शामी फ़ौज को पीछे करने और अपने लिए दरिया तक का रास्ता बनाने में सफल हो गई। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने शामियों को फ़ुरात से पानी लेकर जाने की खुली आज्ञा भी दे दी। शामियों ने तो हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को मना किया था, पानी लेने से रोक दिया था लेकिन आपने जब दरिया पर क़ब्ज़ा कर लिया तो आपने उनको पानी लेने से नहीं रोका बल्कि आज्ञा दी। अमीर मुआविया का इसरार था कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के कातिलों को उनके हवाले कर दें। एक बार जब लड़ाई छिड़ जाने का ख़तरा पैदा हुआ तो दोनों ओर के सुलह पसंदों ने रोकथाम करवा दी। जंग का आरम्भ सिफ़र 37 हिज्री में शुरू हुआ। जंग से पूर्व झड़पें होती रहीं लेकिन दोनों समूह आम जंग के भयानक परिणाम से भयभीत होने के कारण बचते रहे। सुलह की हर सम्भावना बाक़ी रखने की उद्देश्य से दोनों समूह इस पर सहमत हो गए कि हुर्मत वाले महीनों में अस्थाई सुलह कर ली जाए लेकिन यह उपाय भी सफल न हुआ। इसलिए सफ़र के आरम्भ में दुबारा जंग का बाक़ायदा ऐलान कर दिया गया। जब लड़ाई कुछ समय तक बग़ैर किसी फ़ैसला के होती रही तो अमीर मुआविया की हिम्मत कमजोर हो गई। इस ख़तरनाक हालत में हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हु ने उन्हें मश्वरा दिया कि क़ुरआन मजीद के नुस्ख़े नेज़ों के सिरों पर बंधवाएं और कहें कि इस किताब के अनुसार फ़ैसला होना चाहिए। इसलिए ऐसा ही किया गया जिसके परिणाम में हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के अनुयाइयों में मतभेद पैदा हो गया। एक बड़ी संख्या ने यह कह दिया कि अल्लाह से फ़ैसला चाहने की मांग ठुकराई नहीं की जा सकती। इस तरह हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने हर प्रथम लशकर को वापस बुला लिया और लड़ाई रुक गई। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु की फ़ौज की अधिकतरता ने अमीर मुआविया का परामर्श मान लिया कि दोनों फ़रीक़ एक एक निर्णय करने वाले को चुने और ये दोनों निर्णय करने वाले मिलकर क़ुरआन-ए-मजीद के इरशाद के अनुसार किसी फ़ैसला पर पहुंच जाएं। इतिहास की पुस्तक में इस घटना को 'तहकीम'कहा जाता है। बहरहाल शामियों ने हज़रत अम्र बिन आसु रज़ियल्लाहु अन्हु का स्वागत किया और हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत अबू मूसा अशअरी रज़ियल्लाहु अन्हु को चुना और इक़रारनामे पर हस्ताक्षर के बाद फ़ौजें बिखर गईं। यह असीर की तारीख़ का हवाला है।

(उद्धरित अल्कामिल फिलतारीख़ अज़ इब्ने असीर, भाग 3 पृष्ठ 161 से 201 दारुल क़ुतुब अल्इल्मिया बेरूत लबनान 2003ई)(लुग़ातुलहदीस, भाग 2, पृष्ठ 608 ज़ेर लफ़्ज़ सिफ्फियीन)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने इस बारे में इस तरह तहरीर फ़रमाया है, बयान फ़रमाया है कि

"इस जंग में हज़रत मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु के साथीयों ने यह होशयारी की कि नेज़ों पर क़ुरआन उठा दिए और कहा कि जो कुछ क़ुरआन फ़ैसला करे वह हमें स्वीकार है और इस उद्देश्य के लिए निर्णय करने वाला निर्धारित होने चाहिऐं। इस पर वही मुफ़सिद जो हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के क़त्ल की साजिश में शामिल थे और जो आपकी शहादत के तुरन्त बाद अपने बचाओ के लिए हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ शामिल हो गए थे उन्होंने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु पर यह ज़ोर देना शुरू कर दिया कि यह बिल्कुल सही कहते हैं। आप फ़ैसला के लिए निर्णायक निर्धारित कर दें। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने बहुत इन्कार किया परन्तु उन्होंने और कुछ उन कमज़ोर स्वभाव लोगों ने जो उन के इस धोका में आ गए थे हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को इस बात पर मजबूर किया कि आप निर्णायक निर्धारित करें। इसलिए मुआविया की ओर से हज़रत अम्र बिन आस और हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु की ओर से हज़रत अबू मूसा अशअरी निर्णायक निर्धारित हुए। यह निर्णय वास्तव में क़त्ले उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु की घटना में था और शर्त यह थी कि क़ुरआन करीम के अनुसार फ़ैसला होगा और यह निर्णायक इसलिए निर्धारित किए गए थे कि हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु का जो क़तल है इस घटना के बारे में फ़ैसला होगा और यह था कि क़ुरआन करीम के अनुसार जो भी क़ातिल हैं उनको सज़ा देने के लिए या उनको पकड़ने के लिए फ़ैसला होगा। "परन्तु अम्र बिन आस और अबू मूसा अशअरी दोनों ने मश्वरा कर के यह फ़ैसला किया कि बेहतर होगा कि पहले हम दोनों अर्थात हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु को उनकी इमारत से हटा दें।" तहकीम तो इसलिए थी, इसलिए निर्णायक निर्धारित किए गए थे कि हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के क़त्ल के बारे में फ़ैसला करें लेकिन यहां दोनों निर्णायक जो निर्धारित किए गए थे उन्होंने यह एक फ़ैसला कर दिया कि दोनों को पहले हटाया जाए फिर बाद में बात होगी "क्योंकि समस्त मुस्लमान उन्हीं दोनों की कारण से मुसीबत में पड़े हुए हैं "यह इन दोनों का ख़्याल था" और फिर स्वतंत्र रूप में मुस्लमानों को कोई फ़ैसला करने दें ताकि वे जिसे चाहें ख़लीफ़ा बना लें हालाँकि वे इस काम के लिए निर्धारित ही नहीं हुए थे। यह तो बात ही ग़लत थी जिसके बारे में इन निर्णय करने वालों ने सूचना शुरू कर दी थी क्योंकि वे इस काम के लिए निर्धारित नहीं किए गए थे परन्तु बहरहाल उन दोनों ने इस फ़ैसले का ऐलान करने के लिए एक आम जल्सा आयोजित किया और हज़रत अम्र बिन अल्आस ने हज़रत अबू मूसा अशअरी से कहा कि पहले आप अपने फ़ैसला का ऐलान कर दें, बाद में मैं ऐलान कर दूँगा। इसलिए हज़रत अबू मूसा ने ऐलान कर दिया कि वह हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को ख़िलाफ़त से हटाते हैं। इस के बाद हज़रत अम्र बिन आस खड़े हुए और उन्होंने कहा कि अबू मूसा ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को हटा दिया है और मैं भी उनकी इस बात से सहमत हूँ और हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को ख़िलाफ़त से हटाता हूँ लेकिन मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु को मैं हटाता नहीं बल्कि उस के ओहदा इमारत पर उन्हें कायम रखता हूँ (हज़रत अम्र बिन आस ख़ुद बहुत नेक आदमी थे लेकिन इस वक़्त...." हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु लिखते हैं कि "......मैं इस बहस में नहीं पड़ता कि उन्होंने यह फ़ैसला क्यों किया था इस वक़्त बहरहाल वह बावजूद इस नेकी के वहां किसी तरह लोगों की बातों में आ गए या क्या हुआ? यह एक अलग विषय है इसलिए इस बहस में नहीं पड़ता लेकिन बहरहाल उनका फ़ैसला ग़लत था। "इस फ़ैसला पर हज़रत मुआविया के साथियों ने तो यह कहना शुरू कर दिया कि जो लोग निर्णायक निर्धारित हुए थे उन्होंने अली रज़ियल्लाहु अन्हु की बजाय मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु के हक़ में फ़ैसला दे दिया है और यह सही है परन्तु हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने इस फ़ैसला को मानने से इन्कार कर दिया और कहा कि न निर्णायक इस उद्देश्य के लिए निर्धारित थे और न

उनका यह निर्णय किसी कुरआन के हुक्म पर है। इस पर हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के वही मुनाफ़िक़ स्वभाव साथी जिन्होंने निर्णायक निर्धारित करने पर-ज़ोर दिया था यह शोर मचाने लग गए कि निर्णायक निर्धारित ही क्यों किए गए थे जबकि धार्मिक मामलों में कोई निर्णायक हो ही नहीं सकता। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने उत्तर दिया कि अव्वल तो यह बात समझौते में शामिल थी कि उनका फ़ैसला क़ुरआन के अनुसार होगा जिसको उन्होंने पूरा नहीं किया।" कि क़ुरआन के अनुसार फ़ैसला हुआ ही नहीं। "दूसरे निर्णायक तो ख़ुद तुम्हारे बार बार कहने के कारण से निर्धारित किए गए थे या निर्धारित किया गया था और अब तुम ही कहते हो कि मैंने निर्णायक क्यों निर्धारित किया? (यह जो बाग़ी थे जो मुनाफ़िक़ थे) उन्होंने कहा हम ने हक मारा था और हमने आपसे जो कुछ कहा था वह हमारी ग़लती थी। परन्तु सवाल यह' है कि आपने यह बात क्यों मानी। इस का तो यह अर्थ हैं कि हम भी गुनहगार हो गए और आप भी। बराबर हो गए दोनों। हमने भी ग़लती का इर्तिकाब किया और आपने भी। अब हमने तो अपनी ग़लती से तौबा कर ली है। उचित यह है कि आप भी तौबा करें और इस बात का इक़रार करें कि आपने जो कुछ किया है नाजायज़ किया है। इस से उनका उद्देश्य यह था कि यदि हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने इन्कार किया तो वह यह कह कर आपकी बैअत से अलग हो जाऐंगे कि उन्होंने चूँकि एक इस्लाम के खिलाफ कार्य किया है इसलिए हम आपकी बैअत में नहीं रह सकते और यदि उन्होंने अपनी ग़लती को स्वीकार कर लिया यदि अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने इन्कार किया तो वह यह कह कर बैअत से अलग हो जाऐंगे कि इस्लाम के खिलाफ कार्य किया है इसलिए हम आपकी बैअत में नहीं रह सकते और यदि उन्होंने अपनी ग़लती को स्वीकार कर लिया। और कहा कि मैं तौबा करता हूँ तो भी उनकी ख़िलाफ़त बातिल हो जाएगी क्योंकि जो व्यक्ति इतने बड़े गुनाह का करने वाला हो वह ख़लीफ़ा किस तरह हो सकता है। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने जब यह बातें सुनी तो कहा कि मैंने कोई ग़लती नहीं की। जिस विषय के संबंध में मैंने निर्णायक निर्धारित किया था इस में किसी को निर्णायक निर्धारित करना शरीयत इस्लामिया की दृष्टि से जायज़ है। बाक़ी मैंने निर्णायक निर्धारित करते वक़्त साफ़ तौर पर यह शर्त रखी थी कि वह जो कुछ फ़ैसला करेंगे यदि क़ुरआन और हदीस के अनुसार होगा तब मैं उसे स्वीकार करूँगा अन्यथा नहीं मैं उसे किसी सूरत में भी स्वीकार नहीं करूँगा। उन्होंने चूँकि इस शर्त को दृष्टिगत नहीं रखा और न जिस उद्देश्य के लिए उन्हें निर्धारित किया गया था उस के संबंध में उन्होंने कोई फ़ैसला किया है इसलिए मेरे लिए उनका फ़ैसला कोई हुज्जत नहीं। परन्तु उन्होंने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के इस कारण को स्वीकार नहीं किया और बैअत से अलग हो गए और ख़वारिज कहलाए और उन्होंने यह धर्म निकाला कि वाजिब इल्ला इताअत ख़लीफ़ा कोई नहीं। मुसलमानों की अधिकता के अनुसार अनुसार अमल हुआ करेगा क्योंकि किसी एक व्यक्ति को अमीर वाजिबुल इताअत मानना لا حكم الا لله के ख़िलाफ़ है।'

(उद्धरित ख़िलाफ़ते राशिदा,अन्वारुल ऊलूम, भाग 15 पृष्ठ 486 से 488)

जंगे नहरवान 38 हिज्री में हुई थी। नहरवान बग़दाद और वास्त के मध्य स्थित है। इस स्थान पर हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु और ख़वारिज के मध्य जंग लड़ी गई थी।

(मोअज्जमुल बुबलदान, भाग 5 पृष्ठ 375 दारुल क़ुतुब अल्इल्मिया बेरूत)

इब्ने असीर की तारीख़ में इस प्रकार लिखा है कि जंगे सिफ्फ़ीन के समझौता के लिए हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु की ओर से हज़रत अबू मूसा अशअरी और अमीर मुआविया की ओर से हज़रत अम्र बिन आस निर्णायक निर्धारित हुए। तारीख़ में इस घटना को 'तहकीम' कहते हैं। तहकीम के मामले में हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु से उनके लश्कर के एक गिरोह ने मतभेद किया और बग़ावत करते हुए अलग हो कर ख़वारिज कहलाया। इन ख़वारिज ने तहकीम को गुनाह क़रार देकर हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु से तौबा करने और ख़िलाफ़त से हटने की मांग की तो आपने साफ़ इन्कार कर दिया। क्यों इन्कार किया यह विवरण पहले आ चुका है। हज़रत अली अमीर मुआविया के ख़िलाफ़ दुबारा शाम की ओर पेशक़दमी की तैयारी में व्यस्त थे कि ख़वारिज ने फ़साद शुरू कर दिया। उन्होंने अब्दुल्लाह बिन वहब को अपना इमाम बनाया और कूफ़ा से नहरवान की ओर चले गए। ख़वारिज ने बस्रा में भी अपना जत्था जमा किया जो बाद में नहरवान में अब्दुल्लाह बिन वहब के लश्कर से जा मिला। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के एक सहाबी अब्दुल्लाह बिन ख़ब्बाब् को हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु की तरफ़दारी पर क़तल कर दिया और उनकी गर्भवती पत्नी का पेट काट कर के निहायत बेदर्दी से उसे भी क़तल कर दिया और क़बीला तय की तीन महिलाओं को भी क़तल कर दिया। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु तक जब यह हालात पहुंचे तो आपने तहक़ीक़ के लिए हारिस बिन मुर्रा को दूत के तौर पर भेजा। जब वह उनके पास गए तो ख़वारिज ने उन्हें भी क़त्ल कर दिया। यह हालात देखकर हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने शाम जाने का इरादा छोड़ दिया और लगभग पैंसठ हज़ार का लश्कर जो शाम के लिए तैयार किया था इसे लेकर ख़वारिज के मुक़ाबला के लिए निकले। जब आप नहरवान स्थान पर पहुंचे तो ख़वारिज को सुलह की दा'वत दी और हज़रत अबू अय्यूब अंसारी रज़ियल्लाहु अन्हु को झण्डा दिया कि जो उस की पनाह में आ जाएगा इस से जंग नहीं की जाएगी। यह ऐलान सुनकर ख़वारिज जिनकी संख्या चार हज़ार थी उनमें से एक सौ हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ शामिल हो गए और एक बड़ी संख्या कूफ़ा को लोट गई। सिर्फ एक हज़ार आठ सौ लोग अब्दुल्लाह बिन वहब ख़ारजी की निगरानी में आगे बढ़े और हज़रत अली के पैंसठ हज़ार के लश्कर से जंग हुई जिस में समस्त ख़वारिज मारे गए। एक रिवायत के अनुसार ख़वारिज की मामूली संख्या जो कि दस से भी कम थी बच सकी। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के लश्कर में से सात आदमी शहीद हुए।

(उद्धरित अल कामिल फ़ी तारीख़ लेखक इब्ने असीर, भाग 3 पृष्ठ 212 से 223 दारुल क़ुतुब अल्इल्मिया बेरूत लबनान 2003 ई)(तारीख़ अलमसऊदी, भाग 2, पृष्ठ 342 नफ़ीस अकैडमी इस्ट्रेचन रोड कराची, नवम्बर 1985 ई)

हज़रत उम्रह पुत्री अब्दुर्रहमान रज़ियल्लाहु अन्हु ने वर्णन किया कि जब हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु बस्रा की ओर रवाना हुए तो विदाई की मुलाक़ात के लिए नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पत्नी हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा की सेवा में आई। उन्होंने फ़रमाया आप अल्लाह तआला की सुरक्षा में जाएं अर्थात हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को कहा कि आप अल्लाह तआला की सुरक्षा में जाएं। ख़ुदा की क़सम ! निसन्देह आप हक़ पर हैं और हक़ आपके साथ है। रसूल अल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हमें घरों में ठहरने का हुक्म दिया है। इसलिए यदि अल्लाह और उस के रसूल की ना-फ़रमानी का डर न होता तो मैं आपके साथ चलती लेकिन अल्लाह की क़सम ! जबकि मैं अपने बेटे उम्र को आपके साथ रवाना करती हूँ जो मेरे निकट सबसे उत्तम है और वह मुझे मेरी जान से भी अधिक प्यारा है।

(अलमुस्तदरक अस्सहीहैन, भाग 3 पृष्ठ 129 किताब मारफ़ अल-सहाब ज़िक्र इस्लाम अमीरुल मौमेनीन अली, हदीस नम्बर 4611 प्रकाशन दारुल क़ुतुब अल्इल्मिया बेरूत 2002 ई)

बहरहाल यह वर्णन अभी चल रहा है। आइन्दा अगले हफ़्ते भी चलेगा। इंशा-अल्लाह।

आज भी में पाकिस्तान और अल-जज़ाएर के अहमदियों के लिए दुआ के लिए कहना चाहता हूँ। अल-जज़ाएर की तो एक अच्छी ख़बर है कि पिछले दो तीन दिनों में दो विभिन्न अदालतों ने झूठे आरोप में ग्रस्त बहुत सारे अहमदियों को बरी किया है। अल्लाह तआला इन न्यायप्रिय जजों को प्रतिफल दे और बाक़ी इंतिज़ामिया और आदालत को भी इन्साफ़ से काम लेने की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए जो झूठे मुक़द्दमे अहमदियों पर क़ायम कर रहे हैं।

पाकिस्तान के कुछ अधिकारियों और जज जो इन्साफ़ से दूर हट रहे हैं और अपने अधिकारों का अवैध प्रयोग कर रहे हैं अल्लाह तआला उन्हें भी तौफ़ीक़ दे कि अपने दिलों के द्वेष और छल को निकाल कर मामले को देखने वाले हों। जिन लोगों की इस्लाह अल्लाह तआला के निकट मुक़द्दर नहीं अल्लाह तआला उनकी पकड़ के सामान शीघ्र फ़रमाए और अहमदियों के लिए पाकिस्तान में भी अमन तथा शान्ति के सामान पैदा फ़रमाए।

पाकिस्तानी अहमदी, पाकिस्तान में रहने वाले अहमदी विशेषता नवाफ़िल और दुआओं पर-ज़ोर दें। इन दुआओं में رَبِّ كُلُّ شَيْءٍ خَادِمُكَ رَبِّ فَاحْفَظْنِي وَانْصُرْنِي وَارْحَمْنِي भी बहुत पढ़ें। اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَجْعَلُكَ فِيْ نُحُوْرِهِمْ وَنَعُوْذُبِكَ مِنْ شُرُوْرِهِمْ भी बहुत पढ़ें। इस्तिग़फ़ार की ओर भी ध्यान दें। दुरूद की ओर भी ध्यान दें। आजकल इस की बहुत ज़रूरत है। नवाफ़िल भी अदा करें जैसा कि मैंने कहा। अल्लाह तआला उनको तौफ़ीक़ भी दे और जल्द वहां के हालात भी सही फ़रमाए।

आज भी मैं नमाज़ों के बाद कुछ जनाज़े पढ़ाऊंगा जिनमें से पहला जनाज़ा श्रीमती हुमदा अब्बास साहिबा का है जो श्रीमान अब्बास बिन अब्दुल क़ादिर साहिब शहीद ख़ैरपुर की पत्नी थीं। 29 दिसम्बर को 91 वर्ष की उम्र में वफ़ात पा गईं। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना इलैहि राजेऊन।

उनके पिता डाक्टर मुहम्मद इब्राहीम साहिब ने किंग ऐडवर्ड मैडीकल कॉलेज में पढ़ाई के दौरान 1926 ई में अपने अहमदी क्लास फ़ैलो से प्रभावित हो कर अपनी

पत्नी के साथ हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु के हाथ पर बैअत कर के अहमदियत क़बूल की थी। मई 1951 ई में लाहौर में हुमदा साहिबा की प्रोफ़ैसर अब्बास बिन अब्दुल क़ादिर साहिब के साथ शादी हुई थी जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के सहाबी हज़रत मौलाना अब्दुल माजिद साहिब के पोते थे और हज़रत सय्यदा सारा बेग़म साहिबा पत्नी हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु के बड़े भाई प्रोफ़ैसर अब्दुल क़ादिर साहिब के बेटे थे। 1974 ई में उनके पति प्रोफ़ैसर अब्बास बिन अब्दुल क़ादिर साहिब को ख़ैरपुर में शहीद कर दिया गया था तो बड़े धैर्य के साथ उन्होंने काम लिया। कोई व्याकुलता नहीं दिखाई और अल्लाह तआला की रज़ा पर राज़ी हुईं। आपके पति की शहादत पर आप के ग़ैर जमाअत ख़लेरे भाई ने अफ़सोस के पत्र में लिखा कि अब्बास बहुत अच्छे इन्सान थे। काश कि उनका अंजाम भी हिदायत की राह पर होता तो हुमदा साहिबा ने उनको उत्तर लिखा कि मुझे फ़ख़र है कि जिस राह पर मेरे पति ने जान दी है वह हिदायत की राह है।

फिर स्कूल के ज़माना में हुमदा साहिबा की एक गहरी सहेली शफ़ीक़ा साहिबा थीं जो इत्तिफ़ाक़ से पाकिस्तान के जनरल ज़ियाउल हक़ साहिब की पत्नी बनी। उन्होंने एक बार अपने पति ज़ियाउल हक़ साहिब के सदर बनने के बाद कहा कि सब लोग मुझे मिलने आते हैं परन्तु हुमदा नहीं आती। हुमदा साहिबा को यह पता लगा तो आपने यह सुन के कहा कि एक ऐसे व्यक्ति की बीवी से मिलने की मुझे कोई इच्छा नहीं जो मेरे प्यारे इमाम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और आपकी जमाअत से दुश्मनी रखता है। और फिर उस से कभी नहीं मिलीं।

आप बेशुमार ख़ूबियों की मालिक थीं। बेहद सफाई पसन्द थीं। जीवन का ढंग था। बहुत नेक और मुख़लिस महिला थीं। नमाज़ और रोज़े का हमेशा बहुत इल्तिज़ाम करती थीं। बच्चों को भी इस की आदत डाली। चंदा अदा करने में बहुत जल्दी करतीं। ख़ैरात करने के लिए हमेशा तैयार रहा रहती थीं। रमज़ान के महीने में बहुत से लोगों के लिए अपने घर पर रोज़ाना रोज़ा खुलवाने का इंतिज़ाम करतीं। ख़िलाफ़त से बे इंतिहा सम्पर्क और इशक़ और मुहब्बत थी। अपने हाथ से बाक़ायदा मुझे पत्र लिखा करती थीं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की पुस्तकों का अक्सर अध्ययन करतीं और सिल्सिला की दूसरी कुतुब और अल्फ़ज़ल का आख़री वक़्त तक अध्ययन करती रहीं। 2006 ई में उनकी छोटी बेटी डाक्टर आमिरा ट्रैफ़िक हादिसे में दो बच्चों के साथ वफ़ात पा गईं तो इस सदमे को बड़े हौसले से बर्दाश्त किया और सब्र का एक मिसाली नमूना दिखाया। सब अज़ीज़ रिश्तेदार और मिलने जुलने वाले आपकी बेशुमार ख़ूबियों की कारण से आपसे मुहब्बत करते थे। ग़ैर अहमदी रिश्तेदारों का भी आपसे बहुत मुहब्बत का सम्पर्क था। पीछे रहने वालों में तीन बेटियां और दो बेटे शामिल हैं जो कि अमरीका, कैनेडा और नार्वे में रहते हैं। अल्लाह तआला इन सबको, उनकी औलाद को और उनकी औलाद की नस्ल को उनकी नेकियों को जारी रखने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। मरहूमा के दर्जात बुलंद फ़रमाए।

अगला जनाज़ा रिज़वान सय्यद नईमी साहिब इराक़ का जो 13 नवम्बर को 70 वर्ष की उम्र में वफ़ात पा गए। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन।

उनके बेटे मुस्तफ़ा नईमी साहिब लिखते हैं कि मेरे पिता साहिब ने स्वप्न में ख़ुद को हज़रत सय्यद अब्दुल क़ादिर जीलानी साहिब के पास देखा जिन्हों ने पिता साहिब को अपना जूता अता फ़रमाया। पिता साहिब ने यह कहते हुए उसे लेने में झिजक महसूस की कि मेरी क्या औक़ात कि मैं सय्यद अब्दुल क़ादिर जीलानी का जूता पहन सकूँ लेकिन सय्यद अब्दुल क़ादिर जीलानी ने इसरार किया तो पिता साहिब ने जूता पहन लिया उस के बाद सय्यद अब्दुल क़ादिर जीलानी ने एक व्यक्ति और उस की जमाअत की ओर इशारा कर के पिता साहिब को उनमें शामिल होने का इरशाद फ़रमाया। इस के बाद रिज़वान नईमी साहिब को स्वप्न में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ज़यारत भी हुई। कुछ वर्ष बाद एम. टी. ए. के माध्यम से उनका जमाअत से परिचय हुआ तो रिज़वान साहिब ने कहा कि उन्हें स्वप्न में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की जो ज़यारत हुई थी इस से मुराद आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के सच्चे सेवक हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की आमद थी और दूसरी स्वप्न में जिस व्यक्ति और उस के जमाअत की ओर शेख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी ने इशारा कर के उनमें शामिल होने को कहा था उस से मुराद ख़लीफ़तुल मसीह और उनकी जमाअत है। इसलिए उन्होंने 2012 ई में बैअत कर ली।

मरहूम बड़े नेक सालेह और अपने रिश्तेदारों और ग़रीबों की मदद करने वाले थे। तब्लीग़ का बहुत शौक़ था। कमज़ोर सेहत और लोगों के विरोध के बावजूद अपने क्षेत्र में अहमदियत की तब्लीग़ करते रहते थे। अपने ख़ानदान को हमेशा नसीहत करते रहते थे कि वे बैअत कर के जमाअत में शामिल हो। उनके बेटे और पत्नी और पत्नी के भाई ने भी अब बैअत कर ली है। अल्लाह तआला उनको दृढ़ता प्रदान फ़रमाए और उन लोगों को मरहूम की नेकियों को जारी रखने की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए। मरहूम के दर्जात अल्लाह तआला बुलंद फ़रमाए।

अगला जनाज़ा श्रीमान मलिक अली मुहम्मद साहिब हजका ज़िला सरगोधा का है जो मुहम्मद अफ़ज़ल ज़फ़र साहिब मुरब्बी सिल्सिला कीनिया के पिता थे। 20 अगस्त को 90 वर्ष की उम्र में वफ़ात पा गए। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलैहि राजेऊन। 1974 ई में आप को जेल में ख़ुदा के लिए कैद होने की सआदत भी प्राप्त हुई। सिल्सिला के कर्मचारियों, वाकफ़ीन ज़िन्दगी, मुरब्बियान और मुअल्लमीन की बहुत अधिक इज़्ज़त किया करते थे। मरहूम तहज्जुद की नमाज़ पढ़ने वाले, नमाज़ क़ुरआन के पाबन्द, बहुत मेहमान नवाज़ थे। ग़रीबों का ध्यान रखने वाले थे। धैर्य तथा और शुक्र करने वाले थे। प्रेम के साथ काम लेने वाले थे। एक नेक और मुख़लिस इन्सान थे। क़ुरआन करीम की तिलावत बाक़ायदगी से करते थे और आप को अत्याधिक बच्चों को क़ुरआन करीम पढ़ाने की भी तौफ़ीक़ मिली। पीछे रहने वालों में तीन बेटे और ग्यारह पोते पोतियां शामिल हैं। श्रीमान मुहम्मद अफ़ज़ल ज़फ़र साहिब मुरब्बी सिल्सिला कीनिया जैसा कि मैंने कहा उनके बेटे थे जो कि आजकल वहां कीनिया में काम कर रहे थे इस कारण से अपने पिता के जनाज़ा में और तदफ़ीन में शामिल नहीं हो सके। अल्लाह तआला उनको भी धैर्य और हौसला प्रदान फ़रमाए। मरहूम से क्षमा और रहम का सुलूक फ़रमाए। दर्जात बुलंद फ़रमाए।

अगला जनाज़ा एहसान अहमद साहिब लाहौर का है जो शफ़क़त महमूद साहिब के पुत्र थे। 27 जुलाई को 35 वर्ष की उम्र में कोरोना वायरस के कारण से उनकी वफ़ात हुई। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन।

आप हज़रत मौलवी नूर उद्दीन अजमल साहिब आफ़ गोलीकी ज़िला गुजरात सहाबी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के पोते थे और इरशाद अहमद साहिब गुजरांवाला के नवासे थे। पिछले दो वर्ष आपको हलक़ा रचना टाउन लाहौर में बतौर सदर जमाअत ख़िदमत की तौफ़ीक़ मिली। इस के अतिरिक्त दिल्ली गेट इमारत में बतौर सैक्रेटरी नौमुबाईन सेवा की तौफ़ीक़ पाई। तब्लीग़ का बहुत शौक़ था। ख़ुदा के फ़ज़्ल से आपको आठ लोगों को बैअत करवाने का भी सौभाग्य प्राप्त हुआ। पीछे रहने वालों में पत्नी के अतिरिक्त दो बेटे प्रिय हन्नान मसरूर आयु 6 वर्ष और प्रिय मुबीन अहमद ताहिर उम्र 3 वर्ष और एक बेटी अज़ीज़ा सायरा अहमद 5 वर्ष के अतिरिक्त माता, माताा और तीन भाई और दो बहनें शामिल हैं। अल्लाह तआला उन सबको धैर्य और हौसला प्रदान फ़रमाए। इन बच्चों का स्वयं रक्षक हो और उनको उनकी नेकियां जारी रखने की तौफ़ीक़ प्रादन फ़रमाए। मरहूम के दर्जात बुलन्द फ़रमाए।

अगला जनाज़ा श्रीमान रियाज़ुद्दीन शम्स साहिब का है जो मौलाना जलालुद्दीन शम्स साहिब के छोटे बेटे थे। 27 मई को वफ़ात पा गए। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन।

मरहूम के ख़ानदान का परिचय यह है कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के सहाबा हज़रत मियां मुहम्मद सिद्दीक़ साहब रज़ियल्लाहु अन्हु के पड़ पोते, हज़रत मियां इमामुद्दीन साहिब सेखवानी रज़ियल्लाहु अन्हु के पोते, हज़रत ख़्वाजा उबैदुल्लाह साहब रज़ियल्लाहु अन्हु के नवासे और हज़रत मौलाना जलालुद्दीन साहिब शमस रज़ियल्लाहु अन्हु के बेटे थे। ये समस्त सहाबा थे। मरहूम मूसी थे। पीछे रहने वालो में दो बेटियां और एक बेटा शामिल हैं। उनकी पत्नी पहले फ़ौत हो गई थीं। अल्लाह तआला उनको, उनके बच्चों को सब्र और हौसला प्रदान फ़रमाए। और मरहूम से मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए। दर्जात बुलंद फ़रमाए। उनके भाई मुनीरुद्दीन शम्स साहिब कहते हैं कि मरहूम बहुत ख़ूबियों के मालिक थे। नमाज़ों के पाबंद थे। बच्चों को हमेशा नमाज़ की नसीहत करते थे। ख़िलाफ़त से बहुत मुहब्बत थी। घर में हमेशा ख़िलाफ़त से जुड़े रहने की बातें होती रहा करती थीं। यहां बीमारी के दिनों में भी पिछले दो वर्ष हुए मुझे मिलने के लिए आए और बावजूद बीमारी के बड़े सब्र और हौसले से और ख़ुशमिज़ाजी से बातें करते रहे। फ़िक्र थी तो अपने बच्चों की। अपनी कोई फ़िक्र नहीं थी। उनके संबंध में सभी का यह कहना है कि हमेशा हर हाल में मुस्कुराते रहना और हर एक के साथ मिल-जुल कर रहना और दुख सुख में साथ देना उनकी ख़ूबीयों में शामिल था। अल्लाह तआला मरहूम से मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाता रहे और दर्जात बुलंद फ़रमाए।

☆ ☆ ☆ ☆

ख़ुत्बः जुमअः

तुम सब मिलकर अल्लाह की रस्सी को मज़बूती से थामे रखना और आपस में फूट न डालना क्योंकि मैं ने अबुल-क़ासिम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से सुना है कि बाहमी सम्पर्क की इस्लाह करना नफ़ल नमाज़ों और रोज़ों से बेहतर है

(हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु)

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के महान ख़लीफ़ा-ए-राशिद और दामाद अबू तुराब,हज़रत अली अलमुर्तज़ा रज़ी अल्लाह तआला अन्हु के प्रशंसनीय गुणों का वर्णन

हज़रत अली रज़ी अल्लाह तआला अन्हु की शहादत के हालात और घटनाओं का वर्णन

امر بالمعروف اور نہی عن المنکر (अच्छी बातों का आदेश देना और बुरी बातों से रोकने) पर सदैव कार्यरत रहो, इस को कभी नहीं छोड़ना अन्यथा तुम में से बुरे तुम्हारे हाकिम बन जाऐंगे।

फिर तुम दुआ करोगे परन्तु तुम्हारी दुआएं क़बूल नहीं होंगी, जो आजकल मुस्लमान देशों का हाल है। दुआ करें कि यह वर्ष जमाअत के लिए, दुनिया के लिए, इन्सानियत के लिए बरकत वाला हो।

ये आफ़तें ख़ुदा तआला की ओर से अपने हुक़ूक़ और कर्तव्यों भूलने और अदा न करने बल्कि अत्याचार में बढ़ने की कारण से आती हैं। कोई बड़ी बात नहीं कि असल हथियारों की जंग भी हो जाए जो निहायत ख़ौफ़नाक जंग होगी। यह वर्ष मुबारकबादों का वर्ष उस वक़्त बनेगा जब हम अपने कर्तव्यों को अदा करने वाले होंगे।

हर अहमदी को ग़ौर करना चाहीए कि उस के सपुर्द एक बहुत बड़ा काम किया गया है दुनिया को इस झंडे के नीचे लाएं जो हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बुलंद किया था।

हर अहमदी मर्द, औरत, जवान, बच्चा, बूढ़ा इस बात को समझते हुए यह अह्द करे कि इस वर्ष मैंने दुनिया में एक इन्क़िलाब पैदा करने के लिए अपनी समस्त प्रतिभाओं को प्रयोग करना है।

आज दुनिया को मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के झंडे के नीचे लाने के लिए यदि कोई काम कर रहा है तो वह केवल अहमदी हैं

हमारा काम है कि दुआओं से अपनी इबादतों को पहले से बढ़ कर सजाएँ और यदि हम यह कर लेंगे तो फिर ही हम कामयाब हैं।

हमारी ख़ुशियां चाहे वह वर्ष के शुरू की हों या ईद की, असल तो उस वक़्त होंगी जब हम दुनिया में हर ओर अल्लाह तआला की तौहीद का झंडा लहराने वाले बनेंगे जिसे लेकर हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम आए थे

अल्लाह तआला हर मुल्क में हर अहमदी को अपनी हिफ़्ज़-ओ-अमान में रखे और यह वर्ष हर अहमदी के लिए, हर इन्सान के लिए रहमतों और बरकतों का वर्ष बन कर आए

नए वर्ष के आरंभ पर मुल्कों के लीडरों और जमाअत अहमदिया के लिए उपदेश

अल-जज़ाएर और पाकिस्तान में अहमदियों के प्रचण्ड विरोध के दृष्टिगत दुआओं की तहरीक

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 1 जनवरी 2021 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ۔ إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

हज़रत अली रज़ी अल्लाह तआला अन्हु का वर्णन चल रहा है। हज़रत मुस्लेह मौऊद हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु की शहादत की पृष्ठभूमि में वर्णन फ़रमाते हैं कि "अभी मामलों पूरी तरह सुलझे नहीं थे कि ख़वारिज के गिरोह ने यह मश्वरा किया कि इस फ़ित्ना को इस तरह दूर करो कि जिस क़दर बड़े आदमी हैं उनको क़तल कर दो। इसलिए उनके दिलेर अर्थात बहादुर लोग जो थे कुछ साहस वाले लोग जो थे यह इक़रार कर के निकले कि उन में से एक हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को, एक हज़रत माविया रज़ियल्लाहु अन्हु को और एक अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हु को एक ही दिन और एक ही वक़्त में क़तल कर देगा। जो हज़रत माविया रज़ियल्लाहु अन्हु की ओर गया था उसने तो हज़रत माविया रज़ियल्लाहु अन्हु पर हमला किया लेकिन उस की तलवार ठीक नहीं लगी और हज़रत मुआविया केवल मामूली घायल हुए। वह व्यक्ति पकड़ा गया और बाद में क़तल किया गया। जो अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हु को मारने गया था वह भी नाकाम रहा क्योंकि वह बीमारी के कारण नमाज़ के लिए नहीं आए थे और जो व्यक्ति उनको नमाज़ पढ़ाने के लिए आया था अर्थात उस वक़्त हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हु की जगह उसने उस को मार दिया। जो अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हु पर हमला करने गया था ख़ुद पकड़ा गया और बाद में मारा गया। जो व्यक्ति हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को मारने के लिए निकला था उसने जबकि आप रज़ियल्लाहु अन्हु सुबह की नमाज़ के लिए खड़े होने लगे आप रज़ियल्लाहु अन्हु पर हमला किया और आप ख़तरनाक तौर पर घायल हुए। आप रज़ियल्लाहु अन्हु पर हमला करते वक़्त उस व्यक्ति ने यह शब्द कहे कि अली रज़ियल्लाहु अन्हु ! तेरा हक़ नहीं कि तेरी हर बात मानी जाया करे बल्कि यह हक़ सिर्फ़ अल्लाह को है।'

(अनवारे ख़िलाफ़त, अनवारुल ऊलूम, भाग 3 पृष्ठ 202)

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु की शहादत की भविष्यवाणी आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाई थी। हज़रत उबैदुल्लाह ने वर्णन किया कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु से फ़रमाया हे अली! क्या तुम जानते हो कि अव्वलीन और आख़रीन में से सबसे बद-बख़्त व्यक्ति कौन है? उन्होंने कहा : अल्लाह और उसका रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सबसे ज़्यादा जानते हैं। इस पर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि पहलों में सबसे बद-बख़्त व्यक्ति हज़रत सालह की ऊंटनी की कौंचें काटने वाला था और हे अली आख़रीन में सबसे बद-बख़्त व्यक्ति होगा जो तुम्हें भाला मारेगा और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उस स्थान की ओर इशारा फ़रमाया जहां आप रज़ियल्लाहु अन्हु को भाला मारा जाएगा

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु की लौंडी उम्मे जाफ़र की रिवायत है कि मैं हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के हाथों पर पानी डाल रही थी कि आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपना सिर उठाया और अपनी दाढ़ी को पकड़ कर उसे नाक तक बुलंद किया और दाढ़ी को सम्बोधित कर के फ़रमाया वाह वाह !तेरे क्या कहने। तुम ज़रूर ख़ून में रंगी जाओगी। फिर जुमआ के दिन आप शहीद कर दिए गए।

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु की शहीद होने की घटना एक जगह इस प्रकार वर्णन हुई है। इब्ने हनफ़ीया रिवायत करते हैं कि मैं और हज़रत हसन और हज़रत हुसैन हमाम में बैठे हुए थे कि हमारे पास इब्ने मल्जम आया। जब वह दाख़िल हुआ तो मानो हसनैन ने उस से नफ़रत का इज़हार किया और कहा कि तेरा यह साहस कि इस तरह यहां हमारे पास आए। मैंने उन दोनों से कहा कि तुम उसे मुँह न लगाओ। कसम से कि यह तुम्हारे ख़िलाफ़ जो कुछ करने का इरादा रखता है वह इस से भी

ज़्यादा ख़ौफ़नाक है। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु पर हमला के वक़्त इब्ने मलजम को क़ैदी बना कर लाया गया तो इब्ने हनफ़ीया ने कहा में तो उसे उस दिन ही अच्छी तरह जान गया था जिस दिन यह हमाम में हमारे पास आया था। इस पर हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि यह क़ैदी है। इस लिए उस की अच्छी तरह मेहमान नवाज़ी करो और उसे इज़्ज़त के साथ ठहराओं। यदि मैं ज़िन्दा रहा तो या तो उसे क़त्ल करूँगा या उसे माफ़ करूँगा और यदि मैं मर गया तो उसे मेरा बदला लेने में क़त्ल कर देना और सीमा से न बढ़ना। नि:सन्देह अल्लाह सीमा से बढ़ने वालों को पसन्द करता।

हज़रत इब्ने अब्बास के आज़ाद किए ग़ुलाम कुसम से रिवायत है कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने मेरे बड़े बेटे को अपनी वसीयत में लिखा कि इस अर्थात इब्ने मुल्जम के पेट और गुप्तांग में भाला न मारा जाए। लोगों ने वर्णन किया कि ख़वारिज में से तीन आदमियों को चुना गया था अब्दुल रहमान बिन मुल्जम मुरादी जो क़बीला हीमेयर से था और उस की गिनती क़बीला मुराद में होती थी जो किन्द: के ख़ानदान बनू हब्ला का हलीफ़ था और बकीर बिन अब्दुल्लाह तमीमी और अम्र बिन बुकीर तमीमी। ये तीनों मक्का में जमा हुए और उन्होंने पुख़्ता वादे किए कि वे तीन आदमियों अर्थात हज़रत अली बिन अबू तालिब रज़ियल्लाहु अन्हु, हज़रत मुआविया बिन अबू सुफ़ियान रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हु को ज़रूर क़तल करेंगे, जैसा कि पहले वर्णन हो चुका है। ये नाम इन तीन क़त्ल करने वालों के थे जिस घटना का हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी अल्लाहु तआला अन्हु ने शुरू में वर्णन किया था, और लोगों को उनसे निजात दिलाएंगे। अब्दुर्रहमान बिन मल्जम ने कहा मैं अली बिन अबू तालिब के क़तल का ज़िम्मा लेता हूँ। बकीर ने कहा मैं मुआविया के क़तल का ज़िम्मा लेता हूँ और अम्र बिन बुकैर ने कहा मैं तुम्हें अम्र बिन आस से निजात दिलाऊँगा। इसके बाद उन्होंने इस बात पर आपस में पक्का वादा किया और एक दूसरे को यक़ीन दिलाया कि वे अपने निश्चित किए व्यक्ति को क़तल करने के अह्द से पीछे नहीं हटेंगे और वे उस तक पहुँचेगा यहां तक कि उसे क़तल कर दे या उस राह में अपनी जान दे दें अर्थात इस हद तक वे जाऐंगे या तो उन तीनों को क़तल कर देंगे या अपनी जान दे देंगे, वापस नहीं आएँगे। उन्होंने आपस में रमज़ान की सत्रहवीं रात इस उद्देश्य के लिए निर्धारित की। फिर उनमें से हर व्यक्ति उस शहर की ओर रवाना हो गया जिसमें उसका उद्देशित व्यक्ति रहता था अर्थात जिसे उसने क़तल करना था। अब्दुर्रहमान बिन मल्जम कूफ़ा आया और अपने ख़ारिजी दोस्तों से मिला परन्तु उनसे अपने इरादा को गुप्त रखा। वह उन्हें मिलने जाता और वह उसे मिलने आते रहे। उसने एक दिन तय्मुर्रियाब क़बीला की एक जमाअत देखी जिसमें एक औरत कताम बिन्ते शिजना बिन अदी थी। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने जंगे नहरवान में उसके बाप और भाई को क़तल किया था। वह औरत इब्ने मल्जम को पसन्द आई तो उसने उसे निकाह का संदेश भेजा। उसने कहा में उस वक़्त तक तुझ से निकाह नहीं करूँगी जब तक तू मुझ से एक वादा न करे। इब्ने मल्जम ने कहा कि तू जो मांगेगी में वह तुझे दूँगा। उसने कहा कि तीन हज़ार और अली बिन अबी तालिब का क़तल। दिरहम तीन हज़ार होंगे और अली बिन अबू तालिब का क़तल। उसने कहा कि अल्लाह की क़सम! मैं तो इस शहर में अली बिन अबू तालिब को क़तल करने के वास्ते ही आया हूँ और मैं तुझे वह ज़रूर दूँगा जो तू ने मांगा। फिर इब्ने मल्जम, शबी बिन बजराह अश्जी से मिला और उसे अपने इरादे से अवगत किया और अपने साथ रहने का कहा। शबी ने उसकी यह बात मान ली। अब्दुर्रहमान बिन मल्जम ने वह रात जिसकी सुबह को उसने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को शहीद करने का इरादा किया था अशअस बिन कैद किन्दी की मस्जिद में उस से छुप कर बात करते हुए गुज़ारी। फ़ज्र के होने से पूर्व अशअस ने उसे कहा, उठो सुबह हो गई है। अब्दुर्रहमान बिन मल्जम और शबी बिन बजर खड़े हो गए और अपनी तलवारें लेकर उस थड़े के आमने सामने आकर बैठ गए जहां से हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु निकलते थे। हज़रत हसन बिन अली रज़ियल्लाहु अन्हु वर्णन करते हैं कि मैं सवेरे हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के पास आकर बैठ गया। उस वक़्त हज़रत अली फ़रमाया : मैं रात-भर अपने घर वालों को जगाता रहा फिर बैठे-बैठे मेरी आँखों पर नींद छा गई तो स्वप्न में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को देखा। मैंने निवेदन किया हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ! अर्थात हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं मैंने निवेदन किया हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मुझे आपकी उम्मत की ओर से टेढ़े पन और बहुत झगड़े का सामना है। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : उनके ख़िलाफ़ अल्लाह तआला से दुआ करो। मैंने कहा हे अल्लाह मुझे उनके बदले में वह दे जो उनसे बेहतर हो और उनको मेरे बदले वह दे जो मुझसे बुरा हो। इतने में इब्ने नबाह मोअज़्ज़न आए और कहा कि नमाज़ का वक़्त हो गया है। हज़रत हसन रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि मैंने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु का हाथ पकड़ा तो वह खड़े हो कर चलने लगे। इब्ने नबाह आप रज़ियल्लाहु अन्हु के आगे थे और मैं पीछे। जब आप रज़ियल्लाहु अन्हु दरवाज़े से बाहर निकले तो आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने आवाज़ दी कि लोगो ! नमाज़, नमाज़। सलात, सलात की आवाज़ देते थे। आप रज़ियल्लाहु अन्हु हर रोज़ इसी तरह किया करते थे। जब आप निकलते तो आपके हाथ में कोड़ा होता था और आप रज़ियल्लाहु अन्हु उसे दरवाज़ों पर मार के लोगों को जगाया करते थे। ठीक उस वक़्त वे दोनों हमला-आवर आप रज़ियल्लाहु अन्हु के सामने निकल आए। अपनी आँखों से देखने वाले गवाहों में से कुछ का कहना है कि मैंने तलवार की चमक देखी और एक व्यक्ति को यह कहते हुए सुना कि हे अली ! हुक्म अल्लाह के लिए है न कि तुम्हारे लिए। फिर मैं ने दूसरी तलवार देखी। फिर दोनों ने मिलकर वार किया। अब्दुर्रहमान बिन मल्जम की तलवार हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु की पेशानी से सिर की चोटी तक पड़ी और दिमाग़ तक पहुंच गई जबकि शबीब की तलवार दरवाज़े की लकड़ी पर जा लगी। मैंने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को यह फ़रमाते हुए सुना कि यह आदमी तुमसे भागने न पाए। लोग हर ओर से उन पर टूट पड़े परन्तु शबी बच कर निकल गया जबकि अब्दुर्रहमान बिन मल्जम गिरफ़्तार कर लिया गया और उसे हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के पास पहुंचा दिया गया। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि उसे अच्छा खाना खिलाओ और नरम बिस्तर दो। यदि मैं ज़िन्दा रहा तो मैं इस का ख़ून माफ़ करने या बदला लेने का ज़्यादा हक़दार हूँगा और यदि मैं फ़ौत हो गया तो उसे भी क़तल कर के मेरे साथ मिला देना। मैं ख़ुदा के पास इस से लड़ूंगा।

(अत्तब्कातुल कुबरा ले इब्ने सअद ,भाग 3 पृष्ठ 25से 27 दारुल क़ुतुब अल्इल्मिया बेरूत 1990 ई)

अर्थात फिर आप रज़ियल्लाहु अन्हु यह विषय अल्लाह के समक्ष पेश करेंगे

जब हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु की वफ़ात का वक़्त क़रीब आया तो आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने वसीयत की। आप की वसीयत थी।

बिस्मिल्लाह हिर्रहमानिर्रहीम। यह वह वसीयत है जो अली बिन अबी तालिब ने की है। अली ने यह वसीयत की है कि वह गवाही देता है कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई उपास्य नहीं। वह अकेला है। उस का कोई साथी नहीं और यह कि मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उस के बंदे और रसूल हैं जिन्हें अल्लाह ने हिदायत और दीन हक़ देकर भेजा था ताकि वह इस दीन को समस्त धर्मों पर विजय कर दें चाहे यह बात मुशरिकीन को बुरी ही लगे। नि:सन्देह मेरी नमाज़ और मेरी क़ुर्बानी और मेरी ज़िंदगी और मेरी मौत सब अल्लाह के लिए है। उस का कोई साथी नहीं और मुझे इसी का हुक्म दिया गया है और मैं आज्ञाकारियों में से हूँ। इस के बाद हे हस्न, अपने बेटे को सम्बोधित करके फ़रमाया कि मैं तुझे और अपनी समस्त औलाद और अपने समस्त घर वालों को अल्लाह तआला से डरते रहने की वसीयत करता हूँ जो तुम्हारा पालनहार है और यह कि तुम इस्लाम में ही दुनिया से विदा होना। तुम सब मिलकर अल्लाह की रस्सी को मजबूती से थामे रखना और आपस में फूट ना डालना क्योंकि मैंने अबुल क़ासिम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से सुना है कि आपसी संबंधों की इस्लाह करना नफ़ल नमाज़ों और रोज़ों से बेहतर है। (यह बड़ी महत्त्वपूर्ण बात है। उसे याद रखना चाहिए कि आपसी संबंध की इस्लाह करना नफ़ल नमाज़ों और रोज़ों से बेहतर है। आपस में सुलह सफ़ाई से रहना इस्लाह करना और करवाना यह बहुत बड़ा काम है) तुम अपने रिश्तेदारों का ख़्याल रखना और उनके साथ हुस्ने सलूक करना इस से अल्लाह तआला तुम पर हिसाब आसान फ़र्मा देगा। यतीमों के मामलों में अल्लाह से डरना। न तो उन्हें इस बात पर मजबूर करना कि वे अपनी ज़बान से तुम से सहायता माँगा करें और न इस बात पर कि वे तुम्हारे सामने ज़ाए हो जाएं। पड़ोसियों के बारे में अल्लाह से डरो क्योंकि यह तुम्हारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वसीयत है। आप हमेशा पड़ोसियों के हुक़ूक़ की वसीयत करते रहे यहाँ तक कि हमें गुमान हुआ कि कहीं आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पड़ोसियों को वारिस ही न बना दें। क़ुरआन के मामले में अल्लाह से डरो। क़ुरआन पर अनुकरण करने में कहीं दूसरे तुम पर प्राथमिकता न ले जाएं। नमाज़ के मामले में अल्लाह तआला से डरो क्योंकि यह तुम्हारे धर्म का सतून है। अपने रब के घर के बारे में अल्लाह तआला से डरो और ज़िन्दगी भर उसे ख़ाली न होने दो क्योंकि यदि वह ख़ाली छोड़ दिया गया तो उस जैसा कोई घर तुम्हें नहीं मिलेगा। और अल्लाह के रास्ते में जिहाद के मामले में

अल्लाह से डरो और अपनी जानों और मालों से जिहाद करो। और ज़कात के बारे में अल्लाह से डरो क्योंकि यह रब के ग़ुस्सा को बुझाती है। और अपने नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ज़िम्मेदारी के बारे में अल्लाह से डरो। तुम्हारे मध्य किसी पर अत्याचार न किया जाए। और अपने नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सहाबा के बारह में अल्लाह से डरो क्योंकि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनके हक़ में वसीयत फ़रमाई है। और गरीबों और असहायों के बारे में भी अल्लाह से डरो और उन्हें अपने सामान व्यवसाय में शामिल करो। और उनके बारे में अल्लाह से डरो जिनके मालिक तुम्हारे दाहने हाथ हुए हैं अर्थात जिनकी ज़िम्मेवारी तुम्हारे सपुर्द की गई है उनके मामलों के बारे में भी अल्लाह से डरो। नमाज़ की हिफ़ाज़त करो। नमाज़ की हिफ़ाज़त करो। फ़रमाया अल्लाह तआला के लिए किसी निन्दा करने वाले का ख़ौफ़ मत करो। अल्लाह तआला की रज़ा सामने चाहिए। (बहुत अहम चीज़ है वह ख़ुदा तुम्हारे लिए काफ़ी होगा उस व्यक्ति के ख़िलाफ़ जो तुम्हें कोई नुक़्सान पहुंचाना चाहे और तुम्हारे ख़िलाफ़ बग़ावत करे। और लोगों से नेक बात कहो जैसा कि अल्लाह तआला ने तुम्हें हुक्म दिया है। अच्छी बातों का आदेश देने और बुरी बातों से रुकने का अन्यथा तुम में से बुरे तुम्हारे हाकिम बन जाऐंगे बड़ी अहम बात है अच्छी बातों का आदेश देने और बुरी बातों से रुकने का नेक कामों के कहना का और बुरे कामों से रोकना इस पर हमेशा पाबन्द रहो। इस को कभी ना छोड़ना अन्यथा तुम में से बुरे तुम्हारे हाकिम बन जाऐंगे फिर तुम दुआ करोगे परन्तु तुम्हारी दुआएं क़बूल नहीं होंगी। (जो आजकल मुस्लमान मुल्कों का हाल है) एक दूसरे से राबता और सम्पर्क रखों और तकल्लुफ़ात के बिना एक दूसरे के काम आओ। ख़बरदार! एक दूसरे से शत्रुता न बढ़ाओ, न मेल मिलाप बन्द करो और न फूट डालो और नेकी और तक़्वा में आपस में सहयोग करो और गुनाह और सरकशी में सहयोग न करो। अल्लाह तआला का तक़्वा धारण करो। निसन्देह अल्लाह तआला सख़्त सज़ा देने वाला है। हे अहले बैत! के सम्मानित लोगो अल्लाह तआला तुम्हारी सुरक्षा करे और तुम्हारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तुम्हारे द्वारा हिफ़ाज़त करे अर्थात तुम्हारे नेक आचरण के द्वारा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मानो हमेशा ज़िंदा रहें। मैं तुम्हें अल्लाह के सपुर्द करता हूँ और तुम पर सलाम और अल्लाह की रहमत भेजता हूँ।

(तारीख़ तिबरी, भाग 3 पृष्ठ 158 सन् 40 दारुल क़ुतुब अल्इल्मिया बेरूत 1987 ई)

अबू सिनान का वर्णन है कि जब हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु घायल थे तो वह उनकी इयादत के लिए गए। रावी कहते हैं कि मैंने अर्ज़ की कि हे अमीरुल मौमेनीन आपकी इस घायल हालत पर हमें बहुत कष्ट हो रहा है। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया लेकिन ख़ुदा की क़सम मुझे अपने ऊपर कोई कष्ट नहीं है क्योंकि सच्चे और सच्चा करने वाले रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुझे बता दिया था कि तुम्हें एस उस जगह पर घाव आएँगे और आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपनी कनपटियों की ओर इशारा किया फिर वहां से ख़ून बहेगा यहाँ तक कि तेरी दाढ़ी रंगीन हो जाएगी और ऐसा करने वाला इस उम्मत का सबसे बड़ा बद-बख़्त व्यक्ति होगा जैसा कि ऊंटनी की कौंचें काटने वाला क़ौम स्मूद का सबसे बड़ा बद-बख़्त था।

(अल्मुस्तद्र्क अस्सहीहैन, भाग 3 पृष्ठ 327 كتاب معرفته الصحابة ذكر اسلام امير المومنين على, हदीस नंबर4648 प्रकाशित दारुल फ़िक्र 2002 ई)

एक रिवायत है कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपने क़ातिल इब्ने मल्जम के बारे में फ़रमाया उस को बिठाओ। यदि मैं मर गया तो उसे क़तल कर देना परन्तु उस का (मुसला)कान नाक इत्यादी ना काटना और यदि मैं ज़िंदा रहा तो मैं ख़ुद उस की माफ़ी या बदला का फ़ैसला करूँगा।

(अल् इस्तेयाब भाग 3 पृष्ठ 219 दारुल क़ुतुब अल्इल्मिया बेरूत 2002)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी अल्लाहु तआला अन्हु इस बात का वर्णन करते हुए इस प्रकर फ़रमाते हैं कि "तारीख़ों में लिखा है हज़रत अली रज़ी पर एक व्यक्ति ने ख़ंजर के साथ हमला किया और आप का पेट काट दिया वह पकड़ा गया।" बहरहाल आपने यह लिखा है कि पेट काट दिया।सिर का घाव भी था। शायद पेट पर भी घाव हुआ हो या वैसे ही आपका ख़्याल था या मुहावरा के रूप में बोला हो। क्योंकि अधिकतर रिवायतें बहरहाल सिर के घाव की आती हैं। वह पकड़ा गया "तो सहाबा ने आपसे पूछा कि हम उस के साथ क्या सुलूक करें। आपने हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु अन्हु को बुलवाया और वसीयत की कि यदि मैं मर जाऊं तो मेरी जान के बदले उस की जान ले ली जाए लेकिन यदि मैं बच जाऊं तो फिर उसे क़तल न किया जाए।''

(ख़ुत्बाते महमूद, भाग 16 पृष्ठ 428)

अम्र ज़ी मुर वर्णन करते हैं कि जब हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को तलवार के घाव आए तो मैं आप रज़ियल्लाहु अन्हु की सेवा में हाज़िर हुआ। आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपना सिर लपेटा हुआ था। मैंने अर्ज़ किया हे अमीर-मोमिनीन! मुझे अपना घाव दिखाएंगे। आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने घाव से कपड़ा खोला तो मैं ने अर्ज़ किया हल्का सा घाव है और कुछ नहीं है। फ़रमाया : मैं तुम लोगों से जुदा होने वाला हूँ। इस पर आपकी साहबज़ादी उम्मे कुलसूम पर्दे के पीछे से रो पड़ी। आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने उसे फ़रमाया चुप हो जाओ। यदि तुम वह देख लो जो मैं देख रहा हूँ तो न रोओ। मैंने अर्ज़ की कि हे अमीरुल मौमेनीन !आप क्या देख रहे हैं? फ़रमाया यह फ़रिश्तों और नबियों के वफ़्द हैं और यह मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हैं जो फ़र्मा रहे हैं (अर्थात एक नज़ारा मैं देख रहा हूँ कि फ़रिश्तों और नबियों के वफ़्द हैं, मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम भी वहां हैं । आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम फ़र्मा रहे हैं) कि अली! ख़ुश हो जाओ क्योंकि जिस ओर तुम जा रहे हो वह इस से बेहतर है जिसमें तुम मौजूद हो। एक रिवायत में है कि जब हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु अपनी वसीयत से फ़ारिग़ हुए तो फ़रमाया मैं आप सबको अस्सलामु अलैकुम वरहमतुल्लाह वबरकातहो कहता हूँ। इसके बाद कोई बात नहीं की अतिरिक्त ला-इलाह इलल्लाह के कलिमा के, यहां तक कि आपकी रूह क़ब्ज़ हो गई।

(उसोदुल ग़ाबा फी मअरेफतुल सहाबा ले इब्ने असीर,भाग 4 पृष्ठ 114-115 वर्णन अली बिन अबी तालिब, दारुल क़ुतुब अल्इल्मिया बेरूत 2003 ई)

जब हज़रत अली बिन अबू तालिब रज़ियल्लाहु अन्हु की वफ़ात हुई तो हज़रत हसन बिन अली रज़ियल्लाहु अन्हु मंच पर खड़े हुए और फ़रमाया हे लोगो आज की रात एक ऐसे व्यक्ति की वफ़ात हुई है कि न इस से पहले लोग उस से सबक़त ले जा सके और न बाद में आने वाले उस का स्थान पा सकेंगे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जब उसे किसी मुहिम पर भेजते तो जिब्राईल उस के दाएं ओर और मीकाईल उस के बाएंई ओर होते थे और वह वापस न लौटता था जब तक कि अल्लाह तआला उस के हाथ पर फ़तह न प्रदान कर देता था। उसने केवल सात सौ दिरहम विरासत छोड़ी है। उस का इरादा था कि वह इस रक़म से ग़ुलाम ख़रीदे और उस की रूह उसी रात को क़ब्ज़ की गई जिस रात को हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की रूह का रफ़ा हुआ था अर्थात सत्ताईस रमज़ान उल-मुबारक की रात। एक और रिवायत में है हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु की शहादत की तारीख़ सत्रहवीं रमज़ान की रात सन चालीस हिज्री वर्णन हुई है। यह चालीस हिज्री का वर्ष था और आपकी ख़िलाफ़त का ज़माना चार वर्ष साढ़े आठ महीने रहा।

(अत्तबकातुल कुबरा ले इब्ने साअद,भाग 3 पृष्ठ 28 वर्णन अली इब्ने`अबी तालिब, दारुल क़ुतुब अल्इल्मिया बेरूत 1990 ई) (अल्साअबा फ़ी तमीईज़ सहाबा ले इब्ने हिज्र असकलानी, भाग 4 पृष्ठ 468 वर्णन अली बिन अबी तालिब, दारुल क़ुतुब अल्इल्मिया बेरूत 2005 ई)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि अल्लाहो तआला अन्हु इस घटना को वर्णन फ़रमाते हैं। तबक़ात इब्ने सअद की भाग तीन में हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु की वफ़ात के हालात में हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत की गई है कि आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि हे लोगो ! आज वह व्यक्ति फ़ौत हुआ है कि उसकी कुछ बातों को न पहले पहुंचे और न बाद को आने वाले पहुँचेंगे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उसे जंग के लिए भेजते थे तो जिब्राईल उसके दाएं ओर होते थे और मीकाईल बाएं ओर। अत: वह बिना विजय प्राप्त किए वापस नहीं होता था। बिना विजय प्राप्त किए वापस नहीं होता था और उसने केवल सात सौ दिरहम अपना तरका छोड़ा है जिस से उस का इरादा था कि एक ग़ुलाम ख़रीदे और वह उस रात को फ़ौत हुआ है जिस रात ईसा बिन मर्यम की रूह आसमान की ओर उठाई गई थी अर्थात रमज़ान की सत्ताईसवीं तारीख़ को।

(उद्धरित दाअवतुल अमीर, अनवारुल ऊलूम भाग 7 पृष्ठ 348)

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को उनके दोनों बेटों और हज़रत अबदुल्लाह बिन जाफ़र ने ग़ुसल दिया और आप रज़ियल्लाहु अन्हु के बेटे हज़रत हसन रज़ियल्लाहु अन्हु ने नमाज़ जनाज़ा पढ़ाई और नमाज़ जनाज़ा में चार तकबीरात कहीं। आपको तीन कपड़ों का कफ़न दिया गया जिसमें क़मीज़ नहीं थी। आपकी तदफ़ीन सहरी (सुबह) के समय हुई। कहा जाता है कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के पास कुछ मुतबर्रिक मुश्क थी जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पवित्र शरीर को लगाए गए मुश्क से बची थी और हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु की वसीयत थी कि वह मुश्क आपकी लाश को लगाया जाए।

आप रज़ियल्लाहु अन्हु की उम्र में मतभेद पाया जाता है। कुछ ने कहा आप की उम्र 57 वर्ष थी, कुछ के निकट 58 वर्ष थी, कुछ के निकट 65 वर्ष थी, कुछ के निकट 63 वर्ष थी। जबकि अधिकतर के निकट 63 वर्ष वाली रिवायत अधिक सही थी।

(उसोदुल ग़ाबा फी मअरेफतुल सहाबा लेइब्ने असीर, भाग 4 पृष्ठ 115 वर्णन

अली बिन अबी तालिब, दारुल क़ुतुब अल्इल्मिया बेरूत 2003 ई)

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु का मज़ार कहाँ स्थित है? इस बारे में भी प्रश्न उठता है। इस के बारे में इतिहास की पुस्तकों में विभिन्न रिवायतें मिलती हैं जो इस प्रकार हैं। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को रात के समय कूफ़ा में दफ़न किया गया और उनकी तद्फ़ीन को छुपा कर रखा गया। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को कूफ़ा की जामा मस्जिद में दफ़न किया गया। हज़रत इमाम हसन और इमाम हुसैन रज़ी अल्लाह अन्हुमा ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु की लाश को मदीना स्थानांतरित किया और हज़रत फ़ातेमह की क़ब्र के पास बक़ीअ में दफ़न किया। एक रिवायत यह है कि जब उन दोनों ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु की लाश को एक संदूक़ में डाल कर ऊंट पर रखा तो ऊंट गुम हो गया। उस ऊंट को तैय क़बीला ने पकड़ा। वह इस संदूक़ को माल समझ रहे थे। जब उन्होंने देखा कि संदूक़ में लाश है तो वह इस को पहचान नहीं सके और उन्होंने इस लाश को संदूक़ सहित दफ़न कर दिया और कोई नहीं जानता कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु की क़ब्र कहाँ है। फिर एक रिवायत है कि हज़रत हसन ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को कूफ़ा में जादाह बिन हुबैर की ऑल के किसी हुजरे में दफ़न किया था। कहा जाता है कि जादाह हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु का भांजा था

इमाम जाफ़र सादिक़ कहते हैं कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु का रात के वक़्त जनाज़ा पढ़ा गया और कूफ़ा में उनकी तदफ़ीन हुई और उनकी क़ब्र के स्थान को गुप्त रखा गया जबकि वह क़सीर इमारत के पास था। एक दूसरी रिवायत यह है कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु की वफ़ात के बाद हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु का जनाज़ा पढ़ाया और कूफ़ा के बाहर हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु की तदफ़ीन की गई और उनकी क़ब्र को इस ख़ौफ़ से छुपा रखा गया कि ख़वारिज इत्यादि उनकी और क़ब्र का अपमान न करें। कुछ शीया कहते हैं कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु का मज़ार नजफ़ में है, इस स्थान पर जिसको आजकल मशहदुन्नजफ़ कहते हैं। एक रिवायत के अनुसार कूफ़ा में हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को शहीद किया गया जबकि आपकी क़ब्र के बारे में मालूम नहीं कि वह कहाँ है। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु की वफ़ात के बाद हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु का जनाज़ा पढ़ाया और कूफ़ा के दारुल इमारह में अली रज़ियल्लाहु अन्हु की तदफ़ीन की गई इस भय से कि ख़वारिज उनकी लाश का अपमान न करें।

अल्लामा इब्ने असीर लिखते हैं कि यह रिवायत मशहूर है और जिसने यह कहा कि उन्हें जानवर पर रखा गया और वह उसे ले गया और कोई न जान सका कि वह जानवर कहाँ चला गया तो यह सही नहीं है और उसने इस बारे में तकल्लुफ़ से काम लिया है जिसका उस को कोई ज्ञात नहीं और न ही अक़्ल और न ही शरीयत उस का कारण प्रस्तुत करती है और जो अधिकतर जाहिल रवाफ़िज़ यह आस्था रखते हैं कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु का मज़ार मशहदुन्नजफ़ में है तो इस बात की कोई दलील नहीं है और न ही इस में कोई हक़ीक़त है बल्कि कहा जाता है कि वहां तो हज़रत मूगेराह बिन शोबाह की क़ब्र है।

(अल् बदायाह वन्नाहाया,भाग 4 हिस्सा 7 पृष्ठ 316-317 सफा मकतला रज़ी अल्लाह अन्हु, दारुल क़ुतुब अल्इल्मिया बेरूत 2001 ई)(तारीख़ तिबरी,भाग 3 पृष्ठ 477 मतबूआ दारुल क़ुतुब अल्इल्मिया बेरूत 1987 ई)

इमाम इब्ने तय्यमा कहते हैं कि नजफ़ में महद के नाम से जो स्थान है अहले इल्म इस पर सहमत हैं कि वह हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु की क़ब्र का स्थान नहीं बल्कि वह हज़रत मुग़ीरह बिन शोबह की क़ब्र है। अहले बैअत, शीया और अन्य मुस्लमानों ने कूफ़ा में उनकी हुकूमत और तीन सौ वर्ष से ज़्यादा बीत जाने के बावजूद कभी इस बात का वर्णन नहीं किया कि यह हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु की क़ब्र है। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु की शहादत के तीन सौ वर्ष बाद इस जगह को मशहद अली का नाम दिया गया है इसलिए यह रिवायत बिल्कुल ग़लत है कि यह हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु की क़ब्र है।

(उद्धरित विश्वकोश, जीवनी सहाबा किराम, भाग1 पृष्ठ 436 सय्यदना अली बिन अबी तालिब, दारुस्सलाम रियाज़ 1438 हि)

तथा अल्लामा इब्ने जौज़ी ने अपनी तारीख़ की किताब में हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के मज़ार के संबंध में विभिन्न रिवायतें जिन्हें ऊपर वर्णन कर दिया गया है को वर्णन करने के बाद लिखा है कि-وَاللّٰهُ اَعْلَمُ اَیُّ الْاَقْوَالِ اَصَحُّ-अल्लाह बेहतर जानता है कि कौन सा कथन अधिक सही और ठीक है।(अल्मुन्ताज़िम, भाग 5 पृष्ठ 178 सन् 40 फ़सल, दारुल क़ुतुब अल्इल्मिया बेरूत 2012 ई)

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु की जो शादियां और औलाद हैं उनका वर्णन इस तरह मिलता है कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने विभिन्न वक़्तों में आठ शादियां कीं जिनके नाम यह हैं। फ़ातिमा बिंते (पुत्री) रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम, खोला बिंते जाफ़र बिन केस, लैला बिंते मसऊद बिन ख़ालिद, उम्मे बनीन बिंते हिज़ाम बिन ख़ालिद, असमा बिंत उमेस, साहबा उम्मे अबीब बिंत रबीअह, उमामह बिंते अब्बू आस बिन रबीया। यह आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की साहबज़ादी हज़रत ज़ैनब की बेटी और नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की नवासी थीं। उम्मे सईद पुत्री उर्व: बिन मसऊद सक़फ़ी। उनसे अल्लाह तआला ने उनको कसीर औलाद प्रदान की जिनकी संख्या तीस से अधिक बनती है। चौदह लड़के और अनीस लड़कीयां। आपकी नसल हज़रत हसन, हज़रत हुसैन, मुहम्मद बिन हनफ़ीयह, अब्बास बिन किलाबीयाह और अम्र बिन तग्लाबीयाह से चली।

(अत्तबकातुल कुबरा,भाग 3 पृष्ठ 14 दारुल क़ुतुब अल्इल्मिया बेरूत 1990ई) (सय्यदना अली बिन अबी तालिब डाक्टर अली मुहम्मद सलाबी अनुवादक, पृष्ठ 82-83 फ़ुरकान ट्रस्ट ख़ान गढ़ ज़िला मुज़फ़्फ़र गढ़ पाकिस्तान)

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु की विशेषताएँ के बारे में लिखा जाता है कि हज़रत इब्ने अब्बास वर्णन करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया। أَنَا مَدِيْنَةُ الْعِلْمِ وَعَلِيٌّ بَابُهَا، فَمَنْ أَرَادَ الْمَدِينَةَ، فَلْيَأْتِ الْبَابَ कि मैं ज्ञान का शहर हूँ और अली उस का दरवाज़ा है जो इस शहर का इरादा करे उस को चाहिए कि वह उस के दरवाज़े पर आए।

(अल्मुस्तद्रक अस्सहीहैन,भाग 3 पृष्ठ 339 किताब मारेफ़ सहाब वर्णन इस्लाम अमीरुल मौमेनीन हदीस 4695 दारुल फ़िक्र 2002 ई) हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी अल्लाहु तआला अन्हु इस बात को वर्णन फ़रमाते हैं कि हज़रत अली रज़ी अल्लाह तआला अन्हु ने एक बार फ़रमाया कि सहाबा में से ज़्यादा बहादुर और दिलेर हज़रत अबूबकर रज़ी अल्लाह तआला अन्हु थे और फिर उन्होंने कहा कि जंगे बदर में जब रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के लिए एक अलग चबूतरा बनाया गया तो उस वक़्त प्रशन पैदा हुआ कि आज रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हिफ़ाज़त का काम किस के सपुर्द किया जाए? इस पर हज़रत अबूबकर रज़ी अल्लाह तआला अन्हु तुरन्त नंगी तलवार लेकर खड़े हो गए और उन्होंने इस इंतिहाई ख़तरे के अवसर पर निहायत दिलेरी से आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की हिफ़ाज़त का फ़र्ज़ अदा किया। इसी तरह हदीसों में आता है कि रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक बार फ़रमाया أَنَا مَدِيْنَةُ الْعِلْمِ وَعَلِيٌّ بَابُهَا، अर्थात कि मैं ज्ञान का शहर हूँ और अली उस का दरवाज़ा है। अत: हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को भी रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उल्मा में से क़रार दिया है परन्तु ख़ैबर की जंग में सबसे नाज़ुक वक़्त में इस्लाम का झंडा रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने आप रज़ियल्लाहु अन्हु ही के हाथ में दिया था जिससे मालूम होता है कि रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के वक़्त उल्मा बुज़दिल नहीं थे बल्कि सबसे ज़्यादा बहादुर थे।

(उद्धरित तफ़सीरे कबीर, भाग 7 पृष्ठ 364-365)

यह वर्णन आप उल्मा की बहादुरी का फ़र्मा रहे हैं। इस विषय में यह घटना वर्णन फ़रमाई।

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु वर्णन करते हैं कि एक वक़्त था कि मैं अपने पेट पर भूख की कारण से पत्थर बाँधता था और आज मेरा सदक़ा अर्थात ज़कात चार हज़ार दीनार तक पहुंच चुका है। एक रिवायत में चालीस हज़ार दीनार का वर्णन है। अब्बू बहर अपने एक उस्ताद से रिवायत करते हैं कि उन्होंने कहा कि मैंने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को मोटी तह बन्द पहने देखा। आपने फ़रमाया मैं ने यह पाँच दिरहम में ख़रीदी है जो मुझे इस पर एक दिरहम का लाभ देगा मैं उसे यह बेच दूँगा। रावी कहते हैं कि मैंने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के पास कुछ दिरहम की थैली देखी तो आपने कहा यह यम्बू की जायदाद में से हमारा बचने वाला नुफ़्क़ा है। यम्बू

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अपनी इबादतों को भी विशेष करें और दुनिया को भी इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से अवगत कराएं।"

(ख़ुत्बा जुम्अः 17 मई 2019)

तालिबे दुआ

KHALEEL AHMAD

S/O LATE HAJI BASHEER AHMAD SB AND FAMILY,
JAMAAT AHMADIYYA BIJUPURA, SAHARANPUR (U.P)

एक बस्ती है जो मदीना से सात मंज़िल दूर थी, समुन्द्र के किनारे की ओर स्थित है। आपकी अँगूठी पर, हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु की अँगूठी पर अलल्लाहु मालिक लिखा था कि अल्लाह ही बादशाह है। (उसोदुल ग़ाबा फी मअरेफतुल सहाबा लेइब्ने असीर,भाग 4 पृष्ठ 97 वर्णन अली बिन अबी तालिब, दारुल क़ुतुब अल्इल्मिया लुबनान 2003 ई)(अल्तब्कातुल कुबरा ले इब्ने सअद, भाग 3 पृष्ठ 22 वर्णन अली इब्ने अबी तालिब, दारुल क़ुतुब अल्इल्मिया बेरूत 1990 ई)(लुग़ातुल हदीस, भाग 4 पृष्ठ 613 नुमानी कुतुब ख़ाना लाहौर 2005 ई)

जुमेअ बिन उमेंर वर्णन करते हैं कि मैं हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा के पास अपनी फूफी के साथ आया तो उन्होंने सवाल किया कि लोगों में से सबसे ज़्यादा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को कौन प्रिय था? हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने फ़रमाया फ़ातमाह रज़ियल्लाहु अन्हा। फिर सवाल किया गया कि मर्दों में से? तो आपने फ़रमाया उनके पति हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु।

(सुंन अलतिरमेज़ी, किताबुल मनाकिब,بَابُ مَا جَاءَ فِی فَضْلِ فَاطِمَۃَ رَضِیَ اللہُ عَنْهَا हदीस 3874)

हज़रत सअलबा बिन अबू मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु वर्णन करते हैं कि हज़रत साअद बिन ऊबादाह रज़ियल्लाहु अन्हु हर मैदाने जंग में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ओर से झंडा लहराने वाले होते थे परन्तु जब लड़ाई का वक़्त आता था तो हज़रत अली बिन अबूतालिब रज़ियल्लाहु अन्हु झंडा थाम लेते थे।

(उसोदुल ग़ाबा फी मअरेफतुल सहाबा लेइब्ने असीर, भाग 4 पृष्ठ 93 वर्णन अली बिन अबी तालिब, दारुल फ़िक्र प्रकाशक बेरूत 2003 ई)

क़बीला सक़ीफ़ के एक व्यक्ति ने वर्णन किया कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने मुझे सबूर इलाक़े का आमिल निर्धारित किया। सबूर फ़ारस में एक इलाक़ा है जो शीराज़ से कोई तक़रीबन 75 मील की दूरी पर है और फ़रमाया किसी व्यक्ति को भी एक दिरहम टैक्स के कारण से कोड़ा नहीं मारना और लोगों के रिज़्क़ के पीछे नहीं पड़ना और न सर्दीयों या गरमीयों में उनके कपड़ों के पीछे पड़ना। इस तरह टैक्स नहीं लेना कि कपड़े उतर जाएं और न उनसे किसी ऐसे जानवर की मांग करना जिसे वे काम में प्रयोग करते हों। किसी को एक दिरहम की मांग में खड़े नहीं रखना। अर्थात जो भी टैक्स वसूल करना है जज़िया वसूल करना है इस के लिए किसी को किसी किस्म की तकलीफ़ नहीं देनी, बोझ नहीं डालना। मैंने कहा हे अमीरुल मोमिनीन फिर तो मैं आपकी ओर ऐसे ही लौटूंगा जैसे मैं आपके पास से जा रहा हूँ। कुछ नहीं मिलेगा। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया तुम्हारा भला हो। हाँ चाहे तुम ख़ाली हाथ ही लौटो हमें तो यह हुक्म दिया गया है कि लोगों के उस माल में से लो जो उन की ज़रूरत से ज़ाइद हो। (उसोदुल ग़ाबा फी मअरेफतुल सहाबा ले इब्ने असीर, भाग 4 पृष्ठ 98 वर्णन अली बिन अबी तालिब, दारुल फ़िक्र प्रकाशक बेरूत 2003ई)(मोअजेमुल बुल्दान, भाग 3 पृष्ठ 188)

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु वर्णन करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु से फ़रमाया तुम मेरे भाई और मेरे साथी हो। (कन्जुल अम्मल, भाग 13 पृष्ठ 109 हदीस 36356 फ़ज़ायल अली, मोअस्सा अर्रिसाला 1981 ई)

अली बिन रबीअ से रिवायत है कि मैं हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के पास हाज़िर था जब उन के लिए एक जानवर लाया गया ताकि उस पर सवार हों। जब आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने रिकाब में पांव रखा तो तीन बार बिस्मिल्लाह कहा। जब उसकी पीठ पर सीधा बैठ गए तो अलहमदु लिल्लाह कहा। फिर कहा سُبْحَانَ الَّذِی سَخَّرَ لَنَا هٰذَا وَمَا كُنَّا لَهٗ مُقْرِنِيْنَ وَاِنَّا اِلٰی رَبِّنَا لَمُنْقَلِبُوْن : (ज़ुख़रूफ़ : 14-15) अर्थात पाक है वह ज़ात जिसने उसे हमारे अधीन कर दिया जबकि हम इस की ताकत नहीं रखते थे और नि:संदेह हम अपने रब की ओर लौट कर जाने वाले हैं। फिर आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने तीन बार अलहमदु लिल्लाह और तीन बार अल्लाहु-अकबर कहा। फिर आपने यह दुआ पढ़ी कि

سُبْحَانَكَ اِنِّی قَدْ ظَلَمْتُ نَفْسِی فَاغْفِرْ لِی فَاِنَّهٗ لَا يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ اِلَّا اَنْتَ۔ अर्थात तू पाक है नि:संदेह मैं ने ही अपनी जान पर अत्याचार किया। अत: मुझे बख़्श दे क्योंकि तेरे सिवा कोई गुनाहों को नहीं बख़्श सकता। फिर आप रज़ियल्लाहु अन्हु मुस्कुराए। रावी कहते हैं मैंने अर्ज़ किया कि हे अमीरुल मौमेनीन आप रज़ियल्लाहु अन्हु किस कारण से मुस्कुराए? आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को इसी तरह करते हुए देखा था जिस तरह मैंने किया है। फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मुसकुराए थे और हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि फिर मैंने कहा : हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम आप किस कारण से मुस्कुराए हैं? तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया : नि:संदेह तेरा रब अपने बंदे से बहुत ख़ुश होता है जब वह कहता है कि हे रब! मेरे गुनाह बख़्श दे। नि:संदेह तेरे सिवा कोई गुनाहों को नहीं बख़्श सकता। इस बात पर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम मुस्कुराए थे।

(जामे तिर्मेज़ी, अबवाबुल दाअवात,بَاب مَا يَقُوْلُ اِذَا رَكِبَ دَابَّۃ ,हदीस 3446)

यहया बिन यामुर से मर्वी है कि एक-बार हज़रत अली बिन अबू तालिब रज़ियल्लाहु अन्हु ने ख़िताब किया। अल्लाह तआला की प्रशंसा एवं गुणगान वर्णन करने के बाद आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया हे लोगो तुमसे पहले लोग सिर्फ गुनाहों के करने के कारण से हलाक हुए। उनके नेक लोग और उल्मा उन्हें इस बात से मना नहीं करते थे। फिर जब वे गुनाहों में हद से बढ़ गए तो उन्हें भिन्न भिन्न प्रकार की सज़ाओं ने पकड़ लिया। अत: तुम लोग भलाई का हुक्म दो और बुराई से रोको इससे पूर्व कि तुम पर भी उन जैसा अज़ाब आ जाए। याद रखो नेकी का हुक्म देना और बुराई से रोकना न तो तुम्हारी रोज़ी घटाएगा और न तुम्हारी मौत को क़रीब करेगा

(तफ़सीरुल-क़ुरआनिल-अज़ीम लेबनान कसीर,भाग 3 पृष्ठ 132 प्रकाशित दारुल क़ुतुब अल्इल्मिया लुबनान 1998 ई)

हज़रत जाबिर रज़ी अल्लाह तआला अन्हु रिवायत करते हैं कि एक-बार हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ एक अंसारी औरत के घर में थे जिस ने आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के लिए खाना तैयार किया हुआ था, दा'वत की हुई थी। नबी अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया अभी तुम्हारे पास एक जन्नती आदमी आएगा। इस के बाद हज़रत अबूबकर सिद्दीक़ रज़ी अल्लाह तआला अन्हु दाख़िल हुए तो हमने उन्हें मुबारकबाद दी। फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने दुबारा फ़रमाया अभी तुम्हारे पास, एक जन्नती आदमी आएगा। इस पर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु दाख़िल हुए तो हमने उन्हें मुबारकबाद दी। फिर तीसरी दफ़ा आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि अभी तुम्हारे पास एक जन्नती आदमी आएगा। रावी कहते हैं कि मैंने देखा कि उस वक़्त नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपना सिर खजूर के एक छोटे से पौधे के नीचे छुपाए हुए थे और कह रहे थे कि अल्लाह ! यदि तू चाहे तो यह आने वाला अली रज़ियल्लाहु अन्हु हो। फिर हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु दाख़िल हुए तो हमने उन्हें मुबारकबाद दी

(मस्नद अहमद बिन हम्बल, भाग 5 पृष्ठ 107 मस्नद जाबिर बिन अब्दुल्लाह, हदीस 14604 आलेमुल क़ुतुब बेरूत 1998 ई)

हज़रत अनस से रिवायत है कि रसूल अल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जन्नत तीन आदमीयों की प्रेमी है और वे हैं अली रज़ियल्लाहु अन्हु, अम्मार रज़ियल्लाहु अन्हु और सलमान रज़ियल्लाहु अन्हु। (अलमुसतदरिक अस्सहीहैन,भाग 3 पृष्ठ 348 किताब मारफ़ अलसहाब ज़िक्र इस्लाम अमीरुल मौमेनीन अली, हदीस नम्बर 4724 प्रकाशित दारुल फ़िक्र 2002 ई)

अबू उस्मान नहदी से रिवायत है कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि एक बार रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मेरा हाथ थामे हुए थे और हम मदीना की एक गली से गुज़र कर एक बाग़ के पास पहुंचे। मैंने निवेदन किया हे रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम यह बाग़ कितना सुन्दर है। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया तेरे लिए जन्नत में इस से भी ज़्यादा ख़ूबसूरत बाग़ है।

(अलमुसतदरक अस्सहीहैन, भाग 3 पृष्ठ 349-350 किताब मारफ़ अलसहाब वर्णन इस्लाम अमीरुल मौमेनीन अली, हदीस नंबर 4730 प्रकाशित दारुल फ़िक्र 2002 ई)

हज़रत अम्मार बिन यासिर रज़ियल्लाहु अन्हु वर्णन करते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु से यह फ़रमाते हुए सुना कि हे अली अल्लाह तआला ने तुम्हें एक ऐसी ख़ूबी प्रदान की है कि इस से

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अगर तुम चाहते हो कि तुम्हें दोनों दुनिया की फत्ह हासिल हो और लोगों के दिलों पर फत्ह पाओ तो पवित्रता धारण करो, और अपनी बात सुनो, और दूसरों को अपने उच्च आचरण के उदाहरण प्रस्तुत करो यहां तक कि सफल हो जाओगे।"

तालिबे दुआ

धानू शेरपा

सैक्रेट्री जमाअत अहमदिया देवदमतांग (सिक्कम)

बेहतर ख़ूबी उसने अपने बंदों को अता नहीं की और वह है दुनिया से अप्रियता। तुम्हें अल्लाह तआला ने ऐसा बनाया है कि न तुम दुनिया में से कुछ लेते हो न दुनिया तुम में से कुछ लेती है अर्थात तुम्हें दुनिया की, दुनिया की चीज़ों की कोई इच्छा नहीं है और न ही दुनिया की इच्छा रखने वाले लोग तुम से कोई सम्पर्क रखना चाहते हैं। तथा तुझे अल्लाह तआला ने गरीबों की मुहब्बत प्रदान की है वे तुमको अपना इमाम बना कर ख़ुश हैं और तुम उनको अपना अनुयायी बना कर ख़ुश हो। अत: ख़ुशख़बरी हो उस व्यक्ति को जो तुम से मुहब्बत करे और तुम्हारे बारे में सच्च बोले और हलाकत है उस व्यक्ति के लिए जो तुम से द्वेष रखे और तुम्हारे ख़िलाफ़ झूठ बोले। वे लोग जो तुम से मुहब्बत रखते हैं और तुम्हारे बारे में सच बोलते हैं वे जन्नत मैं तुम्हारे घर के पड़ोसी और तुम्हारे महल मैं तुम्हारे साथी होंगे और जो लोग तुमसे द्वेष रखते हैं और तुम पर झूठ बाँधते हैं अल्लाह तआला ने यह बात अपने ज़िम्मा ले रखी है कि क़ियामत के दिन वह उन्हें सख़्त झूठों के खड़े होने की जगह पर खड़ा करेगा।

(उसोदुल ग़ाबा फी मअरेफतुल सहाबा ले इब्ने असीर, भाग 4 पृष्ठ 96-97 वर्णन अली बिन अबी तालिब, दारुल क़ुतुब अल्इल्मिया बेरूत 2003)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी अल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है कि जन्नत में जिस दर्जा में मैं हूँगा उस में अली रज़ियल्लाहु अन्हु और फ़ातमाह रज़ियल्लाहु अन्हा होंगे।'

(बरकाते ख़िलाफ़त, अनवारुल ऊलूम, भाग 2 पृष्ठ254)

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के अशरा मुबशरा में होने के बारे में वर्णन है कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु आशिरा मुबशरा अर्थात उन दस ख़ुशनसीब सहाबा में से हैं जिन्हें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ज़बाने मुबारक से इसी दुनिया में जन्नत की ख़ुशख़बरी मिली। हज़रत सईद बिन ज़ेद रज़ियल्लाहु अन्हु वर्णन करते हैं कि मैं 9 लोगों के बारे में इस बात की गवाही देता हूँ कि वे जन्नती हैं और यदि मैं दसवें के बारे में भी यही कहूं अर्थात गवाही दूं तो गुनाह-गार नहीं हूँगा। कहा गया कि वह कैसे तो उन्होंने कहा कि हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ हिरा पहाड़ पर थे तो वह हिलने लगा। इस पर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ठहर हे हिरा निसंदेह तुझ पर एक नबी या सिद्दीक़ या शहीद है। किसी ने पूछा वे दस जन्नती लोग कौन हैं। हज़रत सईद बिन ज़ेद रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम स्वयं,अबु बकर रज़ियल्लाहु अन्हु, उमर रज़ियल्लाहु अन्हु, उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु, अली रज़ियल्लाहु अन्हु, तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हु, ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु, साअद रज़ियल्लाहु अन्हु और अब्दुर्रहमान बिन ओफ़ रज़ियल्लाहु अन्हु हैं और कहा गया कि दसवाँ कौन है? तो हज़रत सईद बिन ज़ेद रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा वह मैं हूँ

(सुन्न अल्तिर्मेज़ी, अब्वाबुल मुनाकिब,باب مناقب ابی الاعور واسمہ سعید بن زَی, हदीस 3757)

यह घटना जो वर्णन करने लगा हूँ यह पहले भी वर्णन हो चुकी है लेकिन नफ़स पर क़ाबू रखने और घमंड को दूर करने के विषय में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस-सलाम ने वर्णन फ़रमाया है इसलिए मैं यहां दुबारा यह वर्णन कर रहा हूँ। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस-सलाम फ़रमाते हैं: "कहते हैं हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु एक दुश्मन से लड़ते थे और केवल ख़ुदा के लिए लड़ते थे। आख़िर हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने उस को अपने नीचे गिरा लिया और उस के सीने पर चढ़ बैठे। उसने झट हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के मुँह पर थूक दिया। आप रज़ियल्लाहु अन्हु तुरंत उस की छाती पर से उतर आए और उसे छोड़ दिया। इस लिए कि अब तक तो मैं केवल ख़ुदा तआला के लिए तेरे साथ लड़ता था लेकिन अब जबकि तू ने मेरे मुँह पर थूक दिया है तो मेरे अपने नफ़स का भी कुछ हिस्सा इस में शामिल हो जाता है। अत: मैं नहीं चाहता कि अपने नफ़स के लिए तुम्हें क़तल करूँ। इस से साफ़ मालूम होता है कि आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपने नफ़स के दुश्मन को दुश्मन नहीं समझा। ऐसी फ़ित्रत और आदत अपने अंदर पैदा करनी चाहिए।'' आप जमाअत को नसीहत फ़रमाते हैं।''यदि नफ़सानी लालच और इद्देश्य के लिए किसी को दुख देते और दुश्मनी के सिलसिले को बढ़ाते हैं तो इस से बढ़कर ख़ुदा तआला को नाराज़ करने वाली क्या बात होगी?'

(मलफ़ूज़ात, भाग 8 पृष्ठ 105)

फिर आप एक और अवसर पर विस्तार से वर्णन फ़रमाया और इस पर और अधिक प्रकाश डाला। फ़रमाते हैं कि "जोशे नफ़सानी और लिल्लाही जोश में अन्तर के लिए हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु की एक घटना से शिक्षा प्राप्त करो। लिखा है कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु की एक काफ़िर पहलवान के साथ जंग शुरू हो गई। बार बार आप रज़ियल्लाहु अन्हु उस को क़ाबू करते थे वह क़ाबू से निकल जाता था। आख़िर उस को पकड़ कर अच्छी तरह से जब क़ाबू किया और उस की छाती पर सवार हो गए और क़रीब था कि ख़ंजर के साथ उस का काम समाप्त कर देते कि उसने नीचे से आप रज़ियल्लाहु अन्हु के मुँह पर थूक दिया। जब उस ने ऐसा किया तो हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु उस की छाती से उठ खड़े हुए और उस को छोड़ दिया और अलग हो गए। इस पर उसने आश्चर्य किया और हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु से पूछा कि आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने इते कष्ट के साथ पकड़ा और मैं आप रज़ियल्लाहु अन्हु का जान का दुश्मन हूँ और ख़ून का प्यासा हूँ। फिर बावजूद ऐसे क़ाबू पाने के आपने मुझे अब छोड़ दिया। यह क्या बात है? हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने उत्तर दिया कि बात यह है कि हमारी तुम्हारे साथ कोई व्यक्तिगत दुश्मनी नहीं। चूँकि तुम धर्म के विरोध के कारण मुसलमानों को दुख देते हो इस लिए तुम क़तल के योग्य हो और मैं केवल धार्मिक ज़रूरत के कारण तुमको पकड़ता था। लेकिन जब तुमने मेरे मुँह पर थूक दिया और इस पर मुझे ग़ुस्सा आया तो मैंने ख़्याल किया कि यह अब नफ़सानी बात मध्य में आ गई है। अब इस को कुछ कहना उचित नहीं ताकि हमारा कोई काम नफ़स के लिए न हो। जो हो सब अल्लाह तआला के वास्ते हो। जब मेरी इस हालत में बदलाव आएगा और यह ग़ुस्सा दूर हो जाएगा तो फिर वही सुलूक तुम्हारे साथ किया जाएगा। इस बात को सुनकर काफ़िर के दिल पर ऐसा प्रभाव हुआ कि समस्त कुफ़्र उसके दिल से ख़ारिज हो गया और उसने सोचा कि इस से बढ़कर और कौन सा दीन दुनिया में अच्छा हो सकता है जिसकी शिक्षा के अधीन इन्सान ऐसा पवित्र बन जाता है। अत: उसने उसी वक़्त तौबा की और मुस्लमान हो गया।"

(मल्फ़ूज़ात, भाग 9 पृष्ठ 219)

अत: यह है असल तक़्वा जो परिणाम भी दिखाता है।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने भी कम-ओ-बेश उस यहूदी की हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु से लड़ाई की घटना को इसी तरह वर्णन फ़रमाया है। फ़रमाते हैं कि "हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु एक लड़ाई में शामिल थे। एक बहुत बड़ा दुश्मन जिसका मुक़ाबला बहुत कम लोग कर सकते थे आप के मुक़ाबला पर आया और कई घंटे तक आप रज़ियल्लाहु अन्हु की और उस यहूदी पहलवान की लड़ाई होती रही। आख़िर कई घंटे की लड़ाई के बाद आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने उस यहूदी को गिरा लिया और उस के सीने पर बैठ गए और इरादा किया कि ख़ंजर से उसकी गर्दन काट दें कि अचानक उस यहूदी ने आप रज़ियल्लाहु अन्हु के मुँह पर थूक दिया। आप तुरंत उसे छोड़कर सीधे खड़े हो गए और वह यहूदी सख़्त हैरान हुआ और कहने लगा यह अजीब बात है कि कई घंटे की क्षति के बाद आपने मुझे गिराया है और अब एकदम मुझे छोड़कर अलग हो गए हैं। यह आपने कैसी बेवक़ूफ़ी की है? हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया : मैंने बेवक़ूफ़ी नहीं की बल्कि जब मैंने तुम्हें गिराया और तुमने मेरे मुँह पर थूक दिया तो एकदम मेरे दिल में ग़ुस्सा पैदा हुआ कि उसने मेरे मुँह पर क्यों थूका है परन्तु साथ ही मुझे ख़्याल आया कि अब तक तो मैं जो कुछ कर रहा था ख़ुदा के लिए कर रहा था यदि इस के बाद मैं ने लड़ाई जारी रखी तो तेरा अन्त मेरे नफ़स के ग़ुस्सा के कारण से होगा। "अर्थात हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि उस यहूदी को ख़त्म करना मेरे ज़ाती ग़ुस्सा के कारण से भी हो सकता है'' ख़ुदा के लिए नहीं होगा । इस लिए मैंने उचित समझा कि इस वक़्त मैं तुझे छोड़ दूं। जब ग़ुस्सा जाता रहेगा तो फिर ख़ुदा के लिए मैं तुझे गिरा लूँगा

(अहमदियत दुनिया में इस्लामी तालीम-ओ-तमद्दुन ,अन्वारुल उलूम,भाग 16 पृष्ठ 132)

बाक़ी इंशा-ए-अल्लाह आइन्दा वर्णन होगा।

इस वक़्त मैं एक और बात भी कहना चाहता हूँ। आज नए वर्ष का पहला दिन है और पहला जुमआ है। दुआ करें कि यह वर्ष जमाअत के लिए, दुनिया के लिए, इन्सानियत के लिए बाबरकत हो। हम भी अपना फ़र्ज़ अदा करते हुए पहले से बढ़कर ख़ुदा तआला की ओर झुकने वाले और अपनी इबादतों के मेयार बढ़ाने वाले हों और दुनिया वाले भी अपने जन्म के उद्देश्य को समझते हुए अल्लाह तआला का हक़ अदा करने वाले बन जाएं और एक दूसरे के हुक़ूक़ को मारने के बजाय अल्लाह तआला के हुक्मों पर चलते हुए एक दूसरे के हक़ अदा करने वाले बन जाएं अन्यथा फिर अल्लाह तआला अपने रंग में दुनिया वालों को उनके कर्तव्यों की ओर ध्यान दिलाता है। काश कि हम और दुनिया के समस्त लोग इस अहम नुक्ते को समझ जाएं और अपनी दुनिया और परलोक सँवार सकें।

पिछले एक वर्ष से हम एक निहायत ख़तरनाक महामारी का सामना कर रहे हैं और दुनिया का कोई देश भी इस महामारी से बाहर नहीं है ,कहीं कम और कहीं ज्यादा, लेकिन लगता है कि अधिकतर दुनिया का इस बात की ओर ध्यान नहीं देना चाहिए कि कहीं यह महामारी अल्लाह तआला की ओर से हमें अपने हुक़ूक़ और कर्तव्यों की

ओर ध्यान दिलाने के लिए न हो। यह नहीं सोचना चाहते। यह तो नहीं कि अल्लाह तआला हमें हिलाना चाहता है, बताना चाहता,ध्यान दिलाना चाहता है। इस ओर किसी की सोच नहीं है।

कुछ माह पहले मैंने बहुत से हुकूमत के लीडरों को इस ओर ध्यान दिलाने के लिए पत्र लिखे थे और कोविड के हवाले से समझाने की कोशिश की थी और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलातो वस्सलाम के हवाले से इस ओर ध्यान दिलाया थी कि यह आफ़तें ख़ुदा तआला की ओर से अपने हुक़ूक़ और कर्तव्यों को भूलने और अदा न करने बल्कि अत्याचार में बढ़ने की कारण से आते हैं इसलिए ध्यान करें। कुछ लीडरों ने उत्तर भी दिए लेकिन उनके दुनियादारी वाले उत्तर थे कि हम भी यही हैं (दुनिया की नज़र से उबाली बातें कीं, धर्म वाली बात नहीं की। ख़ुदा का बहुत बड़ा ख़ाना जो बीच में था और मैंने वर्णन किया था उस का वर्णन ही नहीं किया) और ज़रूर ऐसा होना चाहिए लेकिन न अपनी हालतों को बदलने की ओर अमली क़दम उठाना चाहते हैं ये लोग, न क़ौम के हमदर्द बन कर क़ौम को असल उद्देश्य की ओर ध्यान दिलाना चाहते हैं। यह जानने के बावजूद कि इस महामारी के बाद के प्रभाव बहुत ख़तरनाक होंगे, यह दुनिया के हर लीडर को पता है, हर अक़्लमंद इन्सान को पता है, हर विश्लेषण कर्ता को यह पता है लेकिन इसके बावजूद असल हल की ओर ध्यान नहीं है सिर्फ दुनिया की जो कोशिशें हैं उसी की ओर ध्यान है।

इस बीमारी से न सिर्फ व्यक्तिगत तौर पर हर व्यक्ति की आर्थिक दृष्टि से कमज़ोर हो रहा है, सेहत के लिहाज़ से जो हो रहे हैं वह तो हो रहे हैं जो प्रभावित हैं। लेकिन उमूमी तौर पर हर एक आर्थिक दृष्टि से भी प्रभावित हो रहा है बल्कि बड़ी बड़ी अमीर हुकूमतों की अर्थव्यवस्था की भी कमरें टूट रही हैं। दुनिया दारों के पास उस का केवल एक हल है कि फिर जब ऐसी सूरते हाल हो जाएगी, जब अर्थव्यवस्था हो जाएगी तो दूसरे छोटे देशों की अर्थव्यवस्था पर क़ब्ज़ा किया जाए, उनको किसी तरह अपने जाल में फंसाया जाए, अपने चंगुल में लाया जाए और फिर बहाने बहाने से उनकी दौलतों पर क़ब्ज़ा किया जाए। इस के लिए ब्लॉक बनेंगे और बन रहे हैं। सर्द जंग दुबारा शुरू हो जाएगी और अब कहा जाने लगा है कि शुरू हो गई है एक तरह से और कोई दूर नहीं कि असल हथियारों की जंग भी हो जाए जो निहायत भयानक जंग होगी। फिर ये लोग एक और गहरे कुँवें में गिर जाऐंगे। ग़रीब मुल्क तो पहले ही पिसे हुए हैं अमीर देशों की जनता भी पिसेंगी और बड़ी ख़ौफ़नाक हद तक पिसेंगे।

अत: इस से पहले कि दुनिया इस हालत को पहुंचे हमें अपना फ़र्ज़ अदा करते हुए दुनिया को होशियार करना चाहिए। अत: यह वर्ष मुबारकबादों का वर्ष उस वक़्त बनेगा जब हम अपने कर्तव्यों को इस ढ़ंग पर अदा करने वाले होंगे कि लोगों को समझाएँ, दुनिया को समझाएँ और ज़ाहिर है कि ये सब करने के लिए हमें अपनी हालतों के भी जायज़े लेने होंगे। हम जो ज़माना के इमाम मसीह मौऊद और मह्दी माहूद को मानने वाले हैं क्या हमारी अपनी हालतें ऐसी हो चुकी हैं कि हम अल्लाह तआला के हुक़ूक़ अदा करने के साथ विशेषता उसके बंदों के हुक़ूक़ भी अदा करने वाले हैं या अभी हमें अपनी इस्लाह करने और एक दूसरे से प्यार तथा मुहब्बत की भावनाओं को ग़ैरमामूली स्तरों तक लाने की ज़रूरत है। अत: हर अहमदी को ग़ौर करना चाहिए कि उसके सपुर्द एक बहुत बड़ा काम किया गया है और उसको पूरा करने के लिए पहले अपने अन्दर प्यार और मुहब्बत और भाई चारे की फ़िज़ा को पैदा करें, अपने समाज में, अहमदी समाज में और फिर दुनिया को इस झंडे के नीचे लाएं जो हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बुलंद किया था और जो अल्लाह तआला के एकेश्वरवाद का झंडा है। तभी हम अपनी बैअत के उद्देश्य में सफ़ल हो सकते हैं, तभी हम बैअत का हक़ अदा करने वाले बन सकते हैं, तभी हम अल्लाह तआला के फ़ज़्लों के वारिस हो सकते हैं और तभी हम नए वर्ष की मुबारकबाद देने के और लेने के मुस्तहिक़ क़रार दिए जा सकते हैं। अल्लाह तआला हमें इस की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए और हर अहमदी मर्द, औरत, जवान, बच्चा, बूढ़ा इस बात को समझते हुए यह वादा करे कि इस वर्ष मैंने दुनिया में एक इन्क़िलाब पैदा करने के लिए अपनी समस्त प्रतिभाओं को प्रयोग करना है। अल्लाह तआला हर एक अहमदी को इसकी तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

आजकल पाकिस्तान के अहमदियों के लिए और अल-जज़ाएर के अहमदियों के लिए दुआ की ओर भी मैं ध्यान दिला रहा हूँ। उनको अपनी दुआओं में भी याद रखें। पाकिस्तान में कुछ जगह कुछ मौलवी और सरकारी अधिकारी ज़ुल्मों पर उतरे हुए हैं। अल्लाह तआला ऐसे सुधार के अयोग्य लोगों की जल्द पकड़ के सामान करे। अल्लाह तआला के तो ज्ञान में है किन का सुधार होना है और किन का नहीं होना। जिनका नहीं होना तो फिर उनकी जल्द पकड़ के सामान पैदा फ़रमाए। तौहीने रिसालत के जिस क़ानून के अधीन ये लोग अहमदियों पर अत्याचार करने की कोशिश करते हैं और अहमदियों की अपनी तर्बीयत के लिए जो भी हमारे कुछ माध्यम हैं हर माध्यम पर पाबन्दी लगाने की कोशिश कर रहे हैं, इस को अल्लाह तआला जल्द उनसे दूर फ़रमाए और हमें उनसे नजात दिलाए। असल में तो रहमतुल लिल्आलेमीन के नाम को ये बदनाम करने वाले लोग हैं। अहमदी तो नामूसे रिसालत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के लिए अपनी जानें क़ुर्बान करने वाले हैं। आज दुनिया को मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के झंडे के नीचे लाने वाले सबसे अधिक काम बल्कि हक़ीक़ी काम अहमदी कर रहे हैं बल्कि कहना चाहिए कि यदि कोई यह काम कर रहा है तो वे केवल अहमदी हैं।

अत: यह दुनियादार दुनियावी हुकूमत और दौलत के बलबूते पर हम पर अत्याचार तो कर सकते हैं लेकिन यह याद रखें कि हम उस ख़ुदा को मानने वाले हैं जो نِعۡمَ الۡمَوۡلٰی ه और نِعۡمَ النَّصِيۡرُ है। वह ख़ुदा है जो نِعۡمَ الۡمَوۡلٰی ه और نِعۡمَ النَّصِيۡرُ है। निसन्देह उसकी सहायता आती है और ज़रूर आती है और उस वक़्त फिर इन दुनिया-दारों और अपनी सीमा में ताक़त और प्रभुत्व रखने वाले जो लोग हैं उनकी फिर धूल भी नज़र नहीं आती जब अल्लाह तआला की मदद-और-सहायता आती है। अत: हमारा काम है कि दुआओं से अपनी इबादतों को और अधिक सजाएँ और यदि हम यह कर लेंगे तो फिर ही हम सफ़ल हैं।

अल-जज़ाएर के बारे में मैं ने कहा था कि सबको छोड़ दिया गया है। वहां एक कोर्ट ने, एक अदालत ने सबको धोड़ दिया था। दूसरे ने भी मामूली जुर्माना कर के तक़रीबन सारों को छोड़ दिया लेकिन इसके बावजूद भी वहां अभी कुछ लोग हैं जो जेल में कैद हैं। उन के लिए भी दुआ करें कि उनकी जल्द रिहाई के सामान हों। पाकिस्तान के असीरों (ख़ुदा के लिए जेल में कैद किए गए लोग) की रिहाई के लिए भी दुआ करें। हमारी ख़ुशियां चाहे वह वर्ष के शुरू की हों या ईद की, असल तो उस वक़्त होंगी जब हम दुनिया में हर ओर अल्लाह तआला की तौहीद का झंडा लहराने वाले बनेंगे जिसे लेकर हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम आए थे। ख़ुशियां उस वक़्त होंगी जब इन्सानियत इन्सानी क़दरों को पहचानने वाली बनेगी। जब आपस की नफ़रतें मोहब्बतों में बदल जाएँगी। अल्लाह तआला इस ख़ुशी के सामान भी हमें जल्द पहुंचाए। मुस्लिम लोगो को भी अक़्ल दे कि वे आने वाले मसीह मौऊद और महदी मअहूद को मान लें। दुनिया को भी अक़्ल दे कि वे अल्लाह तआला और उसके बंदों के हुक़ूक़ अदा करने की ओर ध्यान देने वाले हों। अल्लाह तआला हर मुल्क में हर अहमदी को अपनी हिफ़्ज़-ओ-अमान में रखे और यह वर्ष हर अहमदी के लिए, हर इन्सान के लिए रहमतों और बरकतों का वर्ष बन कर आए और जो कोताहियों और कमियां पिछले सालों में हम से हो गईं जो अल्लाह तआला की नाराज़गी का कारण बनी या हमें कुछ इनामों से महरूम रखने का कारण बनीं उनसे अल्लाह तआला हमें बचाए और अपने इनामों का और फ़ज़्लों का वारिस बनाए और हम हक़ीक़ी मोमिन बन जाएं। अल्लाह तआला हमें इन दुआओं की भी तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए।

☆ ☆ ☆ ☆

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ़्री सेवा) :

1800 3010 2131

(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)

Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह ख़ामिस

ख़िलाफत का निज़ाम भी अल्लाह तआला और उसके रसूल के आदेशों और निज़ाम का हिस्सा है।

(ख़ुत्बा जुम्अ: 24 मई 2019 ई)

तालिबे दुआ

मुहम्मद शुएब सुलेजा पुत्र जनाब मुहम्मद ज़ाहिद सुलेजा मरहूम तथा फैमली, अहमदिया जमाअत कानपुर(उत्तर प्रदेश)

ख़ुत्बः जुमअः

जो चीज़ ख़ुदा तआला के लिए ख़र्च की जाए वह व्यर्थ नहीं जाती बल्कि यह ऐसा क़र्ज़ है जिसे अल्लाह तआला कई गुना बढ़ा कर लौटाता है

तहरीक वक़्फ़े जदीद के 63 वें वर्ष के दौरान जमाअत अहमदिया की ओर से एक करोड़ पाँच लाख तीस हज़ार पाऊंडज़ की अद्वितीय क़ुर्बानी

अल्लाह तआला के धर्म की इशाअत के लिए, सृष्टि की सेवा के लिए माली क़ुर्बानी करना भी एक बहुत बड़ी नेकी है और अल्लाह तआला कभी उसे बग़ैर प्रतिफल के नहीं छोड़ता।

हर वर्ग के अहमदी का व्यक्तिगत अनुभव है कि अल्लाह तआला के लिए, अल्लाह तआला की प्रसन्नता चाहने के लिए उस की राह में ख़र्च करना जहां दिल के सुकून का कारण बनता है वहां दुनियावी तौर पर भी हज़ारों लोग इस अनुभव से गुज़रते हैं कि अल्लाह तआला वे धन जो उन्होंने अल्लाह तआला की प्रसन्नता के लिए दिया होता है, हैरान कर के वापस लौटाता है शर्त यह है कि नेक नीयत से ख़ुदा तआला की प्रसन्नता के लिए क़ुर्बानी की जाए और इस के लिए अन्य आदेशों और नेकियों का भी निर्वाह किया जाए।

हमारे विरोधी कहते हैं कि हम जमाअत का नाम संसार से मिटा देंगे, कौन है जो अल्लाह तआला से ऐसी मुहब्बत करने वालों और वफ़ा करने वालों को मिटा सके।

लोग तो नमाज़ें और तहज्जुद पढ़ते हैं इसलिए कि हम चंदों की अदायगी कर सकें इस के अतिरिक्त कि अपनी व्यक्तिगत आवश्यकताओं को पूरा करें।

मुख़ालिफ़ीन चाहे जितना भी ज़ोर लगा लें लेकिन यह जमाअत ख़ुदा तआला ने अपने धर्म को संसार में फैलाने के लिए स्थापित फ़रमाई है, इसलिए हर अवसर पर ख़ुदा तआला ही सँभालता है और सहायता फ़रमाता है और एक नस्ल के बाद दूसरी नस्ल के दिल में इस की मुहब्बत और इस के उद्देश्य की पूर्ति की तड़प पैदा करता चला जाता है।

वक़्फ़े जदीद के चौंसठवें वर्ष के आरंभ का ऐलान और संसार भर में बसने वाले अहमदियों की क़ुर्बानी की घटनाओं का उमूमी वर्णन

पाकिस्तान और अल-जज़ाएर के अहमदियों के अत्याधिक विरोध के दृष्टिगत दुआओं, नवाफ़िल और सदक़ात पर ज़ोर देने की नसीहत।

अमन की दृष्टि से पाकिस्तान के उमूमी हालात तथा संसार की तेज़ी से बिगड़ती हुई अवस्था के दृष्टिगत दुआओं की ओर ध्यान करने का इरशाद

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 8 जनवरी 2021 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ۔ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

مَنْ ذَا الَّذِيْ يُقْرِضُ اللهَ قَرْضًا حَسَنًا فَيُضٰعِفَهٗ لَهٗٓ اَضْعَافًا كَثِيْرَةً وَاللهُ يَقْبِضُ وَيَبْصُۜطُ وَاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ

(अल्बकरा 246)

कौन है जो अल्लाह को कर्ज़े-हसना दे ताकि वह उस के लिए उसे कई गुना बढ़ाए और अल्लाह रिज़्क़ रोक भी लेता है और खोल भी देता है और तुम उसी की ओर लौटाए जाओगे।

इस आयत में अल्लाह तआला को क़र्ज़ देने का वर्णन है। इस का यह अर्थ नहीं कि नऊज़-बिल्लाह अल्लाह तआला को इन्सानी पैसे की आवश्यकता है और अपनी आवश्यकताओं को पूरी करने के लिए वह क़र्ज़ मांग रहा है। क़र्ज़ का एक तो साधारण अर्थ हैं जो हम क़र्ज़ के लेन-देन में प्रयोग करते हैं, किसी से उधार लिया दिया लेकिन इसके शब्दकोश के अर्थ अच्छे या बुरे बदले के भी हैं। यहां इस के अर्थ होंगे कि कौन है जो अल्लाह तआला की राह में ख़र्च करता है ताकि अल्लाह तआला उस का उस को बेहतरीन प्रतिफल दे।

अत: जहां अल्लाह तआला के लिए ख़र्च करने या देने का प्रश्न उठता है तो इसलिए कि अल्लाह तआला इस काम को करने वाले को बेहतरीन प्रतिफल अता फ़रमाता है। अर्थात यदि अल्लाह तआला के लिए ख़र्च कर रहे हैं, अल्लाह तआला को दे रहे हैं तो अल्लाह तआला उस का बेहतरीन प्रतिफल अता फ़रमाता है। क़ुरआन करीम में और भी बहुत सी जगह क़ुर्बानीयों और माली क़ुर्बानीयों का वर्णन अल्लाह तआला ने फ़रमाया है और अल्लाह तआला के दीन की लिए या अल्लाह तआला की सृष्टि की बेहतरी की लिए ख़र्च करने को ख़ुद अल्लाह तआला की लिए ख़र्च करने के बराबर ठहराया गया है। और जो चीज़ ख़ुदा तआला की लिए ख़र्च की जाए वह व्यर्थ नहीं जाती बल्कि यह ऐसा क़र्ज़ है जिसे अल्लाह तआला कई गुना बढ़ा कर लौटाता है। अत: कोई यह न समझे कि अल्लाह तआला को किसी क़र्ज़ की आवश्यकता है। अल्लाह तआला तो ख़ुद रब है, समस्त संसार को पालने वाला है और देने वाला है। उस को किसी की आवश्यकता नहीं है। वह जब अपने लिए क़र्ज़ का शब्द प्रयोग करता है तो अर्थ है कि मेरे रास्ते में ख़र्च करो और मेरे बेशुमार इनामात हासिल करने वाले बनो। कौन है जो मुझे कर्ज़े-हसना दे? यह प्रश्न उठा कर इस ओर ध्यान दिलाया गया है कि कौन है जो मेरे रास्ते में ख़र्च कर के मेरे बेशुमार इनामों का वारिस बने और बनता चला जाए? और आगे ख़ुद ही इस का विस्तार भी फ़र्मा दिया कि मैं तुम्हारे इस क़र्ज़ को अपने पास रखने के लिए, अपनी आवश्यकता के ख़र्च के लिए नहीं मांग रहा बल्कि तुम्हें कई गुना बढ़ा कर देने के लिए तुम्हारे से यह क़र्ज़ ले रहा हूँ और इस के लिए कह रहा हूँ। यदि तुम मेरे दीन के लिए, मेरी सृष्टि की बेहतरी के लिए ख़र्च करोगे तो कई गुना बढ़ा कर तुम्हें वापस लूटाऊंगा और कर्ज़े-हसना का शब्द प्रयोग कर के यह भी बता दिया कि तुम अपनी मर्ज़ी से और ख़ुश-दिल्ली से यह ख़र्च करोगे तो फिर ऐसे जो ख़र्च अल्लाह तआला की राह में होगा वह तुम्हारी ओर से कर्ज़े-हसना होगा और अल्लाह तआला भी उस से कई गुना बढ़ा कर लौटाएगा। हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलातो वस्सलाम ने अपनी एक मज्लिस में इस हवाले से वर्णन करते हुए एक जगह इस प्रकार फ़रमाया कि

"अल्लाह तआला जो क़र्ज़ मांगता है तो इस से यह अर्थात नहीं होती है कि केवल अल्लाह अल्लाह तआला को आवश्यकता है और वह मुहताज है। ऐसा सोचना भी कुफ़्र है बल्कि इस का अर्थ यह है कि प्रतिफल के साथ वापस करूँगा। "अर्थात बढ़ा कर वापस करूँगा" यह एक तरीक़ है अल्लाह तआला जिस से फ़ज़्ल करता है।''

(मल्फ़ूज़ात, भाग 3 पृष्ठ 268)

फिर एक अवसर पर हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलातो वस्सलाम फ़रमाते हैं कि "एक नादान कहता है कि مَنْ ذَا الَّذِيْ يُقْرِضُ اللهَ قَرْضًا حَسَنًا (अल्बक़रा 246) (कौन व्यक्ति है जो अल्लाह को क़र्ज़ दे) इस का अर्थ यह है कि मानो केवल अल्लाह ख़ुदा भूखा है। अज्ञान नहीं समझता।'' आप फ़रमाते हैं कि अज्ञान लोग हैं जो ऐसी बातें करते हैं। "अज्ञान नहीं समझते कि इस से भूखा होना कहाँ से निकलता है?'' जब कर्ज़े-हसना की बात अल्लाह तआला करता है कि मुझे दो तो इस से कहाँ यह परिणाम निकलता है कि अल्लाह तआला भूखा है। फ़रमाया कि "यहां क़र्ज़ का अर्थ असल तो यह है कि ऐसी चीज़ें जिनके वापस करने का वादा होता है क़र्ज़ तो होता ही वापस करने के लिए है और इस के साथ वादा होता है। फ़रमाया कि ' 'इस के साथ इफ़्लास अपनी ओर से लगा लेता है''अर्थात एतराज़ करने वाला

इफ़्लास का शब्द या ग़ुर्बत का शब्द या अल्लाह तआला ''की आवश्यकता का शब्द अपनी ओर से लगा लेता है। अल्लाह तआला ने तो यह नहीं फ़रमाया कि मैं भूखा हूँ, इफ़लासज़दा हूँ। इसलिए मुझे दो। अपनी ज़ात के लिए मैंने ख़र्च करना है। हाँ अपने बंदों के लिए अल्लाह तआला फ़रमाता है कि मेरे बंदे जब भूखे होते हैं तुम दोगे, उन पर ख़र्च करोगे तो इस का अर्थ यह है तुमने मुझ पर ख़र्च किया। आप अलैहिस्सलातो वस्सलाम फ़रमाते हैं कि "यहां क़र्ज़ का अर्थ यह है कि कौन है जो ख़ुदा तआला को नेक कर्म दे। अल्लाह तआला उनका बदला उस से कई गुना कर के देता है।" कोई भी नेक कर्म हो अल्लाह के लिए करो लाओ तो अल्लाह तआला उसे बढ़ा के देता है। सिर्फ रुपया पैसे की बात नहीं है और यह जो बात है, फ़रमाते हैं "यह ख़ुदा की शान के लायक़ है। जो सिल्सिला उबूदीयत का रबूबियत के साथ है। इस पर ग़ौर करने से उस का यह अर्थ साफ़ समझ में आता है क्योंकि ख़ुदा तआला किसी नेकी, दुआ और इल्तिजा और बदूं उपद्रव काफ़िर और मोमिन के हर एक की परवरिश फ़र्मा रहा है।" अल्लाह तआला तो हर एक की परवरिश कर रहा है इस बात को अन्देखा करके की कोई काफ़िर है या मोमिन है''और अपनी रबूबियत और रहमानियत के फ़ैज़ से सबको फ़ैज़ पहुंचा रहा है। फिर वह किसी की नेकियों को कब व्यर्थ करेगा जब बिना किसी नेकी के, बिना किसी काम के अल्लाह तआला सबको पाल रहा है और दे रहा है तो फिर जब कोई नेकी करेगा और अमाले सालिह (अच्छे कर्म) करेगा तो उस को किस तरह हो सकता है कि अल्लाह तआला व्यर्थ करे और इस का प्रतिफल न दे।'' उसकी शान तो यह हैمَنۡ یَّعۡمَلۡ مِثۡقَالَ ذَرَّۃٍ خَیۡرًا یَّرَہٗ(अल्ज़िल्ज़ाल : 8) जो ज़रा भी नेकी करे उस का भी प्रतिफल देता है और जो ज़रा बदी करेगा उसका बदला भी मिलेगी। यह है क़र्ज़ का असल अर्थ जो इस आयत से पाया जाता है। चूँकि असल अर्थ क़र्ज़ का इस से पाया जाता था इसलिए यही कह दिया مَنۡ ذَا الَّذِیۡ یُقۡرِضُ اللّٰہَ قَرۡضًا حَسَنًا (अल्बक़रा : 246) और उसकी तफ़सीर इस आयत में मौजूद है مَنۡ یَّعۡمَلۡ مِثۡقَالَ ذَرَّۃٍ خَیۡرًا یَّرَہٗ'' (अल्ज़िल्ज़ाल : 8)

(मल्फ़ूज़ात भाग 1, पृष्ठ 226 - 227)

कि जो ज़रा भी नेकी करता है अल्लाह तआला के निकट उस का प्रतिफल है।

अत: अल्लाह तआला के धर्म की इशाअत के लिए, सृष्टि की सेवा के लिए माली क़ुर्बानी करना भी एक बहुत बड़ी नेकी है और अल्लाह तआला कभी उसे बिना प्रतिफल के नहीं छोड़ता। दूसरी जगह पर क़ुरआन करीम में अल्लाह तआला ने इस का वर्णन भी फ़रमाया है। माली क़ुर्बानियों के सिल्सिला में तो जमाअत के लोगों से बेहतर और कौन जान सकता है। हर वर्ग के अहमदी का व्यक्तिगत अनुभव है कि अल्लाह तआला की लिए, अल्लाह तआला की प्रसन्नता चाहने के लिए उस की राह में ख़र्च करना जहां दिल के सुकून का कारण बनता है वहां दुनियावी दृष्टि से भी हज़ारों लोग इस अनुभव से गुज़रते हैं कि आश्चर्य चकित अल्लाह तआला वे धन जो उन्होंने अल्लाह तआला की प्रसन्नता की लिए दिया होती है वापस लौटाता है। ऐसे बहुत से अहमदी हैं जो सिर्फ क़ुर्बानी करते हैं अर्थात क़ुर्बानी के नाम पर क़ुर्बानी करते हैं और सिर्फ यह इच्छा होती है कि अल्लाह तआला राज़ी हो जाए। उनके दिल में ख़्याल भी नहीं होता कि इस का प्रतिफल उन्हें संसार में या दुनियावी माल की अवस्था में मिल जाएगा लेकिन अल्लाह तआला जो फ़रमाता है कि मैं उत्तम तरीके से मैं इस को लूटाऊंगा वह लौटा देता है। कुछ ऐसे भी हैं जो बुरे हालात के बावजूद क़ुर्बानी कर देते हैं और यह आशा रखते हैं कि ख़ुदा तआला उनकी अपनी आवश्यकताएँ किसी न किसी तरह पूरी कर ही देगा और अल्लाह तआला उनकी इस इच्छा को भी पूरी कर देता है और उनको भी आश्चर्य होता है कि किस तरह ख़ुदा तआला ने आवश्यकता पूरी कर दी लेकिन शर्त यह है कि नेक नीयत से ख़ुदा तआला की प्रसन्नता की लिए क़ुर्बानी की जाए और इस के लिए अन्य आदेशों और नेकियों को भी किया जाए। यह नहीं कि केवल माल दे दिया और समझ लिया कि मैंने बहुत क़ुर्बानी कर दी, अन्य कर्तव्यों पूरे कर दिए। अन्य नेकियां करना भी आवश्यक है। न कि एक कारोबारी व्यक्ति की तरह केवल इस सोच के साथ माल ख़र्च हो कि इस का लाभ लेना है, अल्लाह तआला की राह में दे दो लाभ मिल जाएगा।

बहरहाल मैं इस वक़्त कुछ लोगों की अपने घटनाएं प्रस्तुत करता हूँ जिन्हों ने अल्लाह तआला के इस इरशाद से लाभ पाया। अधिकतर ऐसी घटनाऐं हैं जिनमें ख़ालिस हो कर उन्होंने अल्लाह तआला की लिए क़ुर्बानी दी और आश्चर्य चकित रूप से उनकी आवश्यकताओं को न सिर्फ अल्लाह तआला ने पूरा किया बल्कि बढ़ा कर दिया। बहुत से ऐसे हैं जिन्हों ने इस बात की भी पर्वा नहीं की कि अपनी और अपने बच्चों की भूख किस तरह मिटाएँगे लेकिन कुछ मिन्टों के अन्दर अन्दर अल्लाह तआला ने इस से बढ़कर उनकी भूख को मिटाने के सामान पैदा कर दिए। जो उनके पास था इस से बहुत बढ़कर दे दिया और यूं यह बात उनके ईमान में और अधिक मज़बूती का माध्यम बन गई। अत: यह हैं अल्लाह तआला की प्रसन्नता प्राप्त करने वाले वे लोग जिनकी बेशुमार उदाहरण आज हमें जमाअत अहमदिया में ही नज़र आती हैं।

गिनी कनाकरी के सदर और मुबल्लिग़ इंचार्ज ने एक घटना लिखी है। कहते हैं कि उन्होंने मेरा जो पिछले वर्ष का वक़्फ़े जदीद का ख़ुत्बा था वह मस्जिद में पढ़ कर सुनाया जिसमें मैं ने माली क़ुर्बानी की महत्व को वर्णन किया था और इस हवाले से हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलातो वस्सलाम के उद्धरण दृष्टिगत रखे थे जिनमें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने ख़ुदा तआला तक पहुंचने के पाँच मार्गों में से एक मार्ग जिहाद बिल्माल का वर्णन फ़रमाया था और फ़रमाया था कि एक दिल में दो मुहब्बतें इकट्ठी नहीं हो सकतीं अर्थात माल की मुहब्बत भी हो और ख़ुदा तआला की मुहब्बत भी हो और इसके अतिरिक्त कुछ घटनाए भी मैंने सुनाई थी जो साधारणता मैं माली क़ुर्बानी की ईमान अफ़रोज़ घटनाओं में सुनाया करता हूँ। कहते हैं कि नमाज़ जुमआ के बाद एक ग़रीब और मुख़लिस अहमदी क़बा (muossa kaba) साहिब ने अपनी जेब में जितने पैसे थे निहायत इख़लास के साथ वक़्फ़े जदीद के चंदे में अदा कर दिए जबकि वह इस से पहले अपना चंदा अदा कर चुके थे। जब धन का पूछा गया कि कितना है तो कहने लगे जो जेब में था मैंने निकाल के दे दिया अब ख़ुद ही गिन लें। मैंने तो अल्लाह तआला की मुहब्बत के हुसूल के लिए दिया है गिनती कर के नहीं दिया। जब गिनती की गई तो पचासी हज़ार फ़्रॉंक की रकम थी। जब उन्हें कहा गया कि इस में से कुछ धन वापस रख लें। आपने घर भी जाना है। सब ही आपने जेब से निकाल के दे दिए हैं। किराया भी आपके पास नहीं रहा तो कहने लगे कि आप ने सुना नहीं कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया है कि एक दिल में दो मुहब्बतें जमा नहीं हो सकतीं। इस लिए आज मुझे अल्लाह तआला की मुहब्बत के सहारे जीने दें। और ख़ुशी ख़ुशी पैदल अपने घर चले गए।

तो यह हैं वे नज़्ज़ारे जिन्हें देखकर मुबल्लिग़ साहिब ने भी लिखा है कि दिल अल्लाह तआला की प्रशंसा से भर जाता है। कैसी मुख़लिस जमाअत है जो अल्लाह तआला ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को प्रदान फ़रमाई है। लोग ख़ुत्बात सुनते हैं और सुन के कह देते हैं हाँ जी हमने सुन लिया है। लेकिन इस गहराई से इस बात को नोट करना कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया है कि दो मुहब्बतें दिल में नहीं रह सकतीं तो फिर यह नहीं हो सकता कि मेरी जेब में माल पड़ा हो उस की मुहब्बत भी मैं रखूं और फ़ौरी तौर पर इस पर अमल भी कर दिया। लोग कहते हैं उनको समझ नहीं आती। यह है गहराई से किसी बात को सुनना और उस पर अमल करना। कैसे अजीब क़ुर्बानी के नज़्ज़ारे हैं।यह भी शरायते बैअत के अनुसार है कि हर हालत में अल्लाह तआला से वफ़ा का अह्द पूरा करना है। कोई शिकवा नहीं करना। इस अदायगी से क़ुर्बानी की ख़ुशी हुई कि वफ़ा के साथ क़ुर्बानी के लिए तैयार हैं। हमारे मुख़ालिफ़ीन कहते हैं कि हम जमाअत का नाम संसार से मिटा देंगे। कौन है जो अल्लाह तआला से ऐसी मुहब्बत करने वालों और वफ़ा करने वालों को मिटा सके। अल्लाह तआला फिर ऐसे मुहब्बत करने वालों को अपने साथ चिमटाता है और दुश्मन की धूल का भी पता नहीं चलता।

जमाअत अहमदिया फ्रांस की एक महिला डन्नीवा (Dieneba) साहिबा हैं कुछ समय पूर्व उन्होंने बैअत की थी। उनको फ़ैमिली के साथ भी काफ़ी मुश्किलात का सामना है। वह कहती हैं कि मैंने माली क़ुर्बानी में चाहे वह वक़्फ़े जदीद हो, तहरीके जदीद हो, मस्जिद फ़ंड हो हमेशा हिस्सा लेने की कोशिश की है और चंदों की बरकतों को अपनी आँखों से देखा है। कहती हैं इस वर्ष मैंने वक़्फ़े जदीद के चंदे की अदायगी की, तो हालात इस तरह के थे कि मैं अच्छी जॉब के लिए एक लंबे अरसा से कोशिश कर रही थी लेकिन कोई जॉब नहीं मिल रही थी। कहती हैं कि जिस दिन मैंने चन्दा वक़्फ़े जदीद अदा किया है दस मिनट के बाद ही मुझे फ़ोन के द्वारा एक बहुत बड़ी कम्पनी की ओर से सुचना प्राप्त हुई कि उनके यहाँ मुझे जॉब मिल गई है। कहती हैं इन समस्त चंदों की अदायगी के तुरन्त बाद और विशेषता वक़्फ़े जदीद की अदायगी के तुरन्त बाद काम का मिलना निसन्देह अल्लाह तआला की ओर से मेरे लिए एक निशान है।

काज़किस्तान के मुबल्लिग़ सिल्सिला लिखते हैं कि लोकल मुअल्लिम जसलान साहिब की पत्नी ने चंद वर्ष पहले बैअत की थी। इस दफ़ा अपनी सालगिरा के अवसर पर सात हज़ार टीनगे tenge लोकल करंसी है तहरीके जदीद और वक़्फ़े जदीद में आधी आधी कर के दे दी। वह वर्णन करती हैं इस धन की अदायगी के एक हफ़्ते के बाद ही मुझे सत्तर हज़ार टीनगे का माल मिल गया जिसकी मुझे कोई आशा भी नहीं थी। अल्लाह तआला की राह में क़ुर्बानी की तो उसने दस गुना बढ़ा के वापस कर दिया। कुछ लोग कहते हैं कि हमारे साथ ऐसा क्यों नहीं होता। हमारे साथ तो ऐसी घटना दृष्टिगत नहीं आती। उनको चाहिए कि इस्तिग़फ़ार भी करें और अपने दिलों को टटोलें कि क्या उस क़ुर्बानी के वक़्त उनकी नीयत शुद्ध हो कर अल्लाह के मार्ग में

क़ुर्बानी की थी? यदि थी तो फिर शिकवा भी पैदा नहीं हो सकता। फिर तो इस बात पर ख़ुश होना चाहिए कि अल्लाह तआला ने क़ुर्बानी की तौफ़ीक़ अता फ़रमाई। बस अल्लाह तआला ने देना था। किस तरीक़े से देना है वह दे देगा। हो सकता है आज नहीं तो कल दे देगा लेकिन जिनकी नीयत ही यह होती है उनको फिर शिकवे भी पैदा होते हैं। थोड़ा दिल ऐसे करता हैं। ऐसे लोगों को तो फिर नमाज़ें भी बोझ लग रही होती हैं।

मास्को के एक दोस्त हैं अब्दुर्रहमीन साहिब। कहते हैं कि नौकरी के मामले में मेरी क़िस्मत हमेशा ख़राब रही है। जहां भी काम मिलता वहां तनख़्वाह इतनी कम होती कि सारी फ़ैमिली का गुज़ारा मुश्किल हो जाता। एक बार तो एक माह की तनख़्वाह भी अदा नहीं की गई लेकिन फिर अल्लाह तआला ने ऐसा फ़ज़ल फ़रमाया कि मेरी तनख़्वाह में बढ़ोतरी होने लग गई। मैं समझ गया कि यह ख़ुदा तआला की ओर से इशारा है कि मुझे चंदा जात बाक़ायदगी से अदा करने चाहिऐं। इसलिए मैंने चंदे अदा करने शुरू कर दिए। जितने चंदे थे बाक़ायदगी से देने शुरू कर दिए। उनकी अदायगी के परिणाम में अल्लाह तआला ने मज़ीद फ़ज़ल किया और मुझे एक ऐसी नौकरी की पेशकश मिली जिसका मैं दो वर्ष से इंतिज़ार कर रहा था और अल्लाह के फ़ज़ल से अब मुझे चंदा वक़्फ़े जदीद की अदायगी की भी तौफ़ीक़ मिली है और मुझे विशेषता इस बात का ज्ञान हो गया है कि चंदों की अदायगी में स्थायी मिज़ाजी के कारण से अल्लाह तआला इन्सान की आयनी बढ़ाता चला जाता है और आय की स्थायी व्यवस्था भी फ़र्मा देता है और यह कि मैं अल्लाह का बड़ा शुक्रगुज़ार हूँ कि उसने मुझे चंदों के शामिल होने वालों में, चंदों में, जमाअत के चंदों में शामिल होने की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाई।

सीरालियोन से वाटर लू (waterloo) क्षेत्र के मुबल्लिग़ इफ़्तिख़ार साहिब कहते हैं कि चंदा वक़्फ़े जदीद की वसूली के बारे में मुख़्तलिफ़ जमाअतों के दौरा जात किए। जमाअत के लोगों को बताया कि हमारी ओर से आपको चंदों के महत्व बताने में सुस्ती हुई है, तहरीके जदीद के चंदे के ऐलान के वक़्त मैंने ऐलान किया था कि सीरालियोन में काफ़ी सामर्थ्य है, पोटेंशल (potential) है और यदि वे चाहें तो अपने चंदों में बेहतरी कर सकते हैं। इसलिए इस संदेश को ले के वह जमाअतों में गए और उन्होंने कहा कि ख़लीफ़ा का यह संदेश है कि सेरालियून काफ़ी बड़ी और पुरानी जमाअत है और जमाअत के लोग क़ुर्बानियां करने के लिए तैयार हैं। सुस्ती है तो उहदेदारों की ओर से है। कहते हैं कि यह संदेश सुनके अहबाब जमाअत में एक जोश और वलवला पैदा हो गया और उन्होंने न सिर्फ यह कि वक़्फ़े जदीद के चंदे अदा कर दिए बल्कि दूसरे चंदा जात में भी बढ़ोतरी के साथ अदायगी की। Newton एक जगह है वहां अठारह घरानों में संपर्क किया जिसके परिणाम में तेरह लाख लीवन एक ही दिन में वसूल हो गए। दो अहमदी स्कूलों के विद्यार्थियों ने तीन लाख लीवन एक ही दिन में वक़्फ़े जदीद में अदा कर दिए और अधिक दो लाख लीवन का बाद में बढ़ोतरी कर दी। Newton में एक बच्ची मुस्लिमा फ़ौफ़ोना (muslima fofanah) ने पचास हज़ार लीवन अदा किए और कहा कि इस के लिए ख़लीफ़तुल मसीह की सेवा में दुआ की दरख़ास्त करें। कहते हैं पाँच विद्यार्थियों ने मुझे बताया कि मज़दूरी करने पर जो तनख्वाह मिली थी उन्होंने पच्चास हज़ार लीवन वक़्फ़े जदीद में प्रस्तुत कर दिए। अत: ये हैं वे लोग जो ख़लीफ़ा वक़्त के आदेश पर लब्बैक कहने वाले हैं। कभी मिले नहीं, कभी इस तरह आमने सामने बैठे नहीं लेकिन उनके दिलों में ख़िलाफ़त से मुहब्बत और इस का सम्मान है और इसी लिए फिर अल्लाह तआला की लिए हर क़ुर्बानी के लिए तैयार हो जाते हैं। फिर उसी मुहब्बत की एक और मिसाल देखें। Newton जमाअत की है। कहते हैं कि मैंने s.bah के घर जा कर चंदा की तहरीक की और ख़ुत्बा का उद्धरण सुनाया कि सीरालियून में जमाअत के लोग क़ुर्बानियां करने के लिए तैयार हैं तो उनकी पत्नी साहिबा बड़ी जज़बाती हो गईं। उन्होंने कहा कि ख़लीफ़तुल मसीह ने बिल्कुल ठीक कहा है और फिर कहती हैं लेकिन मजबूरी है कि आज हमारे घर में कुछ नहीं है। कहते हैं अभी बैठे हुए थे कि कहीं से बिल्कुल आशा के विरुद्ध कोई धन आ गया जो उन्होंने उसी वक़्त सैक्रेटरी माल जो उनके साथी थे उनको पकड़ा दी कि हमारी चंदा की रसीद काट दें। गिनने पर पता लगा कि दो लाख लीवन हैं जो उन्होंने सारे चंदा में अदा कर दिए। और इस अदायगी से बहुत संतुष्ट और ख़ुश थीं। कोई शिकवा नहीं था कि ऐसे ग़लत वक़्त में आ गए अभी तो हमें ख़ुद आवश्यकता है। हमारा जो धन आया है वह तुम ले गए। तो कहते हैं मैंने उनसे कहा कि धन में से घर में खाने पीने के लिए भी कुछ रख लें। कहने लगीं अब तो कुछ नहीं है। जो धन आया है चंदा में अदा कर दिया है। अब हमें कोई पर्वा नहीं। लेकिन अल्लाह तआला ने भी उधार नहीं रखा। कहते हैं थोड़ी देर के बाद ही उनको कहीं से कुछ और धन भी आ गया जो काफ़ी धन था और फिर उनके खाने पीने की भी व्यवस्था हो गई।

किरगिज़स्तान के मुबल्लिग़ सिल्सिला हैं। वह लिखते हैं कि एक मुख़लिस किरगिज़ अहमदी कोबत (kubat) साहिब बिशकेक (bishkek) में रहते हैं। उन्होंने बताया कि मैंने वक़्फ़े जदीद के लिए एक हज़ार सम (som) देने का वादा किया था। सम किरगिज़ करंसी है। माली वर्ष ख़त्म होने से एक माह पूर्व हमारी जमाअत के सदर साहिब ने ख़ुत्बा में वक़्फ़े जदीद के चंदे की महत्व पर रोशनी डाली। कहते हैं उन्होंने ख़ुत्बा में हमारे ख़लीफ़तुल मसीह के किसी पिछले ख़ुत्बा की घटनाएँ पढ़ कर सुनाई तो कहते हैं मैंने अपने किए हुए वादा एक हज़ार सुम में से उस वक़्त तक सिर्फ दो सौ सुम अदा किए हुए थे। मुकम्मल अदायगी की अभी तौफ़ीक़ नहीं मिली थी। मेरी एक बीमार बहन हैं, हुकूमत उसे हर माह चार हज़ार सुम अदा करती है। उस दिन जुमआ के बाद मैं अपनी बहन की पेंशन लेने बैंक गया। जब मैंने ए टी एम मशीन में कार्ड डाला तो एकाऊंट में दस हज़ार सुम मौजूद थे। एक हफ़्ता पूर्व मेरी माताा ने हुकूमत को एक पत्र लिखा था कि हमारा गुज़ारा इस तरह नहीं होता तो अलाउंस बढ़ाया जाए तो मैं समझा कि यह वही धन आया है हुकूमत की ओर से। लेकिन कहते हैं कि सुबह 29 दिसंबर को हुकूमत की ओर से फ़ोन आया कि वादा के अनुसार आप लोगों को हम पाँच हज़ार सम देंगे। इस तरह मज़ीद पाँच हज़ार सिम भी मिल गए। और कहते हैं मैंने चंदा भी अदा कर दिया और जो हम पहले ख़र्च कर चुके थे यह इस में से निकाल लिया। तो कहते हैं जो चंदा मैंने अदा किया था यह फ़ौरी तौर पर उसकी बरकत का परिणाम है। हमें नहीं पता लगा कि वह पहले पैसे कहाँ से आए थे लेकिन बहरहाल हमारे एकाऊंट में आए हुए थे और बैंक ने कहा कि यह तुम्हारे ही पैसे हैं। इस से हमारा कोई सम्बन्ध नहीं है। तो यह जो क़ुर्बानियां हैं फिर ईमान में तरक़्क़ी का कारण बनती हैं।

तनज़ानिया के अमीर साहिब कहते हैं ज़ंजबार (zanzibar) जमाअत से ख़ैर रशीदी साहिब हैं। उन्हें जब इस वर्ष के अंत पर वक़्फ़े जदीद का याद करवाया गया। तो उन्होंने लिखा कि जब यह याद दिलाया गया है उस समय मेरे पास न कोई नौकरी थी और न ही कोई धन लेकिन मैंने मुरब्बी साहिब से दरख़ास्त की कि आप मेरा नाम पूर्ण अदायगी करने वालों की लिस्ट में शामिल कर दें। अल्लाह तआला ख़ुद ही प्रबन्ध फ़र्मा देगा। कहते हैं दो दिन गुज़रे होंगे कि मुझे ड्राईवर की नौकरी मिल गई और पहले ही दिन जो आय हुई उस से आसानी से मैंने अपना और अपने बच्चों की ओर से चंदा वक़्फ़े जदीद अदा कर दिया। तो कहते हैं चंदा अदा करने की नीयत के कारण से स्थायी आय का मेरा प्रबन्ध हो गया। फिर कहते हैं कि यह देखें ऐसी बातें हैं कि इन बातों से फिर हमारा ईमान भी पुख़्ता होता है।

तनज़ानिया के अमीर साहिब ही लिखते हैं एरियनगा क्षेत्र से ताहा साहिब ने वर्णन किया कि इस वर्ष विनीत को चंदा वक़्फ़े जदीद के हवाले से ग़ैरमामूली बरकतें देखने का अवसर मिला। कहते हैं वक़्फ़े जदीद का वादा लगभग छ: लाख शिलिंग (shilling)था। नवम्बर में आर्थिक कठिनाइयों को देखते हुए उन्होंने मुझे पत्र लिखा कि सामूहिक तौर पर देश के और कारोबार के हालात बहुत ख़राब हैं इसलिए दुआ करें कि अल्लाह तआला की दी हुई तौफ़ीक़ से मैं वक़्फ़े जदीद का वादा मुकम्मल कर सकूं। अब यह लोग जो पत्र मुझे लिखते हैं यह भी सिर्फ व्यक्तिगत आवश्यकताओं के लिए नहीं लिखते, बल्कि इस फ़िक्र के साथ लिखते हैं कि दुआ करें कि हम अपना चंदा अदा कर सकें। आगे कुछ घटनाएँ आएँगी कि लोग तो इसलिए नमाज़ें और तहज्जुद पढ़ते हैं कि हम चंदों की अदायगी कर सकें अतिरिक्त इसके कि अपनी व्यक्तिगत आवश्यकताओं को पूरी करें। कहते हैं अभी पत्र लिखा ही था कि दिल में सुकून सा महसूस हुआ कि इंशा अल्लाह कुछ सामान हो जाएगा और अभी पत्र लिखे हुए चौबीस घंटे ही गुज़रे होंगे कि किसी रैफ़रैंस से मेरे पास एक दोस्त अपने कारोबार के सिल्सिला में मश्वरा और कंसल्टेशन (consultation) के लिए आए। उनसे मिलने पर इल्म हुआ कि पंद्रह वर्ष पहले हम दोनों सहपाठी भी थे। कहते हैं उनके काम के सिल्सिला में जो बातें हुईं कारोबारी बातें हुईं। फिर मुझे उनके द्वारा से एक कंट्रैक्ट मिल गया जो उस वक़्त छ: मिलियन शिलिंग का कंट्रैक्ट था। कहते हैं कि अल्लाह तआला ने मेरे वादे की रक़म से कई गुना ज़्यादा, दस गुना बढ़ा कर प्रबन्ध फ़र्मा दिया। छ: लाख को छ: मिलियन कर दिया। ऐडवान्स मिलते ही सबसे पहले मैंने वक़्फ़े जदीद का वादा पूरा किया।

ज़ंजिबार के एक नौमुबाईन दोस्त जुमआ साहिब हैं। सब्ज़ी मंडी में मज़दूरी का काम करते हैं। कहते हैं कि जब वक़्फ़े जदीद के वाअदे की अदायगी के हवाले से तहरीक की गई तो उन दिनों सामान लाने वाली गाड़ीयों की आय-ओ-रफ़त बंद हो गई थी। सामान की गाड़ीयों पर लोडिंग अनलोडिंग करते हैं। माली हालात तंग थे। जिस तरह मैंने कहा था कि अब यह मज़दूर आदमी है, ग़रीब आदमी है यह दुआ नहीं कर रहा कि मेरी आवश्यकताऐं पूरी हो जाएं, मेरा पेट भरने के सामान हो जाएं बल्कि कहते हैं मैंने कुछ दिन तहज्जुद में अल्लाह तआला से चंदों की अदायगी के लिए ख़ास दुआ की। तहज्जुद में उठ के दुआ की तो सिर्फ यह कि अल्लाह तआला मुझे तौफ़ीक़ दे कि

मैं माली क़ुर्बानी में पीछे न रहूं। इसलिए वक़्फ़े जदीद का वर्ष ख़त्म होने से सिर्फ तीन दिन पहले यह सिल्सिला कारोबार जो कि बंद हुआ-हुआ था दुबारा शुरू हो गया और उन्हें लगभग तीन लाख शलंग की आय हुई जिससे कहते हैं मुझे अपना और अपने बच्चों का चंदा अदा करने की तौफ़ीक़ मिली। यह वर्णन नहीं कि गुज़ारा करने के लिए हमें धन मिल गया बल्कि यह कि मेरा और मेरे बच्चों का चंदा अदा हो गया। कहते हैं जब से मैंने बैअत की है चंदे की अदायगी के कारण से ख़ुदा तआला ने मेरे माल में अच्छी खासी बरकत अता फ़रमाई है। ये हैं वे लोग जिनको फ़िक्र है तो चंदों की अदायगी की और तहज्जुद में जैसा कि मैंने कहा विशेषता रो-रो कर दुआ कर रहे हैं तो यह कि ख़ुदा तआला चंदा अदा करने की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए। एक दुनियादार इन्सान ये बातें सुनकर कह सकता है ये तो पागलपन है लेकिन दुनियादार की नज़र में यही जो बेवक़ूफ़ लोग हैं यही वे लोग हैं जिनसे अल्लाह तआला प्यार करता है और फिर उनकी ज़रूरतें ख़ुद ही पूरी करता है।

रिपोर्टस में अजीब अजीब घटनाएं मिलती रहती हैं। गेम्बिया के अमीर साहिब लिखते हैं नॉर्थ बंक क्षेत्र के एक गांव के दुकानदार इब्राहीम साहिब बड़े कामयाब व्यापारी थे और लोग अपनी अमानतें इत्यादि उनके पास रखवाया करते थे और उस वक़्त यह ग़ैर अहमदी थे। कुछ कारणों के आधार पर अचानक दीवालिया हो गए और उन्होंने अपने कारोबार को बचाने के लिए लोगों की अमानतों में से भी ख़र्च कर लिया। जब उन्हें ख़तरा हुआ कि वे अमानतें भी वापस नहीं कर पाएँगे तो अपने बाप दादा के देश गिनी कनाकरी चले गए। देश छोड़ कर दौड़ गए और तीन वर्ष तक गिनी कनाकरी रहे। फिर उन्होंने फ़ैसला किया कि उन्हें वापस जाना चाहिए। दिल में नेकी थी तो यही फ़ैसला किया कि वापस जा के हालात का मुक़ाबला कर लेंगे और लोगों के कर्ज़े किसी न किसी तरह वापस करने चाहिएं इसलिए उन्होंने गांव के चीफ़ और डिस्ट्रिक्ट चीफ़ को फ़ोन किया और एक अवसर देने की मिन्नत समाजत की कि मुझे अवसर दो, मुझे वापस आने दो। गिरफ़्तार नहीं करना तो मैं कोशिश करूँगा कि मैं सारे कर्ज़े अदा कर दूं। इसलिए चीफ़ ने इस शर्त पर वापस आने की इजाज़त दी कि वह मेहनत कर के कमाएंगे और लोगों की अमानतें वापस करेंगे। यदि ऐसा नहीं कर सके तो जेल भेज दिया जाएगा। कहते हैं उन्हें आए हुए अभी चार माह का समय हुआ था कि उन तक हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का संदेश पहुंचा जिसे सुनकर उन्होंने अहमदियत स्वीकार कर लिया और बाक़ायदगी से चंदा अदा करना शुरू कर दिया। माली तहरीकों में भी हिस्सा लेने लगे। जो आय होती थी इस में से कुछ न कुछ हिस्सा डालते रहते थे और अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से चंदे की अदायगी से उनके काम में इतनी बरकत पड़ी कि दो वर्ष के समय में उन्होंने न सिर्फ अपने समस्त क़र्ज़ अदा कर दिए जोकि दो डलासी (dalasi) थे बल्कि अपना मकान भी बना लिया और दुकान भी दुबारा से क़ायम कर ली और अब उनका काम पहले से बहुत बढ़कर तरक़्क़ी कर रहा है और वह ख़ुद कहते हैं कि यह सब कुछ चंदे की बरकतों से हुआ है।

आस्ट्रेलिया जमाअत की एक लजना की मैंबर हैं। वह वर्णन करती हैं कि जब हम नए घर में शिफ़्ट हुए तो हमारे माली हालात अच्छे नहीं थे। घर का किराया भी ज़्यादा था। मेरे पास इतने पैसे नहीं थे कि आवश्यक सामान ख़रीद सकें और दूसरी ओर चंदे का वर्ष भी ख़त्म हो रहा था। मैंने अल्लाह पर विश्वास करते हुए चंदा अदा कर दिया और दुआ की कि हे अल्लाह किसी की मोहताजी न हो ख़ुद मेरी आवश्यकताओं को पूरी कर दे। यह दुनिया-दार देश में रहने वाली महिला है। यह नहीं है कि कोई ग़रीब देश में थीं। कहती हैं उसी दिन शाम को मेरे पति आए और मुझे ला कर कुछ पैसे दिए और कहने लगे कि मुझे आज मेरे अफ़सर से यह बोनस मिला है और सारे कर्मचारियों में से यह केवल मुझे ही मिला है और किसी को नहीं मिला, जो मेरे चंदे की धन से दोगुना धन था। यह कहती हैं अल्लाह तआला का ऐसा फ़ज़्ल और एहसान था कि मैं हैरान रह गई और मुझे यक़ीन हो गया कि अल्लाह तआला अपनी लिए की गई क़ुर्बानी करने वाले को कभी बेसहारा नहीं छोड़ता।

इंडिया, भारत से क़मरुद्दीन साहिब, यह इन्सपैक्टर हैं लिखते हैं कि माली वर्ष के अंत पर नाज़िम वक़्फ़े जदीद के साथ दौरे पर जमाअत कालीकट पहुंचा। इस दौरान एक अहमदी हनीफ़ साहिब के घर भी गए। उन्होंने आठ वर्ष क़बल बैअत की थी और मामूली मज़दूरी कर के गुज़ारा करते हैं। उनके घर पहुंचे तो उनका दस वर्ष का बेटा मदलाज अली अपने बुगी और गुल्लक लेकर आया और वक़्फ़े जदीद में जमा करवाते हुए बताया कि यह चंदा उसने वक़्फ़े जदीद के लिए वर्ष भर इकट्ठा किया है। जब बुगी को खोला गया तो इस में बड़ी रकम थी। नाज़िम साहिब ने इस बच्चे से पूछा कि साधारणता बच्चे पैसे अपनी पसन्द की चीज़ें ख़रीदने के लिए जमा करते हैं यह तुम चंदा वक़्फ़े जदीद में क्यों दे रहे हो? इस पर उस बच्चे ने उत्तर दिया जिसका अर्थ यह था कि अल्लाह तआला और रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और ख़ुलफ़ा किराम तो ख़ुदा की राह में ख़र्च करने का हुक्म देते हैं इसलिए यह धन चंदा वक़्फ़े जदीद में दे रहा हूँ। यह है अहमदी बच्चों की तर्बीयत। जिस जमाअत के बच्चों की यह सोच हो और इस तरह तर्बीयत हो उस को ये अहमदियत के विरोधी क्या नुक़्सान पहुंचा सकते हैं ? मुख़ालिफ़ीन चाहे जितना भी ज़ोर लगा लें लेकिन यह जमाअत ख़ुदा तआला ने अपने दीन को संसार में फैलाने के लिए क़ायम फ़रमाई है। इसलिए हर अवसर पर ख़ुदा तआला ही सँभालता है और सहायता फ़रमाता है और एक नस्ल के बाद दूसरी नस्ल के दिल में उसकी मुहब्बत और उसके उद्देश्य की पूर्ति की तड़प पैदा करता चला जाता है।

तंज़ानिया के अमीर साहिब लिखते हैं पड़ोसी देश मलावी (malawi) की मंगोची (manguchi) जमाअत से मुअल्लिम लिखते हैं कि एक दोस्त इब्राहीम साहिब मांस का कारोबार करते हैं। उन्होंने इस वर्ष चंदा वक़्फ़े जदीद के लिए पाँच हज़ार आठ सौ मिलाविन कवाचा (kwacha) वादा किया। दौरान वर्ष थोड़ा थोड़ा अदा करते रहे। दिसम्बर तक कुछ हिस्सा अदा करना बाकी था लेकिन देशी हालात की कारण से कारोबार बंद हो गया। उन्होंने उधार लेकर वादा मुकम्मल कर दिया। एक हफ़्ते के बाद उन्होंने काम दुबारा शुरू करने के लिए एक बकरी ख़रीदी ताकि उसका गोश्त बेच सकें और चंद दिनों में ही इतनी बरकत पड़ी कि उनका समस्त क़र्ज़ अदा हो गया। तो ग़रीब लोग भी जिस भरोसा और क़ुर्बानी की भावना से चन्दा देते हैं अल्लाह तआला भी फिर फ़ज़्ल फ़र्मा देता है। अब देश के हालात तो वैसे ही थे, और हैं लेकिन फिर भी अल्लाह तआला ने उनके हालात बदल दिए।

मलावी की जमाअत मवाला (mwala) के मुअल्लिम कहते हैं हमारी जमाअत में एक विधवा महिला मटिनबअ (matemba) साहिबा हैं। हर वर्ष अपनी हैसियत के अनुसार चंदा अदा करती हैं। इस वर्ष वक़्फ़े जदीद के लिए कुछ धन का वादा किया और दौरान वर्ष ही दीगर महिलाओं से पहले ही मुकम्मल अदायगी करने की तौफ़ीक़ भी हासिल की। जिस दिन अदायगी मुकम्मल की उसी रात स्वप्न में देखा कि उन्हें बताया जा रहा है कि आज से तुम्हारे कामों में ख़ुदा सहायता करेगा। इसलिए अगले दिन वह मुअल्लिम साहिब के पास आईं और चंदा वक़्फ़े जदीद में ज़ाइद अदायगी कर दी। वह कहती हैं कि चंदा की बरकत से ख़ुदा तआला मेरी फ़सल में बहुत बढ़ोतरी फ़र्मा देता है और अब तो मुझे उसने ख़ुद ही कह दिया है ख़ुदा तआला तुम्हारी सहायता करेगा। किस तरह कई दफ़ा अल्लाह तआला फ़ौरी तौर पर ईमान में तरक़्क़ी के सामान भी पैदा फ़र्मा देता है।

अल्बानिया के मुबल्लिग़ नौमुबाईन के बारे में लिखते हैं कि एक दोस्त मारेगलेन बीजा (mariglen beja) साहिब हैं। तीन वर्ष पूर्व उन्होंने बैअत की थी। जमाअत के सैक्रेटरी तब्लीग़ भी हैं। बहुत फ़आल ख़ादिम हैं। एक दिन वह अपने साथ एक डिब्बा लेकर आए जो पैसों से भरा हुआ था। उन्होंने बताया कि उन्होंने एक माह से यह डिब्बा अपनी गाड़ी में इस नीयत से रखा हुआ था कि जितनी बचत होती जाएगी वह इस में से जमाअत के चंदा के लिए डालते जाऐंगे। इसलिए पहली दफ़ा जब वह भरा हुआ डिब्बा लेकर आए तो एक हिस्सा अपने चार माह के बेटे ब्योर्न बीजा (bjorn beja) की ओर से तहरीके जदीद और वक़्फ़े जदीद में दिया और अन्य अपनी ओर से तहरीके जदीद में और वक़्फ़े जदीद में और लाज़िमी चंदाजात में अदा किया। इसके बाद से हर माह पैसों का डिब्बा भर कर लाते हैं और वक़्फ़े जदीद के अवसर पर दिसंबर के आख़िर में आख़री जुम्आ पर भी उन्होंने अपने सामर्थ्य के अनुसार काफ़ी बड़ी धन की माली क़ुर्बानी की है। अहमदी होने के बाद क़ुर्बानी का एक जोश पैदा होता है इसलिए कि अल्लाह तआला के फ़ज़्लों के नज़्ज़ारे देखते हैं।

यू के चीम (cheam) के सदर जमाअत कहते हैं कि हमारे टार्गेट में काफ़ी कमी थी। मैं इस हवाले से तहज्जुद में उठकर दुआ करता था। एक दिन मेरी पत्नी ने बताया कि अमुक व्यक्ति या अमुक फ़ैमिली जो है उनको यदि कहोगे तो तुम्हें मज़ीद अदायगी हो जाएगी। इसलिए उनसे संपर्क किया गया तो इस फ़ैमिली ने कहा कि हमारा नाम ज़ाहिर नहीं करना और एक हज़ार पाऊंड की अदायगी कर दी। इस के अतिरिक्त एक हज़ार पाऊंड अपने दोनों बच्चों की ओर से अदा किए। फिर कहा कि इस के अतिरिक्त भी यदि आपको आवश्यकता हो तो भी बताएं।

यू के से ही लजना इस्लामाबाद की सैक्रेटरी वक़्फ़े जदीद हैं,कहती हैं यूनीवर्सिटी से ग्रेजवेशन करने के बाद बच्चों की परवरिश में व्यस्त थी। अब मेरे बच्चे पाँच और आठ वर्ष के हो चुके हैं। समस्त चंदे पति की आय से ही अदा होते थे। मेरे अपने एकाऊंट में सिर्फ बच्चों के बेनेफिट (child benefit) आते थे। मैं ख़्याल करती थी कि जितना भी अल्लाह की राह में ख़र्च कर लूं उसे हक़ीक़ी माली क़ुर्बानी नहीं कह सकती। इसलिए मैंने इस वर्ष सितंबर में अपने पर्सनल एकाऊंट (personal

account) से चंदों के लिए स्टैंडिंग आर्डर के द्वारा चंदा वसीयत और तहरीके जदीद और वक़्फ़े जदीद के अतिरिक्त अपनी दादी और चाचा की ओर से भी चंदे अदा करने शुरू कर दिए। मासिक किस्तें इतनी निर्धारित की वास्तव में मेरी आय के अनुसार वह हक़ीक़ी क़ुर्बानी हो। इसी महीने मैंने बच्चों के स्कूल में बतौर टीचर अस्सिटैंट जॉब की दरख़ास्त जमा करवा दी कि आगे और अधिक काम करने के लिए कुछ अनुभव हासिल कर लूं लेकिन कामयाबी की कोई आशा नहीं थी। कहती हैं कि जिस दिन मेरे एकाऊंट से पहले चंदे के धन की अदायगी हुई है उस से अगले रोज़ मुझे स्कूल से इंटरव्यू की काल आई। जब एकाऊंट से दूसरी अदायगी हुई तो मुझे अस्सिटैंट टीचर की अतिरिक्त स्कूल वालों ने एक और अहम रोल दे दिया जिससे मेरी आय दस गुना बढ़ गई जिस से मुझे यक़ीन हो गया कि यह केवल अल्लाह तआला की राह में माली क़ुर्बानी का परिणाम है।

मुबल्लिग़ फ़र्हाद साहिब जर्मनी से हैं, वह कहते हैं लोकल इमारत बादिन (wiesbaden) के एक ख़ादिम ने बताया कि वह तहरीके जदीद का चंदा अदा कर चुके थे बल्कि जो धन वक़्फ़े जदीद में अदा करना था वह भी इज़ाफ़ी चंदा में तहरीके जदीद में अदा कर दिया था। इसी महीने टैक्स डिपार्टमैंट की ओर से पत्र आ गया कि आपके ज़िम्मा आठ सौ यूरोज़ हैं जो आपने अदा करने हैं। लेकिन इसके बावजूद कहते हैं मैंने हिम्मत कर के वक़्फ़े जदीद का चंदा अदा कर दिया कि ठीक है क़र्ज़ ले के टैक्स भी दे देंगे। इस के कुछ हफ़्तों बाद ही टैक्स डिपार्टमैंट का पत्र आया कि हमने दुबारा आपके काग़ज़ात का जायज़ा लिया है आपके ज़िम्मा कोई धन नहीं है बल्कि हमने आपको चार हज़ार चार-सौ यूरो वापस करने हैं। और कुछ दिन के बाद ही कहते हैं मेरी गाड़ी का ऐक्सिडन्ट हो गया, नुक़्सान हुआ, किसी ने नुक़्सान कर दिया तो उस के भी मुझे चार हज़ार सात सौ यूरो मिल गए। इस तरह थोड़ी सी हिम्मत कर के मैंने चंदे में जो बढ़ोतरी की थी, जो अदायगी की थी अल्लाह तआला ने उस की अदायगी के सामान पैदा कर दिए। अब इस को चाहे कोई संयोग कहे लेकिन एक मोमिन जानता है कि यह अल्लाह तआला के ख़ास फ़ज़ल का परिणाम है।

कैनेडा की सदर लजना कहती हैं कि एक बहन वर्णन करती हैं कि तीन वर्ष पहले उनके पति अपनी शिक्षा में व्यस्त थे। नौकरी के साथ बाहर की समस्त ज़िम्मेदारी उन पर आ पड़ी। इस थका देने वाली रूटीन ने उन्हें परेशान कर दिया। वह बीमार रहने लगीं। इसी दौरान जब वक़्फ़े जदीद, तहरीके जदीद के वादों का टाइम आया तो उन्होंने अपनी आयनी से दो गुना वादा लिखवा दिया। कुछ अरसा के बाद उनकी जॉब ख़त्म हो गई। शदीद तंग-दस्ती का शिकार हो गईं। क्रेडिट कार्ड से अख़राजात पूरे करने लगीं। वर्ष के आख़िर में जब चंदे अदा करने का वक़्त आया तो मजबूरी के कारण अल्लाह तआला पर भरोसा करते हुए उन्होंने क्रेडिट कार्ड से ही चंदों की अदायगी भी कर दी। ख़ुदा तआला ने अजीब क़ुदरत दिखाई कि इन्ही दिनों में उन्हें बैंक से मालूम हुआ कि उनका क्रेडिट प्रोटेक्शन इंशोरंस है और यदि जॉब चली गई है तो उस के लिए दरख़ास्त दे सकती हैं। इस तरह उनके क्रेडिट कार्ड की समस्त अदायगी का बंद-ओ-बस्त हो गया और साथ ही उन्हें नई नौकरी भी मिल गई जो पहली नौकरी से ज़्यादा बेहतर थी। माली हालात बेहतर होने लगे। उन्होंने पहले से बढ़कर लाज़िमी चंदों की अदायगी की, अपनी इच्छा से वादा जात को भी बढ़ा दिया और इसी दौरान उनके पति की भी शिक्षा मुकम्मल हो गई और उनको भी अच्छी जॉब मिल गई तो उन्होंने अपनी जॉब छोड़ दी और पति की जॉब से ही गुज़ारा होने लगा।

इंडोनेशिया के मुबल्लिग़ लिखते हैं कि अमीन साहिब के घरवालों की हमेशा इच्छा होती थी कि रमज़ान के महीने में अपने वक़्फ़े जदीद और तहरीके जदीद के चंदे अदा कर दें। इस वर्ष आयनी कम थी, वादा पूरा करना बज़ाहिर नामुमकिन था। मुबल्लिग़ साहिब लिखते हैं कि मैंने रमज़ान के महीने में रोज़े के साथ उन्हें ख़ुद देखा है कि वह रोज़ाना अपने घरवालों के साथ पहाड़ी इलाक़े में चार किलोमीटर का सफ़र तय करके अपने नट (candlenut) के खेत में जाते ताकि उस के द्वारा से अपने वादे पूरे कर सकें। इसलिए उन्होंने रमज़ान के अन्दर ही अपना दो लाख का वादा पूरा कर दिया और इतनी धन बिना सख़्त परिश्रम के इकट्ठा करना उन के लिए मुम्किन न था। मुबल्लिग़ साहिब कहते हैं कि मैंने उनसे पूछा कि आपको क्या चीज़ मजबूर करती है कि आप रोज़े के साथ इतनी कठिन मेहनत करते हैं। इस पर यह कहने लगे कि मैं और मेरे घर वाले केवल ख़लीफ़ा वक़्त के आदेशों पर अमल कर के ख़ुदा तआला की ख़ुशनुदी हासिल करना चाहते हैं।

बुर्कीना फासो के क्षेत्रआकाया की एक जमाअत है। वहां के एक दोस्त नेनपा (Nianpa) साहिब हैं, उनको बैअत किए दस वर्ष से अधिक समय हो चुका है लेकिन चंदों की अदायगी में कमज़ोर थे। घर में अधिकतर बीमारी और तंगी के हालात रहते थे। कुछ समय से उन्होंने चंदे विशेषता तहरीके जदीद और वक़्फ़े जदीद में बाक़ायदगी से अदायगी करनी शुरू कर दी जिसके कारण से न केवल अल्लाह तआला के फ़ज़ल से उनके निकट तंगी जाती रही बल्कि जो बीमारियां थीं उनसे भी अल्लाह तआला ने शिफ़ा अता फ़रमाई और इस वर्ष उन्होंने बढ़ चढ़ कर वक़्फ़े जदीद में हिस्सा लिया और जो लोग उन्हें काम नहीं देते थे वो ख़ुद चल कर उनके पास कंट्रैक्ट करने आए और काम दिया। इदरीस साहिब कहते हैं कि यह अल्लाह का फ़ज़ल ही है कि उसने वक़्फ़े जदीद के द्वारा से माल बढ़ाने का कारण अता फ़रमाया। तो यह हैं अल्लाह तआला के क़र्ज़ को बढ़ा कर वापस देने के अंदाज़।

ये चंद घटनाएं मैंने वर्णन की हैं। ऐसी बेशुमार घटनाए होती हैं। अल्लाह तआला हमेशा जमाअत के लोगों के साथ ऐसा सुलूक रखे और वे इख़्लास और वफ़ा से क़ुर्बानियां भी देते रहें और अल्लाह तआला अपने फ़ज़ल के नज़्ज़ारे भी दिखाता रहे।

अब मैं वक़्फ़े जदीद के नए वर्ष का ऐलान करते हुए गुज़रे हुए वर्ष की कुछ गिनती तथा संख्या सामने रखूंगा। अल्लाह तआला के फ़ज़ल से 63 वां साल 31 दिसम्बर 2020 को ख़त्म हुआ और 64 वां वर्ष 1 जनवरी से शुरू हो गया। अल्लाह के फ़ज़ल से जमाअत को इस वर्ष के दौरान में एक करोड़ पाँच लाख तीस हज़ार पाऊंडज़ (1,05,30,000) की क़ुर्बानी पेश करने की तौफ़ीक़ मिली। यह वसूली पिछले वर्ष से आठ लाख सतासी हज़ार पाऊंडज़ से ज़्यादा है। अल्हम्दुलिल्लाह। अब यह किसी इन्सानी कोशिश का परिणाम नहीं हो सकता। यह विशेषता अल्लाह तआला का ख़ास फ़ज़ल है।

इस वर्ष भी बर्तानिया संसार की जमाअतों में सामूहिक वसूली की दृष्टि से प्रथम है। उन्होंने अल्लाह के फ़ज़ल से काफ़ी बढ़ोतरी की है। बर्तानिया की लजना-ईमाइल्लाह अल्लाह के फ़ज़ल से बड़ी मेहनत से काम करती है। इस दफ़ा जिस बड़ी संख्या में बढ़ोतरी हुई है इस से लगता है कि इस वर्ष मर्दों ने भी लजना (महिलाओं) की तरह मेहनत की है। दूसरे नम्बर पर जर्मनी है। जबकि उन्होंने भी बड़ी बढ़ोतरी की है लेकिन अभी बर्तानिया उनसे बहुत आगे है। पाकिस्तान तो करंसी की कारण से बहुत पीछे जमाअतों में चला गया है जबकि तीसरा नम्बर ही है लेकिन बहरहाल सामूहिक तौर पर देशी करंसी के दृष्टि से यहां भी तरक़्क़ी है और ये लोग क़ुर्बानी कर रहे हैं। पाकिस्तान में तो जान की क़ुर्बानी भी दी जा रही है। माल की क़ुर्बानी भी, ज़हनी क़ुर्बानी भी दी जा रही है, स्थाई टार्चर उनको किया जा रहा है। अल्लाह तआला उनके लिए भी आसानियां पैदा फ़रमाए। कैनेडा चौथे नम्बर पर है। फिर अमरीका है। फिर भारत है। फिर आस्ट्रेलिया है। फिर मिडल ईस्ट की एक जमाअत है। फिर इंडोनेशिया है। फिर घाना है। अफ़्रीकन देशों में से घाना भी अब बड़े देशों के मुक़ाबला में पहली दस जमाअतों की लिस्ट में आ गया है।

प्रति व्यक्ति अदायगी की दृष्टि से अमरीका नम्बर एक है। फिर स्विज़रलैंड है। फिर बर्तानिया है।

अफ़्रीक़ा में सामूहिक वसूली की दृष्टि से घाना नम्बर एक है। फिर नम्बर दो पर मारीशस। फिर नाईजेरिया। फिर बुर्कीना फासो। फिर तनज़ानिया, सीरालियोन, गेम्बिया, कीनिया, माली और बेनिन है।

उनकी शामिल होने वालों की संख्या चौदह लाख बावन हज़ार है।

सामूहिक वसूली की दृष्टि से बर्तानिया की दस बड़ी फ़ारनहम (farnham) नम्बर एक पर। फिर इस्लामाबाद नम्बर दो। वोस्टर पार्क (worcester park) नम्बर तीन। पटनी (putney) नम्बर चार । बर्मिंघम साउथ (birmingham-south) पाँच। जलिंघिम (gillingham) छः। साउथ चीम (south cheam) सात। मस्जिद फ़ज़ल आठ। बर्मिंघम वैस्ट (birmingham-west) नौ और न्यू मोल्डन (new malden) दस।

सामूहिक वसूली के दृष्टि से पहले पाँच क्षेत्रज़ जो हैं, नम्बर एक पर बैतुलफ़ुतुह। फिर मस्जिद फ़ज़ल। फिर इस्लामाबाद। फिर मिड लेंडज़ (midlands) फिर बैतुलअहसान।

दफ़्तर अत्फ़ाल की दृष्टि से पहली दस जमाअतों में फ़ारनहम (farnham) नम्बर एक। फिर इस्लामाबाद नम्बर दो। फिर रो हैंपटन वेल (roehampton vale) बैतुलफ़ुतूह। फिर मचम पार्क (mitcham park) ग्लास्गो (glasgow) चीम (cheam) गुलफ़रड (guildford) वोस्टर पार्क (worcester park) बर्मिंघम साउथ (birmigham south)

छोटी जमाअतों में सामूहिक वसूली की दृष्टि से दस जमाअतें लेमंगटन सपा। (leamington spa) सपन वैली (spen valley) बोर्न मिथ (bournemouth) ब्रिटन अपान ट्रेंट (burton-upon- trent) पीटर बुरा (peterborough) कोंटरी (coventry)एडिनबरा (edinburgh) कैथली (keighley) सवानज़ी (swansea)

जर्मनी की पाँच लोकल इमारात हैमबर्ग (hamburg) नम्बर एक पर। फिर फ़्रैंकफ़र्ट (frankfurt) फिर वेज़ बादिन (wiesbaden) फिर ग्रास गैराओ

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553

Weekly **BADAR** Qadian

Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA

POSTAL REG. No.GDP 45/ 2020-2022 Vol. 6 Thursday 11 February 2020 Issue No.6

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 500/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e -mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e -mail:managerbadrqnd@gmail.com

(gross gerau) फिर डटसन बाच (dietzenbach)

चंदा बालिगों में वक़्फ़े जदीद में पहली दस जमाअतें जर्मनी की रवीडर मार्क (rödermark) फिर नवयस् (neuss) फिर नेदा (nidda) फिर महदी आबाद। फिर माइनज़ (mainz) कोबलनज़ (koblenz) हनाओ (hanau) लांगन (langen) फ्लोर्स हाइम (flrsheim) बेनज़हायम (bensheim) पैनी बर्ग (pinneberg)

दफ़्तरा इत्फ़ाल में पहले पाँच क्षेत्रज़ ह्यसन् ज़ूओदुऊओसट (hessen - sd ost) ह्यसन् मिटे (hessen-mitte) रावण लैंड फ़ालिज़ (rheinland - pfalz) वैस्ट फालन (westfalen) ताऊनस (taunus)

पाकिस्तान की पहली तीन जमाअतें नम्बर एक लाहौर। नम्बर दो रबवाह। नम्बर तीन कराची। चंदा बालिग़ान में ज़िलों की पोज़ीशन यह है इस्लामाबाद नम्बर एक। नम्बर दो रावलपिंडी। नम्बर तीन सरगोधा। फिर गुजरात। गुजरांवाला। उम्रकोट। हैदराबाद। पेशावर। मीरपुर ख़ास। डेरा ग़ाज़ी ख़ान।

सामूहिक वसूली के दृष्टि से पहली दस जमाअतें डीफ़ैंस लाहौर। इस्लामाबाद शहर। टाउन शिप लाहौर। क्लिफ्टन कराची। दारुल अज़कर लाहौर। गुलशन इक़बाल कराची। सुमन आबाद लाहौर। अज़ीज़ आबाद कराची। रावलपिंडी शहर। अल्लामा इक़बाल टाउन लाहौर।

दफ़्तर इतफ़ाल में पाकिस्तान की तीन बड़ी जमाअतों में प्रथम लाहौर। फिर दोम कराची। फिर सोम रबवाह। दफ़्तर इतफ़ाल में ज़िलों की पोज़ीशन यह है कि इस्लामाबाद। गुजरांवाला। फिर सरगोधा। फिर शेख़ूपूरा। फैसलाबाद। डेरा ग़ाज़ी ख़ान। गुजरात। फिर उम्रकोट। फिर नारोवाल। फिर बहावल नगर ।

कैनेडा की इमारतें जो हैं नम्बर एक पर वान (vaughan) फिर पीस विलेज (peace village) फिर वेनकोवर (vancouver) फिर बरेमटन वैस्ट (brampton-west) फिर टोरंटो वैस्ट (toronto-west) कैनेडा की दस बड़ी जमाअतें ब्रैडफोर्ड(bradford) डरहम (durham) मिल्टन ईस्ट (milton-east) ऐडमनटुन वैस्ट (edmonton west) विंडसिर (windsor) मिल्टन वैस्ट (milton-west) रजायना(regina) आटवा वैस्ट(ottawa-west) आईरडरी (airdrie) ऐबटस फ़ोर्ड (abbotsford)

इतफ़ाल की नुमायां इमारतें वान (vaughan) नम्बर एक पर। फिर टोरंटो वैस्ट (toronto-west) फिर पीस विलेज (peace village) फिर कैलगरी (calgary) फिर ब्रैम्पटन वैस्ट (brampton- west) इतफ़ाल में जो जमाअतें हैं ब्रैडफोर्ड (bradford) नम्बर एक। फिर डरहम (durham) फिर मिल्टन वैस्ट (milton-west) लंदन (london) हमिल्टन माऑटेन (hamilton mountain)

वसूली के दृष्टि से अमरीका की दस जमाअतें हैं मेरीलैंड (maryland) फिर लास एंजेलस (los angeles) फिर सेइटल (seattle)फिर सिलिकोन वैली (silicon valley) फिर बोस्टन (boston) फिर ऑस्टन (aston) ओशोकोश (oshkosh) सेरा कोस (syracose) राचस्टर (rochester) मिनेसोटा (minnesota)

दफ़्तर इतफ़ाल की दृष्टि से दस जमाअतें मेरी लैंड (maryland) लास एंजलेस (los angeles) सेइटल (seattle) ओरलैंडो (orlando) सेलेकोन वैली (silicon valley) ऑस्टन (aston) ओशोकोश (oshkosh) मिनेसोटा (minnesota) लास वेगास (las vegas) फच बर्ग (fitchburg)

भारत की जमाअतें। जो प्रान्त हैं उनमें नम्बर एक केरल। फिर तामिलनाडू। फिर जम्मू कश्मीर। फिर तिलंगाना। कर्नाटका। ओड़िसा, पंजाब, वेस्ट बंगाल, दिल्ली, उत्तर प्रदेश, और जो जमाअतें हैं। कोयम्बटूर फिर क़ादियान फिर पत्थापिरम, हैदराबाद, कोलकाता, बैंगलौर, कालीकट, कन्नूर टाउन, ऋषि नगर, केरंग।

आस्ट्रेलिया की दस जमाअतें जो हैं मलबर्न बार्न (melbourne langwarrin) कासल हल (castle hill) मारसिडन पार्क (marsden park) मैलबोर्न बैरक (melbourne berwick) एडीलेड साउथ (adelaide south) माउंट डरोइट (mount druitt) पैनर्थ (penrith) पर्थ (perth) लोगन ईस्ट (logan-east) ब्लैक टाउन (blacktown)

बालिग़ान में आस्ट्रेलिया की जमाअतें हैं मलबर्न लॉग वार्न (melbourne langwarrin) कासल हल (castle hill) मारसिडन पार्क (marsden park) मलबर्न बैरक (melbourne berwick) पैनर्थ (penrith) माउंट डरोइट (mount druitt) ब्लैक टाउन (blacktown) एडीलेड साउथ (adelaide south) प्रथ (perth) और कैनबरा canberra)

इतफ़ाल में आस्ट्रेलिया की जमाअतें हैं मलबर्न लॉग वार्न (melbourne langwarrin) एडीलेड (adelaide) मलबर्न बैरक (melbourne berwick) माउंट डरोइट (mount druitt) लोगन ईस्ट (logan-east) पैनर्थ (penrith) कासल हल (castle hill) मलबर्न ईस्ट (melbourne-east) पर्थ (perth) और एडीलेड वैस्ट (adelaide - west)

अल्लाह तआला इन सब क़ुर्बानी करने वालों के मालों तथा नफ़्सों में अत्यधिक बरकत प्रदान फ़रमाए। उनको रुहानी तरक़्क़ी भी प्रदान फ़रमाए और ये लोग हुक़ूक़ुल्लाह और हुक़ूक़ुल ईबाद अदा करने वाले हों।

इन दिनों मैं दोबारा जैसा कि मैं तहरीक कर रहा हूँ पाकिस्तान के अहमदियों के लिए भी ख़ास तौर पर दुआ करें। अल्लाह तआला उनकी मुश्किलात को दूर फ़रमाए। उनकी परेशानियों को दूर फ़रमाए। विरोधियों के हाथों को उन तक पहुंचने से रोके और जिन विरोधियों का सुधार नहीं होना अल्लाह तआला उनकी पकड़ के सामान करे। कैदियों की जल्द रिहाई के भी सामान पैदा फ़रमाए जिसमें अल-जज़ाएर के कौदियों भी शामिल हैं। अल-जज़ाएर में भी बहुत विरोध है। उन के लिए भी दुआ करें। अल्लाह तआला उन के लिए भी सुकून के सामान पैदा फ़रमाए। विशेषता दुआओं, नवफ़्लों और सदक़ों पर ज़ोर दें। पाकिस्तान के उमूमी दृष्टि से सामूहिक हालात भी अमन की दृष्टि से ठीक नहीं हैं उन के लिए दुआ करें। अल्लाह तआला अमन के हालात वहां पैदा करे और एक दूसरे की गर्दनें काटने पर जो लगे हुए हैं और दहशतगर्दी और फ़ित्ना और फ़साद है उसको अल्लाह तआला जल्द ख़त्म करने के सामान पैदा फ़रमाए। वहां की इंतिज़ामिया और हुकूमत को भी अक़्ल दे कि वह हक़ीक़ी रंग में प्रजा की सेवा करने वाले हो और इन्साफ़ से काम लेने वाले हो। इसी तरह संसार के उमूमी हालात के बारे में भी दुआ करें जो बहुत तेज़ी से बिगड़ रहे हैं। अल्लाह तआला सब इन्सानियत पर रहम फ़रमाए।

☆ ☆ ☆ ☆

पृष्ठ 1 का शेष

कर सकता है कि असल पवित्रता दिल की और विचारों की पवित्रता है। जब दिल पवित्र हो जाता है तो संभव ही नहीं होता कि कर्म उस का अनुसरण न करें। यह तो हो सकता है कि इन्सान लोगों के भय से कर्म और प्रकार के करे परन्तु यह नहीं हो सकता है कि इन्सान लोगों के भय से अपने ख़्यालात को बदल ले। दिल पर दूसरे इन्सानों का दखल नहीं होता। ज़बरदस्त बादशाहों के क़बज़ा से भी दिल ऊँचा है। अत: ऐसी चीज़ पर अल्लाह तआला ने हिदायत का आधार रखा है जो स्वयं इन्सान के क़बज़ा में है और दूसरे लोगों का इस में दख़ल नहीं। بِاِيْمَانِهِمْ कह कर इस बात की ओर भी संकेत फ़रमाया है कि प्रतिफल ईमान के अनुसार होगी। अर्थात ज़ाहिरी अमल में जबकि दो व्यक्ति समान हों लेकिन वह श्रद्धा और मुहब्बत जो कर्म के पीछे है इस से प्रतिफल में अन्तर आ जाएगा। यह भी एक ज़बरदस्त बिन्दु है। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया अबू बकर को तुम पर प्राथमिकता उस चीज़ के कारण से है जो उसके दिल में है। हम देखते हैं कि एक व्यक्ति नमाज़ें ज़्यादा पढ़ता है और रोज़े भी ज़्यादा रखता है परन्तु अल्लाह तआला के फ़ज़लों को एक दूसरा व्यक्ति प्राप्त कर लेता है उसका कारण उसके दिल की अवस्था होती है। वास्तविक पवित्रता और श्रद्धा जिसे ज़्यादा प्राप्त होता है उसके थोड़े कर्म ज़्यादा लाभ को खींच लेते हैं। वास्तव में उस व्यक्ति के सब कर्म ही इबादत बन जाते हैं क्योंकि उसके बज़ाहिर सांसारिक नज़र आने वाले कर्म भी ख़ुदा ही के लिए होते हैं और इन्सान की हमदर्दी उसकी हर हरकत का कारण है।

(तफ़सीर-ए-कबीर, भाग 3 पृष्ठ 34 प्रकाशित क़ादियान 2010)

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad